

स्वामीब्रह्मानंदजी.

ॐ

श्रीरमापतये नमः

श्रीब्रह्मानंदभजनमाला.

इयं

श्रीपरमहंसस्वामिब्रह्मानंद-
विरचिता

सेयं

बंबईनगरे निर्णयसागराभिधाने मुद्रणयंत्रालये
तेनैव स्वामिना मुद्रयित्वा प्रसिद्धिं नीता.

विक्रमसंवत् १९७५ शकाब्दाः १८४१ ईस्वीसन १९१९.

भजनसंख्या ४००. सप्तदशावृत्तिः.

किंमत आठ आना. ॥)

Published by Swami Brahmanandjee
of Pushkar, Ajmer.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the
Nirnaya Sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

कमीशनके नियम

१० पुस्तक मंगानेवालेको डाक खर्चा माफ है

२५ तथा अधिक ५०० तक पुस्तक मंगानेवालेको २५) रुपया सेंकडा कमीशन दिया जाता है डाक तथा रेलका खरचा मंगानेवालेको लगेगा. पुस्तक मिलनेका ठिकानाः—

श्रीब्रह्मानंद आश्रम,

मु० पुष्कर,

जिला अजमेर.

भजनोंकी अनुक्रमणिका.

श्रीरमापतये नमः ।

अथ

श्रीब्रह्मानंदभजनमालाप्रारंभः ।

(राग जंगला अथवा पीलु ताल ३)

जय[1] गणेश गणनाथ दयानिधि
सकल विघन कर दूर हमारे ॥ टेक ॥ जय०
प्रथम धरे जो ध्यान तुमारो
तिसके पूरण कारज सारे ॥ १ ॥ जय०
लंबोदर गजवदन मनोहर
कर त्रिशूल परशू वर धारे ॥ २ ॥ जय०

---

१ महादेव कहे सुन पारबती विजया मत देहि गवारनको, २७ भजन तक.

ऋद्धिसिद्धि दोऊ चमर ढुलावे
मूषक वाहन परम सुखारे ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मादिक सुर ध्यावत मनमें
ऋषिमुनिगण सब दास तुमारे ॥ ४ ॥ जय०
ब्रह्मानंद सहाय करो नित
भक्तजनोंके तुम रखवारे ॥ ५ ॥ जय०

(राग जंगला ताल ३)

नारायण मैं शरण तुमारी
दया करो महाराज हमारे ॥ टेक ॥ नारायण०
मात तात सुत दार सहोदर
कोई न आवत काज हमारे ॥ १ ॥ नारायण०
भवसागरजल दुस्तर भारी
तुमरे चरण जहाज हमारे ॥ २ ॥ नारायण०
पाप अनेक किये जगमांही
तुमको है अब लाज हमारे ॥ ३ ॥ नारायण०
ब्रह्मानंद दया तुमरीसे

सब दुख जावत भाज हमारे ॥ ४ ॥ नारायण०

(जंगला ताल ३)

नारायण जिनके परिपालक
तिनको कौन दुखाय सके रे ॥टेक॥नारायण०
प्रल्हाद भक्तको डारा अगनमें
रोम न एक जलाय सके रे ॥ १ ॥ नारा०
गजको पकड ग्राहने खेंचा
नहि जल बीच डुबाय सके रे ॥ २ ॥ नारा०
द्रुपदसुताकी बीच सभाके
रंच न लाज उठाय सके रे ॥ ३ ॥ नारा०
ब्रह्मानंद जो हरिगुण गावे
सो निर्भय पद पाय सके रे ॥ ४ ॥ नारा०

(जंगला ताल ३)

नारायणको नाम सुमर नर
जन्ममरणदुख जाय तुमारो ॥ टेक ॥ नारा०
मानुषजन्म मिला जगमांही

दाव जीतकर फिर किम हारो ॥ १ ॥ नारा०
जो परलोक सहायक तेरो
उस मालिकको काहे विसारो ॥ २ ॥ नारा०
काल खडा सिर ऊपर तेरे
क्या सुख सोवत पांव पसारो ॥ ३ ॥ नारा०
ब्रह्मानंद विना हरिसुमरण
नहि भवसागर हो निस्तारो ॥ ४ ॥ नारा०

(जंगला ताल ३)

नारायण जिनके हिरदेमें
सो कुछ कर्म करे न करे रे ॥ टेक ॥ नारा०
नाव मिली जिसको जलअंदर
बाहुसे नीर तरे न तरे रे ॥ १ ॥ नारा०
पारसमणि जिनके घरमांही
सो धन संच धरे न धरे रे ॥ २ ॥ नारा०
सूरज को परकाश भयो जब
दीप की जोप जरे न जरे रे ॥ ३ ॥ नारा०

ब्रह्मानंद रूप जिन जानो
काशीमें जाय मरे न मरे रे ॥ ४ ॥ नारा०

(राग जंगला ताल २)

नारायण को भजन करो नर
मनकी छोड भटकना सारी ॥ टेक ॥ नारा०
क्या मथुरा क्या काशी जावे
क्या पर्वत बन फिरत अनारी ॥ १ ॥ नारा०
जप तप योग कठिन कलि मांही
थोडी उमर काम बहु भारी ॥ २ ॥ नाराय०
शास्त्र अनेक पढो दिनराती
मुक्ति न हो बिन भजन तुमारी ॥ ३ ॥ नाराय०
ब्रह्मानंद कटे भवबंधन
हरिका नाम सुमर सुखकारी ॥ ४ ॥ नारायण०

(जंगला ताल ३)

जन्म जन्मको मैं दास तुमारो
करुणाकर अब तार मुरारे ॥ टेक ॥ जन्म०

भवसागरजलतरण कठिन है
किसविध जाऊं पार मुरारे ॥ १ ॥ जन्म०
तुमबिन और न पालक मेरो
वंचक सब परिवार मुरारे ॥ २ ॥ जन्म०
मैं गुणहीन दोष परिपूरण
अपनी ओर निहार मुरारे ॥ ३ ॥ जन्म०
ब्रह्मानंद विलंब न कीजे
सुनिये मेरी पुकार मुरारे ॥ ४ ॥ जन्म०

(जंगला ताल ३)

नाथ दियो अब दरस तुमारे
सफल करो प्रभु नैन हमारे ॥ टेक ॥
तेज पुंज मय अंग मनोहर
रवि शशि कोटि लजावन हारे ॥ १ ॥ नाथ०
शीश मुकट मणि जडित विराजे
कानन कुंडल मकराकारे ॥ २ ॥ नाथ०
शंख चक्र कर कमल सुहावे

पीत बसन तन ऊपर धारे ॥ ३ ॥ नाथ०
ब्रह्मानंद चतुर्भुज सुन्दर
मंद हसन हरि गरुड सवारे ॥ ४ ॥ नाथ०

(जंगला ताल ३)

अर्जुन को रणभूमिविषे हरि
ब्रह्मज्ञान निर्मल समझावे ॥ टेक ॥ अर्जु०
तूं किसका है कौन तुमारा
एकहि आवत एकहि जावे ॥ १ ॥ अर्जु०
अविनाशी यह जीव सनातन
देह के संग मरण नहीं पावे ॥ २ ॥ अर्जु०
घटघट भीतर व्यापक हूं मैं
भेदभावना क्यों मन लावे ॥ ३ ॥ अर्जु०
ब्रह्मानंदस्वरूप है तेरा
शोककी बात न क्यों बिसरावे ॥ ४ ॥ अर्जु०

(जंगला ताल ३)

आज सखी बिंदराबन में हरि

रसभरी बैन बजावत है री ॥ टेक ॥ आज०
सात स्वरन संग ताल मिलाकर
राग रागिनी गावत है री ॥ १ ॥ आज०
लंबी धुन सुनाय गोपियनको
जमुनातीर बुलावत है री ॥ २ ॥ आज०
चांद चांदनी रात मनोहर
मिलकर रास रचावत है री ॥ ३ ॥ आज०
ब्रह्मानंद दरसके कारण
सुर विमान चड आवत है री ॥ ४ ॥ आज०

(जंगला ताल ३)

जय शंकर कैलासपति शिव
पूरण ब्रह्म सदा अविनाशी ॥ टेक ॥ जय०
अंग विभूति गले मुंडमाला
शीश जटा जल गंग बिलासी ॥ १ ॥ जय०
चंद्रकला मस्तकपर सोहे
तीन नयन त्रैलोक्य विकाशी ॥ २ ॥ जय०

कर त्रिशूल पहरे मृगछाला
संग बसे गिरिजा नित दासी ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद करो करुणा प्रभु
भवभंजन भक्तन सुखराशी ॥ ४ ॥ जय०

(जंगला ताल ३)

शिव शिव शिव शिव नाम सुमर नर
सकल मनोरथ पूरणकारी ॥ टेक ॥ शिव०
रावण नाम लियो दृढ मनसे
सकल देव आज्ञा सिरधारी ॥ १ ॥ शिव०
नंदीगण जब सुमरण कीनो
कालपाश तत्काल निवारी ॥ २ ॥ शिव०
उपमन्यु मुनि करी तपस्या
दूध समुद्र कियो बडभारी ॥ ३ ॥ शिव०
ब्रह्मानंद येही वर मांगे
भक्ति दान दीजे त्रिपुरारी ॥ ४ ॥ शिव०

(राग जंगला ताल ३)

जय दुर्गे दुर्गति परिहारिणी
शुंभविदारिणी मात भवानी ॥ टेक ॥ जय०
आदिशक्ति परब्रह्मस्वरूपिणी
जगजननी चहुं वेद बखानी ॥ १ ॥ जय०
ब्रह्मा शिव हरि अर्चन कीनो
ध्यान धरत सुर नर मुनि ज्ञानी ॥ २ ॥ जय०
अष्ट भुजा कर खड्ग विराजे
सिंह सवार सकल वरदानी ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद शरणमें आयो
भवभय नाश करो महारानी ॥ ४ ॥ जय०

(राग जंगला ताल ३)

जय जगदीश्वरी मात सरस्वती
शरणागत प्रति पालनहारी ॥ टेक ॥ जय०
चंद्रबिंबसम वदन विराजे
शीशमुकट माला गलधारी ॥ १ ॥ जय०

वीणा वाम अंगमें शोभे
सामगीत ध्वनि मधुर पियारी ॥ २ ॥ जय०
श्वेतवसन कमलासन सुंदर
संग सखी शुभ हंससवारी ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद मैं दास तुमारो
दे दर्शन परब्रह्म दुलारी ॥ ४ ॥ जय०

(जंगला ताल ३)

जय कमले कमलासनसुंदरी
सकलजगतमाता सुखदाई ॥ टेक ॥
रत्नमुकट मस्तकपर राजे
वनमाला गलबीच सुहाई ॥ १ ॥ जय०
काननमें कुंडल करकंकण
पग नूपर शोभा अधिकाई ॥ २ ॥ जय०
गरुड चडी हरिसंग बिराजे
शेषनाग तन सेज बिछाई ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद करे जो सुमरण

सुख संपत नित होत सवाई ॥ ४ ॥ जय०

(जंगला ताल ३)

भाग्य बडे सतगुरु मैं पायो
मनकी दुबिधा दूर नसाई ॥ टेक ॥
बाहिर ढूंडफिरा मैं जिसको
सो वस्तु घट भीतर पाई ॥ १ ॥ भाग्य०
सकल जून जीवनके मांही
पूर्ण ब्रह्म जोत दरसाई ॥ २ ॥ भाग्य०
जनम जनमके बंधन काटे
चौरासी लख त्रास मिटाई ॥ ३ ॥ भाग्य०
ब्रह्मानंद चरण बलिहारी
गुरुमहिमा हरिसे अधिकाई ॥ ४ ॥ भाग्य०

(जंगला ताल ३)

आज सखी सतगुरु घर आये
मेरे मन आनंद भयो री ॥ टेक ॥
दर्शन से सब पाप विनाशे

दुख दलिद्र सब दूर गयो री ॥ १ ॥ आज०
अमृत बचन सुनत तम नाश्यो
घट भीतर प्रभु पाय लयो री ॥ २ ॥ आज०
जन्म जन्म के संशय टूटे
भवभय ताप मिटाय दयो री ॥ ३ ॥ आज०
ब्रह्मानंद दास दासन को
चरणकमल लिपटाय रह्यो री ॥ ४ ॥ आज०

(राग जंगला ताल ३)

बरज रही मैं इन विषयन से
मान कही मन मूरख मेरी ॥ टेक ॥
जनमजनमके वैरी तेरे
चौरासी लख फेरत फेरी ॥ १ ॥ बरज०
यह मीठे फल जहर भरे हैं
सुख थोडा अरु विपत घनेरी ॥ २ ॥ बरज०
मृगतृष्णाजल देख लुभायो
प्यास मिटे कबहुं नहि तेरी ॥ ३ ॥ बरज०

ब्रह्मानंद संग तज इनको
पावे मोक्ष लगे नहि देरी ॥ ४ ॥ बरज०

(राग जंगला ताल ३)

चेतन देवकी सेव करो नर
जन्म सफल हो जाय तुमारो ॥ टेक ॥
घटघट पूरण एक निरंजन
द्वैतभाव सब दूर निवारो ॥ १ ॥ चेतन०
हिरदे अंदर मंदिर मांही
जग मग जोत जगे उजियारो ॥ २ ॥ चेतन०
प्रेमपुष्पसे पूजन कीजे
मनदीपक धर ध्यान विचारो ॥ ३ ॥ चेतन०
ब्रह्मानंद उलट सुरतीको
कर दर्शन भवबंधन टारो ॥ ४ ॥ चेतन०

(राग जंगला ताल ३)

क्या पानीमें मल मल न्हावे
मनकी मैल उतार पियारे ॥ टेक ॥

हाड मांस की देह बनी है
झरे सदा नवद्वार पियारे ॥ १ ॥ क्या पानी०
पाप कर्म तनके नहि छोडे
कैसे होय सुधार पियारे ॥ २ ॥ क्या पानी०
सतसंगत तीर्थ जल निर्मल
नित उठ गोता मार पियारे ॥ ३ ॥ क्या०
ब्रह्मानंद भजनकर हरिका
जो चाहे निस्तार पियारे ॥ ४ ॥ क्या पा०

(राग जंगला ताल ३)

जीवनको मत मार छुरी से
मारण हार खडा सिर तेरे ॥ टेक ॥
जीव मार कर अमर न होवे
क्यों करता फिर पाप घनेरे ॥१॥ जीवनको०
मांस खाय तन मांस बढावे
सो तन अंत न संग चलेरे ॥ २ ॥ जीवनको०
ईश्वर के सब पुत्र बराबर

नीच ऊंच नैनन मत हेरे ॥ ३ ॥ जीवनको०
ब्रह्मानंद दया धर मन में
जानन हार जान प्रभु नेरे ॥ ४ ॥ जीवनको०

(जंगला ताल ३)

जीवन की प्रतिपाल करो नर
मानुष जन्म सफल हो जाई ॥ टेक ॥
जप तप योग यज्ञ बहुतेरे
जीव दया सम धर्म न भाई ॥ १ ॥ जीव०
तन मन धन कर सुख उपजावो
द्वेष भाव मन से विसराई ॥ २ ॥ जीव०
मेरा तेरा छोड भरमना
ईश्वर अंश जान सब मांही ॥ ३ ॥ जीव०
ब्रह्मानंद तजो निज स्वारथ
पर उपकार परम सुख दाई ॥ ४ ॥ जीव०

(जंगला ताल ३)

काहे शोच करे नर मनमें

कर्म लिखा सोई होवत प्यारे ॥ टेक ॥
होवन हार मिटे नहि कब हुं
कोटि जतन कर कर सब हारे ॥ १ ॥ काहे०
हरिचंद नल राम युधिष्ठिर
राज्य छोड बन वास सिधारे ॥ २ ॥ काहे०
अपनी करणी निश्चय भरणी
दुश्मन मित्र न कोई तुमारे ॥ ३ ॥ काहे०
ब्रह्मानंद सुमर जगदीश्वर
सब दुख संकट दूर निवारे ॥ ४ ॥ काहे०

(जंगला ताल ३)

कर्म कर्म क्या गावे मूरख
पुरुषार्थ कर होय सुखारो ॥ टेक ॥
परमेश्वर की वस्तुन मांही
सब का है सम भाग तुमारो ॥ १ ॥ कर्म०
इक भोगे इक तरसे मन में
पुरुषार्थ बिन जीव दुखारो ॥ २ ॥ कर्म०

आलस से निर्धन जन होवे
कर्मन का नहि दोष बिचारो ॥ ३ ॥ कर्म०
ब्रह्मानंद करो पुरुषार्थ
लेकर के जगदीश सहारो ॥ ४ ॥ कर्म०

(जंगला ताल ३)

बाहिर ढूंडन जा मत सजनी
पिया घर बीच बिराज रहे री ॥ टेक ॥
गगन महल में सेज बिछी है
अनहद बाजे बाज रहे री ॥ १ ॥ क्या बा०
अमृत बरसे बिजली चमके
घुमट घुमट घन गाज रहे री ॥२॥ क्या बा०
परम मनोहर तेज पिया को
रवि शशि मंडल लाज रहे री ॥३॥ क्या बा०
ब्रह्मानंद निरख छबि सुंदर
आनंद मंगल छाज रहे री ॥ ४ ॥ क्या बा०

(जंगला ताल ३)

आज खेलन मत जा मेरी सजनी
शाम सुंदर घर आवत है री ॥ टेक ॥
मोर मुकुट सिर ऊपर राजे
गल बन माल सुहावत है री ॥ १ ॥ आज०
बंसी अधर लगाय बजावे
मधुर मधुर धुन गावत है री ॥ २ ॥ आज०
पीत वसन मकराकृति कुंडल
पग नूपर झणकावत है री ॥ ३ ॥ आज०
ब्रह्मानंद प्रेम वश मोहन
सखियन दरस दिखावत है री ॥४॥ आज०

(राग बरहंस ताल धमाल)

नाँथ तेरी माया जाल बिछाया
जामे सब जग फिरत भुलाया ॥ टेक ॥ नाथ०
कर निवास नौमास गर्भमें फिर भूतलमें आया

---

१ नाथ कैसे गजके फंद छुडाये ८ भजन तक.

खान पान विषया रसभोगन
मात पिता सिखलाया ॥ १ ॥ नाथ०
घरमें सुंदर नारी मनोहर देखदेख ललचाया ॥
सुन सुन मीठी बात सुतनकी
मोहपाशमें फसाया ॥ २ ॥ नाथ०
गृहकाजनमें निशदिन फिरते
सकलो जन्म बिताया ॥
आशा प्रबल भई मन भीतर
निर्बल हो गई काया ॥ ३ ॥ नाथ०
पापपुण्यसंचयकरपुनपुन स्वर्ग नरक भटकाया
ब्रह्मानंदकृपा बिन तुमरी
मोक्ष नहीं कोई पाया ॥ ४ ॥ नाथ०

(बरहंस ताल धमाल)

आज मेरी सुनिये अरज गिरधारी
मैं तो आया हूं शरण तुमारी ॥ टेक ॥ आज०
बालापणसबखेलगमायो तरुणकियोबशनारी

गृहकुटुंबके पोषण कारण
परघर होयो भिखारी ॥ १ ॥ आज०
मैं जानत यह बांधव मेरे स्वारथकी सब यारी ॥
धनसे हीन भयो मैं जबही
सबको लाग्यो खारी ॥ २ ॥ आज०
आयाथाजिसकामकरणको उसकीयाद बिसारी
आकर मायाजालमें फस्या
निकलन की नहि बारी ॥ ३ ॥ आज०
भवसागरमें डूबतहूं अब लीजिये वेग उबारी॥
ब्रह्मानंद करो करुणा प्रभु
तुम बिन को हितकारी ॥ ४ ॥ आज०

(बरहंस ताल धमाल)

राम तेरी रचना अचरज भारी
जांको वर्णन कर सब हारी ॥ टेक ॥ राम०
जलकी बूंदसे देह बनाई तामें नर अरु नारी ॥
हाथ पांव सब अंग मनोहर

भीतर प्राण संचारी ॥ १ ॥ राम०
नभमेंनभचरजीवबनाये जलमें रचे जलचारी
वृक्षलता बन पर्वत सुंदर
सागरकी छबि न्यारी ॥ २ ॥ राम०
चांदसूरजदोऊदीपककीने रातदिवसउजियारी
तारागण सब फिरत निरंतर
चहुं दिश पवन सवारी ॥ ३ ॥ राम०
ऋषि मुनि निशदिन ध्यान लगावें
लख न सकें गति सारी ॥
ब्रह्मानंद अनंत महाबल
ईश्वर शक्ति तुमारी ॥ ४ ॥ राम०

(बरहंस ताल धमाल)

नाथ कैसे नरसिंघरूप बनाया
जासे भक्त प्रल्हाद बचाया ॥ टेक ॥ नाथ०
नाकोईतुमरा पिताकहावे नाकोईजननीजाया
थंभ फोडकर प्रगट भये हरि

यह अचरज तेरी माया ॥ १ ॥ नाथ०
आधारूपधराप्रभुनरका आधा सिंह सुहाया ॥
हिरणकशिप को पकड धरणमें
नखसें फाड गिराया ॥ २ ॥ नाथ०
गर्जनसुनकरदेवलोकसें ब्रह्मादिकसब आया
हाथ जोडकर विनती कीनी
शांत स्वरूप कराया ॥ ३ ॥ नाथ०
अंतर्यामी सर्वव्यापक ईश्वर वेद बताया ॥
ब्रह्मानंद सत्यकर सबको
यह परमाण दिखाया ॥ ४ ॥ नाथ०

(बरहंस ताल धमाल)

नाथ कैसे द्रुपदीके चीर बढाये
जांको देख सखी बिसमाये ॥ टेक ॥ नाथ०
कौरवपांडवमिलआपुसमें जूवा खेल रचाये ॥
डार कपटका पासा शकुनी
पांडव राज्य हराये ॥ १ ॥ नाथ०

द्रुपदसुताको बीचसभाके नगनकरणको लाये
द्वारकानाथ लाज रख मेरी
तुम विन कौन सहाये ॥ २ ॥ नाथ०
दुःशासननें पकड केशसें चीर बदनसे हटाये
खेंचत खेंचत अंत न आयो
अंबर ढेर लगाये ॥ ३ ॥ नाथ०
भीष्म द्रोण कर्ण दुर्योधन सब मनमें शरमाये
ब्रह्मानंद जिनके हरि पालक
तिनको कौन दुखाये ॥ ४ ॥ नाथ०

(राग बरहंस ताल धमाल)

हरि तेरे चरणनकी हुं मैं दासी
मेरी काटो जनम केरी फासी ॥ टेक ॥ हरि०
नाजावुंमथुरानगोकुल जावुं नाजावुं मैं काशी
मोहे भरोसो एक तुमारो
दीनबंधु अविनाशी ॥ १ ॥ हरि०
कोईबरत कोईनेम करत है कोईरहे बनवासी

मैं चरणन को ध्यान लगावुं
सबसे होय उदासी ॥ २ ॥ हरि०
नहि विद्याबलरूप न मेरे नहि संचय धनराशी
शरणागत मोहे जान दयानिधि
राखिये चरणन पासी ॥ ३ ॥ हरि०
नहिमैंराजपाटकछुमांगुं नहिसुखभोगबिलासी
ब्रह्मानंद शरणमें तुमरी
केवल दरस पियासी ॥ ४ ॥ हरि०

(बरहंस ताल धमाल)

हरि तुम भक्तनके हितकारी
अब राखिये लाज हमारी ॥ टेक ॥ हरि०
प्रल्हादभक्तकोहिरणकशपनेकष्टदियाजबभारी
नरसिंहरूप बनाय असुरकी
नखसे देह विदारी ॥ १ ॥ हरि०
ध्रुवनेबनमेंकरीतपस्या मातवचनहिये धारी
दरस दिखाय अमरपद दीनो

जन्ममरणदुःख टारी ॥ २ ॥ हरि०
जबगजराजग्राहवशकीनो तब हरिनाम पुकारी
गज के फंद छुडावन कारण
धाये गरुड सवारी ॥ ३ ॥ हरि०
द्रुपदीने जबसुमरणकीनो बढगये चीर हजारी
ब्रह्मानंद शरणमें आयो
कीजिये भवजल पारी ॥ ४ ॥ हरि०

(बरहंस ताल धमाल)

हरि कैसे बलि घर याचन आये
सब जगतके नाथ कहाये ॥ टेक ॥ हरि०
बलिराजारणधीरमहाबल इंद्रादिक डर पाये
तीन लोक अपने वश कीने
निर्भय राज्य चलाये ॥ १ ॥ हरि०
वामनरूप धारकर सुंदर बलिके यज्ञ सिधाये
तीन चरण पृथिवी दे राजन्
लेवुं कुटिया बनाये ॥ २ ॥ हरि०

बलिने दान दिया जिस क्षणमें
अचरज रूप बढाये
तीन लोकमें पांव पसारे
बलि पाताल पठाये ॥ ३ ॥ हरि०
चरणकमलसे गंगा निकली देव पुषप बरखाये
ब्रह्मानंद भक्त हितकारी
दानव गर्व गिराये ॥ ४ ॥ हरि०

(राग बनजारा ताल ३)

मुनि[1] कहत वसिष्ठ बिचारी
सुन राम वचन हितंकारी ॥ टेक ॥ मुनी०
यह झूठा सकल पसारा
जिम मृगतृष्णा जलधाराजी
बिन ज्ञान होय दुख भारी ॥ १ ॥ सुन रा०
स्वपनेमें जीव अकेला

---

१ सखी पानियाभरन कैसे जाना । पनघटपे खडा है काना, २३ भजन तक.

जिम देखे जगतका मेलाजी
तिम जान यह रचना सारी ॥ २ ॥ सुन रा०
परब्रह्म एक परकाशे
सब नाम रूप भ्रम भासेजी
जिम सीपमें रजत निहारी ॥ ३ ॥ सुन रा०
विषयों में सुख कछु नाहीं
ब्रह्मानंद तेरे घटमांहीजी
कर ध्यान देख निरधारी ॥ ४ ॥ सुन रा०

(राग बनजारा ताल २)

सिरीकृष्ण कहे निरधारा
सुन अर्जुन बचन हमारा ॥ टेक ॥ सिरी०
यह जीव सदा अविनाशी । सुखरूप स्वयं
परकाशीजी । जड देहको चेतनहारा ॥१॥ सु०
जिम वस्त्रपुराणउतारी । पहरेनवीन नरनारीजी
तिम जीव शरीर दुबारा ॥ २ ॥ सुन अर्जुन०
मणिका जिम डोर अधारे । तिम सब जग मोर

सहारेजी। मम अंश जीव है सारा ॥३॥ सु०
यह नश्वर तन थिर नाहीं। क्या शोच करे
मनमांहीजी। ब्रह्मानंद है रूप तुमारा ॥४॥सु०

(राग बनजारा ताल ३)

मुनि कपिल कहे सुन माई
अब सांख्य ज्ञान मन लाई ॥ टेक ॥ मुनि०
सत रज तम त्रिगुण समाना
सब मिलकर प्रकृति बखानाजी
नित जड परिणाम धराई ॥ १ ॥ मुनि०
चेतन सम रूप निराला। जांका सब घटमें
उजियालाजी। सोई पुरुष जानतनमांही।२मु०
यह प्रकृति पुरुष मिल दोई
सब जगतकी रचना होईजी
बिन तिनके अवर कछु नाहीं ॥ ३ ॥ मुनि०
जब पुरुष जुदा करजाना। तब छूटे आवन
जानाजी। ब्रह्मानंदस्वरूप समाई ॥४॥ मुनि०

(बनजारा ताल ३)

शुकदेव कहे मुनिज्ञानी
सुन भूप भागवत बानी ॥ टेक ॥ सुन०
सुख दुख अरु जीवन मरणा
सब अपना करना भरणाजी
कोई करत न किसकी हानी ॥ १ ॥ सुन०
यह दुस्तर भवजल धारा । बिन भजन न हो
निस्ताराजी । हरिनाम सुमर सुखखानी ॥२ सु०
सुरनर पशु जीव जहाना । नहि भेद कल्पना
नानाजी । सब एक ब्रह्ममय जानी ॥३॥ सुन०
यह जीव अमर सुखराशी । क्षणभंगुर देह
विनाशीजी । ब्रह्मानंदछोड अभिमानी ४ सु०

(बनजारा ताल ३)

शुकदेव समझ मनमांही
मैं स्वर्गलोकसे आई ॥ टेक ॥
रंभा है नाम हमारा । सब परियोंकी सरदाराजी

कंचन सम देह सुहाई ॥ १ ॥ मैं स्वर्ग०
सब जगतबीच सुखकारी । नहीं मुझसी
सुंदर नारीजी । मुखचंद सुगंध भराई ॥२॥ मैं०
ईश्वरने जगतबनाया । नरनारी जोगमिलायाजी
तुम भोगो अति सुखदाई ॥ ३ ॥ मैं स्वर्ग०
तन कोमल उमरकुमारा । क्या वृथा कठिन
तपधाराजी । ब्रह्मानंद तजो हठताई ॥ ४ ॥ मैं०

(बनजारा ताल ३)

शुकदेव कहे तपधारी
सुन रंभा बात हमारी ॥ टेक ॥
तुम सुंदर रूप बनाया । सब हारसिंगार
सजायारी । क्या मायाजाल पसारी ॥१॥ सुन०
क्षणभंगुर विषयविकारा । नही मनललचाय
हमारारी । हरिनाम परम सुखकारी ॥२॥ सुन०
सबजीवजूनके मांही । नारी सुख दुर्लभ नांहीरी
मानुषतन मोक्ष दुवारी ॥ ३ ॥ सुन०

नही विषयानंद सुहावे। ब्रह्मानंद मेरे
मनभावेरी। अपने घर जावो प्यारी ।।४।।सुन०

(बनजारा ताल ३)

महादेव कहे निर्वानी
सुन गिरजा अमर कहानी ।। टेक ।।
जबप्राण अपानमिलावे।तबकुंडलनीउठजावेजी
चडे सुंन शिखरमें प्राणी ।। १ ।। सुन गिरजा०
जहां अमर गुफा सुखदाई। योगीजन ध्यान
लगाईजी। सब काया सुध बिसरानी। २ सु०
नही जीव कलेवर मांहीं। तब काल आय फिर
जाईजी। कैर सके नही कछु हानी। ३ सुन०
तबयोगीप्राण उतारे।ब्रह्मानंद अमरतनधारेजी
मम बचन सत्यकर मानी ।। ४ ।। सुन गिरजा०

(बनजारा ताल ३)

सिरीराम कहे समझाई
सुन लछमन प्यारे भाई ।। टेक ।।

बनबास पिताने दीना । मैने बचन शीशधर लीनाजी । संग जनकसुता सुखदाई । १ सुन०
नहि दोष केकई माता । यह लिखिया लेख विधाताजी । मेरे मनमे शोच कछु नाहीं २ सु०
सुख दुख सब दैवअधीना । नहि कोई किसीका कीनाजी । जग मूरख जन भरमाई । ३ सुन०
यहकर्मगतीबलवाना । भोगेबिनहोयनहानाजी ब्रह्मानंद न मन घबराई ॥ ४ ॥ सुन लछमन०

(राग बनजारा ताल ३)

सिरीराम कहे सुख कारी
सुन शबरी[1] बात हमारी ॥ टेक ॥

जप तप ब्रत योग विधाना । बहु वेद पुराण बखानारी । सब से मम भक्ति सुखारी । १ सु०
कोई छाप तिलक तन धारे । कोई जटाविभूति सुधारेरी । मुझे प्रेम भक्ति इक प्यारी ॥ २ ॥

---

1 भीलनी.

नहि कुलजाती मैं जानुं । निजभक्त ऊंच कर मानुंरी । यह वचन सत्य निर्धारी ॥ ३ ॥
तुझ प्रेमहेत हमआये । तेरेहाथबेरफलखायेरी ब्रह्मानंद हो मोक्ष तुमारी ॥ ४ ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

सिरीराम कहे बिलपाई[1]
अब जाग पियारे भाई ॥ टेक ॥
वो मेघनाद हत्यारा । जिन शक्ति बान कस माराजी । सब तन की सुध बिसराई ॥ १ ॥
यहकामबुरामैंकीना । बनवाससंगतुमलीनाजी मुझ अवगुण चित न धराई ॥ २ ॥ अब०
इकसीतागईचुराई । अबपडेधरणतुमशायीजी किम धीरज मुझको आई ॥ ३ ॥ अब०
तुम बिन कैसे घर जावुं । क्या अपना मुख दिखलावुंजी । ब्रह्मानंद उठो सुख दाई ४ अ०

---

१ बिलाप करके.

(बनजारा ताल ३)

सिरीराम कहे हनुमाना
सुन बचन कहुं परमाना ॥ टेक ॥
तुम सीता खबर सुनाई । मेरे मनकी शोच मिटाईजी । तर आयो वारिनिधाना[1] ॥ १ ॥
सागरमेंसेतुबनाया। सबलशकरपार लंघायाजी कीया लंकपुरीमें ठाना ॥ २ ॥ सुन बचन०
लछमनकीजानबचाई । सबराक्षससेनगिराईजी रावणदश शीश उडाना ॥ ३ ॥ सुन बचन०
ममकामकियाबडभारी। तुमजीवोवर्षहजारी[2]जी ब्रह्मानंद भोग सुख नाना ॥ ४ ॥ सुन बचन०

(राग बनजारा ताल ३)

सिरीकृष्ण लाज रख मेरी
मैं शरण पडी हुं तेरी ॥ टेक ॥
दुर्योधन कपट चलाया । सब पांडव राज्य

---

१ समुद्र. २ हजारो.

हरायाजी । मुझे बीच सभा के घेरी ॥ १ ॥
दुःशासनहाथपसारे । मेरे तनसें चीर उतारेजी
सब लोक खडे चहुं फेरी ॥ २ ॥ मैं शरण०
अब सकल जगत के मांहीं । मेरा कोई सहायक
नाहींजी । मुझे एक आश तुझ केरी ।३। मैं०
तुमभक्तनकेसुखदाई । अबबेगखबरलोआईजी
ब्रह्मानंद चरण की चेरी ॥ ४ ॥ मैं शरण०

(राग बनजारा ताल ३)

कहे कृष्ण मोरधुज राजा
तुम सब भक्तन सिर ताजा ॥ टेक ॥
साधुनका वेष बनाये । हम द्वार तुमारे आयेजी
संग में बन सिंघ बिराजा ॥ १ ॥ तुम सब०
हम भोजनमें हठ कीना । सुत बदन काट तुम
दीनाजी । निज धर्म बचन के काजा ॥ २ ॥
सबरुदनकरेंनरनारी । तुमधीरजमनमेंधारीजी
सब तजी जगत की लाजा ॥ ३ ॥ तुम०

यहदेखभक्तिव्रततेरा। अतिहर्षभयामन मेराजी ब्रह्मानंद सबी दुख भाजा ॥ ४ ॥ तुम०

(बनजारा ताल ३)

कहें पांडव कृष्ण मुरारी
अब राखिये लाज हमारी ॥ टेक ॥
दुर्बासा मुनि चल आया। संग शिष्य हजारों लायाजी। अति उग्र तपोबल धारी ॥ १ ॥
घर में नहि भोजनत्यारा। किस भांत होय सतकाराजी। यह आयो संकट भारी ॥२॥
दुर्योधनकपटबिचारा। मुनिराजशापनिर्धाराजी वो नाश करे कुल सारी ॥ ३ ॥ अब०
अब बेग दया कर आवो। मुनिकोप अगनसे बचावोजी। ब्रह्मानंद भगत हित कारी ॥४॥

(बनजारा ताल ३)

यमराज कहे दंडधारी
सुन जीव तुं बात हमारी। टेक।

मानुष तन तुझने पाया । क्यों हरिका नाम भुलायाजी । पडा नरक बीच दुख भारी ॥१॥
हैभरतखंडजगमांही । शुभकर्मभूमिसुखदाईजी तहां किये पाप मति मारी । २ । सुन जीव०
विषयोंमे मन धरलीना । पलभर सतसंग न कीनाजी । पशुवों सम उमर गुजारी ॥ ३ ॥
अब क्या पीछे पछतावे । तुझे जरा शर्म नहि आवेजी । ब्रह्मानंद है भूल तुमारी ॥४॥ सु०

(बनजारा ताल ३)

मैनावती बचन उचारा
सुन गोपीचंद पियारा । टेक ।

जिनकी कंचनसी काया । धन जोबन रूप सवायाजी । सब हो गये काल अहारा १ सु०
यहराज्यसंपदाभारी । सबहोयपलकमेन्यारीजी तज माया मोह पसारा ॥ २ ॥ सुन गो०
सतगुरुकी शरण सिधारो । कर योग अमर तन

धारोजी । मिटे जन्ममरण संसारा । ३ । सुन०
वो नाथ जलंधर योगी । नित ब्रह्मानंद रस
भोगीजी । कर सेवा हो निस्तारा ॥४॥ सुन०

(बनजारा ताल ३)

सब तज कर राज्य समाजा
बन चले भरतरी राजा । टेक ।
इकविप्रअमरफललाया । नृपरानीहेतपठायाजी
तन अमर होनके काजा ॥ १ ॥ बन०
रानी निज प्रीतमदीना । तिन वेश्या अर्पण
कीनाजी । फिर भूपति भेट विराजा ॥ २ ॥
जिससेममप्रेमसवाया । सोसेवेपुरुषपरायाजी
सब मेटी कुल की लाजा ॥ ३ ॥ बन०
मैंमूरखनारअधीना । नहीभजनईशकाकीनाजी
ब्रह्मानंद वृथा सब साजा ॥ ४ ॥ बन०

(बनजारा ताल ३)

जगदीश जगतपति प्यारा

कर भव दुख दूर हमारा । टेक । जग०
तुमसबजीवनकेस्वामी।घटघटकेअंतरयामीजी
सब व्यापक सबसे न्यारा ।। १ ।। जग०
भूमिजलअंबरभारी । सबरचनाविश्वतुमारीजी
अचरज यह खेल पसारा ।। २ ।। जग०
ब्रह्मा शिव ऋषि मुनिदेवा । नित करत तुमारी
सेवा जी । सबका तुम पालनहारा । ३ । जग०
करुणानिधि दीन दयाला । शरणागत जन
प्रतिपालाजी । ब्रह्मानंद मैं दास तुमारा ४ ज०

(बनजारा ताल ३)

जगदीश मैं शरण तुमारी
प्रभु सुनिये विनति हमारी । टेक ।
यह पांच विषयकी धारा । सब बह्या जात
संसाराजी । करुणा कर पार उतारी । १ जग०
पंछी जिम जाल अधीना । तिम जीव कर्मवश
कीनाजी । मोहे लीजिये बेग उबारी । २ जग०

तन धन सुत बांधव नारी। सब झूठ जगतकी यारीजी। तुमबिन नहि को हितकारी। ३ ज०
यह प्रबल तुमारी माया। जामें जीव फिरे भरमायाजी। ब्रह्मानंद करो प्रभु न्यारी ४ ज०

(राग बनजारा ताल ३)

सुन सत्य वचन नर मेरा
मिटे जनम मरण दुख तेरा। टेक।
करपरमेश्वरसे प्रीति। नहिंहैतनकीपरतीतिजी पल छिनमें कूच होय डेरा ॥ १ ॥ सुन०
मनसें तज विषय विकारा। करले सतसंग विचाराजी। बिन ज्ञान मिटे न अंधेरा ॥२॥
नित बैठ एकांत सदनमें। धर ध्यान ईश्वरका मनमेंजी। मत दूर जान है नेरा। ३। सुन०
सब जग मिथ्या कर जानो। ब्रह्मानंद स्वरूप पहचानोजी। मिटे लख चौरासी फेरा ॥४॥

(राग बनजारा ताल ३)

सुन नाथ अरज अब मेरी
मैं शरण पडा प्रभु तेरी । टेक ।
तुम मानुष तन मोहे दीना । नहि भजन तुमारो कीनाजी । विषयोंने लई मति घेरी ॥ १ ॥
सुतदारादिकपरिवारा । सबस्वारथकासंसाराजी जिनहेत पाप किये ढेरी ॥ २ ॥ सुन०
मायामेंजीवभुलाना । नहिरूपतुमारोजानाजी पडा जन्ममरणकी फेरी ॥ ३ ॥ सुन०
भवसागरनीरअपारा । करकृपाकरोप्रभुपाराजी ब्रह्मानंद करो नहि देरी ॥ ४ ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

कहे मारकंड मुनिराया
हरि धन्य तुमारी माया ॥ टेक ॥ कहे०
मैं मनमें सुमरण कीना । सब जलधारा जग भीनाजी । कुटिया संग फिरा बहाया १ हरि०

इकबालकबटतरुशाई। मुझेलियाउदरमेंपाईजी
तहां सब जग फिर दरसाया ॥२॥ हरि धन्य०
मुखसे जब बाहिर डारा। निजआश्रम आय
निहाराजी। पलमें बहुवर्ष बिताया ३ हरि०
तुमपूरणब्रह्मअपारा। मुझेलीजिये बेगउबाराजी
ब्रह्मानंद शरण में आया ॥ ४ ॥ हरि धन्य०

(बनजारा ताल ३)

कहे लछमन कोमल बानी
सुन परशुराम अभिमानी ॥ टेक ॥
हमबालकपणमेंभारे। केईधनुषतोडकरडारेजी
क्या शंकर चाप कहानी ॥ १ ॥ सुन०
कुछक्षत्रियनाशकराई। तुमफूलगयेमनमांहीजी
कोई मिला न बीर सुजानी ॥ २ ॥ सुन०
मैंविप्रजानशरमावुं। नहियमघरआजपठावुंजी
क्या झूठी हठ तुम ठानी ॥ ३ ॥ सुन०
यहरामचंद्रभगवाना। जिनतोडाधनुषपुराणाजी

ब्रह्मानंद समझ मुनि ज्ञानी ॥ ४ ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

सुनो सुनो बचन नरनारी
हरि भजन करो सुखकारी ॥ टेक ॥ सुनो०
जिन रचा शरीर तुमारा । उसका क्यों नाम
बिसाराजी । कृतघन शठ मूढ अनारी १ हरि०
खानापीनासोजाना । सबकामहैपशुसमानाजी
क्यों देह मनुजकी धारी ॥ २ हरिभजन०
क्यागर्वकरेमनमांहीं । तुझेकालपकडले जाईजी
पलछिनकी लगे नहि वारी ॥३॥ हरिभजन०
विषयों सें मनको मोडो । हरिचरणकमलमें
जोडोजी । ब्रह्मानंद मिटे भयभारी ।४। हरि०

(बनजारा ताल ३)

सुनो सुनो सखी मुझ प्यारी
कर पिया के मिलन की त्यारी ॥ टेक ॥
दो दिनका पियर ठिकाना । फिर अंत सखुर घर

जानारी । क्या झूठी मोह पसारी ॥ १ ॥ कर०
सब मैल उतार बदन से । कर हार सिंगार
जतनसेंरी । नख शिख ले देह सुधारी ॥ २ ॥
तुझ से गुण रूप सवाई । केई पिया के चरण
लिपटाईरी । मत हो जोबन मत वारी ॥३॥
पिया बिन न कबी सुख पावे । क्यों बिरथा जन्म
गमावेरी । ब्रह्मानंद रहो मत न्यारी ॥ ४ ॥

(बनजारा ताल ३)

चलो चलो सखी अब जाना
पिया भेज दिया परवाना ॥ टेक ॥
इक दूत जबर चल आया । सब लशकर संग
सजायारी । किया बीच नगर के ठाना ॥१॥
गढ़ कोटकिलेगिरवाये । सबद्वारबंदकरवायेरी
अब किस विध होय रहाना ॥ २ ॥ पिया०
जबदूतमहलमेंआवे । तुझेतुरतपकडलेजावेरी
तेरा चले न एक बहाना ॥ ३ ॥ पिया०

मगपंथकठिनहैभारी। करसंगसमानतियारीरी
ब्रह्मानंद फेर नहि आना॥ ४ ॥ पिया०

(बनजारा ताल ३)

दो दिन का जग में मेला
सब चला चली का खेला ॥ टेक ॥
कोई चला गया कोई जावे। कोई गठडी बांध
सिधावेजी। कोई खडा तियार अकेला १ सब०
कर पाप कपट छल माया। धन लाख करोड
कमायाजी। संग चले न एक अधेला ॥ २ ॥
सुत नार मात पितु भाई। कोई अंत सहायक
नाहींजी। क्यों भरे पाप का ठेला॥३॥ सब०
यहनश्वरसबसंसारा। करभजनईशकाप्याराजी
ब्रह्मानंद कहे सुन चेला ॥ ४ ॥ सब०

(गजल चलत ताल दादरा)

विनां हरिके भजन मुफत जन्म गमाया

---

१ बृजराज आज सांवरो बंसी बजागया ९ तक.

दुनियांकी मौजमें फिरे सदाही भुलाया ।।टेक।।
यह वारवार देह मनुजका न मिलेगा
डालीसे टूटा फूल वो फिरके न खिलेगा
दिन चार पांचके लिये क्या ढंग जमाया ।।१।।
जिनको तुं मानता है मेरे हैं यह पियारे
वो छोडकर तुझे जंगलमें घरको सिधारें
परलोकमें न तेरो कोई होत सहाया ।। २ ।।
मोहकी मदिराको पीके मरण भुलया
चूस चूस विषया रसकूं फिरत फूलया
जबतक न चूहे को बिलीने मुखमें उठाया ।।३।।
कहता है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद लीजिये
सदा हरिका भजन दिल लगाके कीजिये
जिसने किया सो फिर न गर्भवासमे आया ।४।

(गजल चलत ताल दादरा)

अये दीनबंधु आज मेरी अरज सुन जरी
दयानिधान जान आन शरणमें पडी ।। टेक।।

काम क्रोध लोभ मोह चोर धन हरें
तेरे बिना दयाल कौन पालना करे
बडे हैं जोरदार हार खायके डरी अये० ॥१॥
अज्ञानका पडदा मेरे दिलसे उठाइये
विषयोंके जालसे प्रभु मुझको बचाइये
भवसिंधुको तरा सोई जिसपे दयाकरी ॥२॥
जनममरणका रोग मेरा नाश कीजिये
चरणकमलकी भक्ति दास जान दीजिये
मिटेंगे दुख सबी जबी तेरी नजर हरी ।३। अ०
गुणहीन जानकर मुझे दिलसे न टारिये
जनम जनमका दास जानकर संभारिये
ब्रह्मानंद तेरे नामकीमैं टेक मन धरी ।४। अ०

(गजल ताल दादरा)

मान मान मान कह्या मान ले मेरा
जान जान जान रूप जानले तेरा । टेक ।
जाने बिना स्वरूपके मिटे न दुख कबी

कहते हैं वेद वार वार बात यह सबी
सत संगमें मन जोड तोड मोह का घेरा १ मा०
जाता है देखने जिसे काशी दुवारका
मुकाम है बदनमें तेरे उसही यारका
लेकिन बिना बिचारके किसुनें नही हेरा२मा०
जो नैनकाभी नैन बैनकाभी बैन है
जिसके बिना शरीरमें न पलक चैन है
पिछान ले वही तेरा स्वरूप है नेरा ।३। मा०
कहताहै ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद तुं सही
बात यह पुराण वेद ग्रंथमें कही
विचार देख मिटे जन्ममरणका फेरा ।४। मा०

(गजल ताल दादरा)

नाम नाम नाम जपो नाम रामका
काम काम काम तजो काम धामका ॥ टेक ॥
बिना हरिके नाम कबी सुख न पायगा
मरकरके अंतकाल मे तुं नरक जायगा

मिलेगा बारबार तुझे तन गुलामका ।१। ना०
करताहै क्या गुमान तुं जोबन वा मालका।
महमानहै यह पास तेरे आजकालका
पुतला बिखर जायगा तेरा हाडचामका। २
तप योग यज्ञ दान कर्म हैं बडे सही
कलियुगमें नामके समान दूसरा नही
मिलता है यतनसे बिना बिनाही दामका ।।३।।
पाकर मनुजका तन जो हरिनाम ना लिया
चिंतामणीको मूढ काचसें बदलदिया
ब्रह्मानंद भजनके बिना जीना न कामका।४।

(गजल ताल दादरा)

जाग जाग जाग मोह नींदसे जरा
भाग भाग भाग भोग जालसें परा ।। टेक ।।
विषयोंके जालमें फसा छुटे नही कबी
जनम जनममें विषय संग होत हैं सबी
बिना बिरागके न भवसिंधुको तरा ।। १ ।।

वर्ष गया मास गया दिन गई घडी
दुनियांके कारबारमें खबर नही पडी
नजदीक काल आगया मनमें नही डरा ॥२॥
संगतसें देह की स्वरूपको बिसारिया
जगतको सत्य मानके मनको पसारिया
दिनरात करे शोच राग द्वेषसे भरा ॥ ३ ॥
अपने स्वरूपको बिचार देखले सही
ईश्वर है तेरे पास वो तुझसे जुदा नही
ब्रह्मानंद येही वेदका सुनले बचन खरा।४।

(गजल ताल दादरा)

सोहं सोहं सोहं सदा बोल रे तोता
नही तो भवसिंधुमें तुं खायगा गोता । टेक ।
जगतबगीचे बीच फलचूसता फिरें
आतमस्वरूपकी तरफ नजर नही धरें
खायगा जम गुलेल जवी फिरेंगा रोता ॥ १ ॥
लालचको देख मूढ पींजरेमें फस गया

सदाही खान पान मान हेत बश भया
तुं छोडकर इसे कबी जुदा नही होता ॥ २॥
इकदिनमें पिंजराभी तेरा टूट जायगा
स्वजन मकान माल सबी छूट जायगा
जिनके तुं वासते मुफत उमर फिरे खोता॥३
कहताहै ब्रह्मानंद सुनो सुवारे चपल
इस पिंजरेको छोड सदा हो रहो अचल
तुं जाग मोहनींदसे फिरे कहां सोता ॥ ४॥

(गजल ताल दादरा)

सोहं सोहं सोहं सदा बोलरी मैना
होता है अष्टपहर येही वेदका कहना । टेक।
तुं बैठ वृक्षडार शब्द बोलती रहें
अपने मुकाममें कबी विश्राम ना लहें
लगेगी बाज की झपट खुलेंगे तो नैना ॥१॥
जिसको तुं ढूंडने जंगलमें जाती है सदा
वही है तेरे पास नहि होता कबी जुदा

बतावते हैं संत येही समझले सैना ॥२॥ सोहं०
इस पिंजरेमें बैठ भूल आपको गई
विषयोंकी लालसा सें सदा कैद हो रही
तुं छोड विषयसंग तबी पायगी चैना ॥ ३ ॥
यह पिंजरा पुराणा तेरा होतजात है
दिन चारपांच वा घडी वा पलकी बात है
ब्रह्मानंद तेरे संग यह सदा नही रहना ॥४॥

(गजल ताल दादरा)

गाफिल तुं जाग देख क्या तेरा स्वरूप है
किस वासते पडा जन्ममरणके कूप है ॥ टेक ॥
यह देह गेह नाशवान है नही तेरा
वृथाभिमान जालमें फिरे कहां घेरा
तुं तो विनाशसें परे सदा अनूप है ॥ १ ॥
भेद दृष्टि कीन जबी दीन होगया
स्वभाव आपनेसें आप हीन होगया
विचार देख एक तुं भूपनका भूप है ॥ २ ॥

तेरे प्रकाशसें शरीर चित्त चेतता
तुं देह तीन दृश्यको सदा है देखता
द्रष्टा नहि होता है कबी दृश्य रूप है ॥ ३ ॥
कहता है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद पाइये
इस बातको बिचार सदा दिलमें लाइये
तुं देख जुदा करके जैसे छाय धूप है ॥ ४ ॥

(गजल ताल दादरा)

अपनेको आप भूलके हैरान होगया
मायाके जालमें फसा विरान होगया ॥ टेक ॥
जडदेहको अपना स्वरूप मान मन लिया
दिनरात खान पान कामकाज दिल दिया
पानीमें मिलके दूध एकजान होगया ॥ १ ॥
विषयोंको देखदेखके लालचमें आरहा
दीपकमें ज्यों पतंग जायके समारहा
विना विचारके सदा नादान होगया ॥ २ ॥
कर पुण्यपाप स्वर्ग नरक भोगता फिरे

तृष्णाकी डोरसें बंधा सदा जनम धरे
पीकरके मोहकी सुरा बेभान होगया ॥ ३ ॥
सतसंगमें जाकर सदा दिलमें विचारले
बदनमें अपने आप रूपको निहारले
ब्रह्मानंद मिले मोक्ष जबी ज्ञान होगया ॥४॥

(गजल ताल धमाल)

अगर है मोक्षकी वांछा
छोड दुनियांकी यारी है ॥ टेक ॥ अगर०
कोई तेरा न तुं किसका सबी मतलबके हैं साथी
फसाक्योंजालमाया के कालसिरपेसवारी है ॥१
बैठ संगतमें संतनकी रूप अपनेको पहचानो
तजो मद लोभ हंकारा करोभगतीपियारीहै ॥
बसो एकांतमें जाकर धरो नित ध्यान ईश्वरका
रोक मनकी चपलताई देख घटमें उजारी है॥

---

१ अगर है शौक मिलनेका तो हरदम लौ लगाताजा
विनारघुनाथके देखे नही दिलको करारी है, २३ भजनतक.

जलाकर कर्मकी ढेरी तोड मायाके बंधनको
ब्रह्मानंदमें मिलो जाकर सदा जो निर्विकारी है।

(गजल ताल धमाल)

अगरहैप्रेमदर्शनका भजनसेप्रीतकरप्यारा।।टेक
छोडकरकाम दुनियांके रोकविषयोंसेंमनअपना
जीतकरनींद आलसको रहो एकांतमे न्यारा१
बैठआसन जमाकरके त्याग मनके विचारोंको
देखभृकुटीमें अंदरसे चमकताहै अजबतारा।।२
कबीबिजली कबीचंदा कबीसूरज नजरआवे
कबीफिरध्यानमेंभासे ब्रह्मजोतीका चमकारा३
मिटेंसबपापजन्मोंके कटें सब कर्मके बंधन
वो ब्रह्मानंदमें होवे लीनमनछोडसंसारा ।।४।।

(गजल ताल धमाल)

अगरहै प्रेममिलनेका तो दुनियांसे क्युंशरमावे
पिताप्रल्हादको मारा नाम हरिका न छोडाहै
प्रभुरक्षाकरेजिनकी तोमनमें कौनडरपावे।।१।।

चलाबनमें तपस्याको मना ध्रुवको कियाराजा
लगन जिसकोलगी पूर्ण उसेफिरकौन अटकावे
सभा के बीच द्रुपदीने पुकारा नाम माधवका
भरोसाहै जिसे हरिका क्यों दूजेकी शरण जावे
सदासतसंगमें जाकर करो हरिकाभजन प्यारे
वोब्रह्मानंद जाताहै वकतफिरहाथ ना आवे ॥

(गजल ताल धमाल)

कृष्ण घर नंदके आये सितारा[1] हो तो ऐसा हो
करें सबप्रेमसे दर्शन दुलारा हो तो ऐसाहो॥टेक
बकासुरको मसल डारा पूतना जानसे मारी
कंसको केशसे खेंचा खिलारा होतो ऐसा हो१
कूदपानीके अंदरसे नागको नाथ कर लाये
चरणफणफणपे धरकरके नचाराहोतोऐसाहो२
तीर जमुनाके जाकरके बजाई बंसरी मोहन
चलीघरछोडब्रजनारी पियारा हो तो ऐसाहो३

---

१ भाग्य.

रचाई रास कुंजनमें मनोहररूप बन करके
देवदर्शनको चलआये दिदारा होतो ऐसाहो ४
गयेजबछोड गोकुलको नही फिरलोटकर आये
सखीरोती रही बनमें किनारा होतो ऐसाहो ५
पुरी द्वारावती जाकर महल सोनेके बनवाये
हजारों रानियांव्याही पसारा होतो ऐसा हो ६
कुरुपांडव लडे रणमें जीत अर्जुनकी करवाई
बचाईलाज द्रुपदीकी सहारा होतो ऐसाहो ७
उताराभार भूमिका सिधाये धाम अपनेको
वो ब्रह्मानंद दुनियांसे नियारा हो तो ऐसा हो ८

(गजल ताल धमाल)

राम दशरथके घर जन्मे घरानाहो तो ऐसाहो
लोकदर्शनकोचलआये सुहानाहोतो ऐसाहो।टे.
यज्ञके काम करनेको मुनीश्वर ले गया बनमें
उडायेशीश दैत्यनके निशाना हो तो ऐसाहो १
धनुषको जायकर तोडा जनककी राजधानीमें

भूपसबमनमें शरमाये लजाना हो तो ऐसाहो२
पिताकी मानके आज्ञा राम बनकोचले जबही
नछोडासंगसीताने जनाना हो तो ऐसा हो ३
सियाको लेगया रावण बनाकर वेष जोगीका
कराया नाशसबअपना दिवाना होतोऐसाहो४
प्रीतसुग्रीवसे करके गिराया बाणसे बाली
दिलाईनार फिरउसकी घराना होतो ऐसाहो५
गया हनुमान सीताकी खबर लेनेको लंकामें
जलाकरकेनगरआयासियानाहोतोऐसाहो ॥ ६
बांध सेतु समुंदरमें उतारा पार सेनाको
मिटायां वंश रावणका हराना होतो ऐसाहो७
राज्यदेकर बिभीषणको अयोध्यालोटकर आये
वोब्रह्मानंद बलअपना दिखानाहो तो ऐसाहो८

(गजल ताल धमाल)

सदाशिव सर्व वरदाता दिगंबर हो तो ऐसा हो
हरेसबदुःखभक्तनकेदयाकरहो तो ऐसाहो ।टे०

शिखर कैलासके ऊपर कल्पतरुवोंकी छायामें
रमे नित संगगिरिजाके रमण घरहोतो ऐसाहो
शीश पर गंग की धारा सुहावे भालमें लोचन
कलामस्तकमें चंदरकी मनोहर होतोऐसाहो २
भयंकरजहर जब निकला क्षीरसागरकेमंथनसे
धरासबकंठमें पीकर विषंधर होतो ऐसाहो।३
सिरोंको काटकर अपने कियाजबहोमरावणने
दियासबराज्यदुनियांका दिलावरहोतोऐसाहो
किया नंदीने जा बनमें कठिनतपकालकेडरसे
बनाया खासगणअपना अमरकरहोतोऐसाहो
बनाये बीच सागरमें तीन पुर दैत्यसेनाने
उडाये एकही शरसें त्रिपुरहर होतो ऐसाहो ६
दक्षके यज्ञमें जाकर तजी जब देह गिरिजाने
कियासब ध्वंस पलभरमें भयंकर होतोऐसाहो
देव नर दैत्य गण सारे जपें नित नाम शंकरका
वोब्रह्मानंद दुनियांमें उजागर होतो ऐसाहो८

(गजल ताल धमाल)

प्रभु सब में समाया है समाना हो तो ऐसा हो।
करी सब विश्व की रचना
रचाना हो तो ऐसा हो ॥ टेक ॥
बिना सामान बाहिर के बिना हथियार के कोई
बनाये हैं भुवन सारे बनाना हो तो ऐसा हो।१
बीज सें देह की पैदा बदन सें बीजका होना
चलाया चक्र दुनियां का चलानाहो तोऐसाहो
कोई पाताल के नीचे बसाये जीव भूतल में
कोई आकाश के ऊपर बसाना हो तो ऐसा हो३
चांद सूरज वा तारों के फिरें आकाश में मंडल
बिना आधार के कोई फिराना हो तो ऐसा हो४
बनाई देह मानुष की दिये सब भोगके साधन
बिना उपकार के करुणानिधाना हो तो ऐसाहो
चराचर सर्व जीवनकी करे नित पालना पोषण
सकल संसार का मालिक कहानाहो तोऐसाहो

जगत के आदि से पहले रहे मौजूद आखिरमें
पिता संसार सारे का पुराणा हो तो ऐसा हो। ७
शरण में जीव जो आवे मिटें सब जाल माया के
वो ब्रह्मानंद बंधन से छुडाना हो तो ऐसा हो८

(गजल ताल धमाल)

सुनो जगदीश दिल देके
अरज अब तो हमारी है ॥ टेक ॥ सुनो०
जुदा जबसे हूया तुमसे फसा मायाके चक्करमें
निकलना है कठिन भारी नजरआवे न बारी है
आयाथा एकला तुमरे भजन करणेको दुनियांमें
कुटुंब परिवार सुत दारा जाल झूठी पसारी है२
कर्मकी डोरसे बांधा पडा कायाके पिंजरमें
फिराविषयोंकीलालचमें उमरसारीगुजारी है३
माफकर दोष सब मेरे दास अपना बनालीजे
वो ब्रह्मानंद चरणोंकी भक्ति दीजे तुमारीहै ४

(गजल ताल धमाल)

अगर है ज्ञानको पाना
तो गुरुकी जा शरण भाई ॥टेक॥ अगर है०
जटा सिरपे रखानेसे भस्म तनमें रमानेसे
सदा फलमूल खानेसे कबी नहि मुक्तिको पाई
बने मूरत पुजारी है तीरथ यात्रा पियारी है
करे व्रतनेम भारी है भरम मनका मिटे नाही२
कोटिसूरज शशी तारा करें परकाश मिल सारा
बिना गुरु घोर अंधारा न प्रभुका रूप दरसाई३
ईश सम जान गुरु देवा लगा तनमन करो सेवा
ब्रह्मानंद मोक्ष पद मेवा मिले भवबंध कटजाई४

(गजल ताल धमाल)

शरणमें आपडा तेरी प्रभु मुझको भुलानाना।टे०
तेरा है नाम दुनियांमें पतितपावन सबी जानें
देखकर दोषको मेरे नजर मुझसे हटानाना॥
कालकी है नदी भारी बहा जातांहुं धारामें

पकडले हाथ अब मेरा नाथ देरी लगानाना ॥
भगत तेरे हैं बहुतेरे करें सुमरण सदा मनमें
जानकर दास दासनका मुझे उनसे छुडानाना॥
तेरा है रूप अविनाशी जगत सारेमें है पूरण
वो ब्रह्मानंद नैननसे मेरे कबहूं छिपानाना ॥४

(गजल ताल धमाल)

नजरभर देखलेमुझको शरणतेरी मैं आयाहुं।टे.
कोई माता पिता बंधु सहायक है नही मेरा
काम अरु क्रोध दुशमनने बहुतदिनसेसतायाहुं
भुलाकर यादको तेरी पडा दुनियांकी लालचमें
मायाके जालमें चारों तरफसे मैं फसायाहुं २
कर्म सब नीच हैं मेरे तुमारा नाम है पावन
तार संसार सागरसे गहन जलमें डुबायाहुं ३
छुडाकर जन्म बंधनसे चरणमें राखले अपने
वो ब्रह्मानंद मैं मनमें येही आशा लगाया हुं ४

(गजल ताल धमाल)

नजरभरदेखले मुझको शरणमेंआपडातेरी। टे०
तेरा दरबार है ऊंचा कठिन जाना है मंजिल का
हजारों दूत मारग में खडे हैं पंथको घेरी ॥१॥
नहीं है जोर पैरों में न दूजा संग में साथी
सहारा दे मुझे अपना करो नहि नाथ अब देरी
नहीं है भोग की बांछा न दिल में मोक्ष पाने की
प्यासदर्शन की है मनमें सफलकरआशको मेरी
क्षमा कर दोष को मेरे बिरद को देख के अपने
वो ब्रह्मानंद कर करुणा मिटा दे जन्म की फेरी

(गजल ताल धमाल)

सुनो दिलको लगा प्यारे
धुनी अनहदकी होती है ॥ टेक ॥
बजे है बंसरी बीना शंख घडियाल मिरदंगा
गरज बादलकी है भारी कर्मकी मैल धोती है१
उठे धुनके सहारेसे बदन सारेमें गुंजारा

अमृतकीधार तालुसें सदा मुखमें निचोती है।२
लगे मन नादके अंदर भुले तनकी खबर सारी
हिरदेके बीचमें सुंदर प्रगटहो दिव्य जोती है ३
खुलें जब दृष्टिके पडदे नजर आवें भुवन सारे
वो ब्रह्मानंदकी लहरी प्रेमरसमें भिगोती है ४

(गजल ताल धमाल)

ऊधोवोसांवरीसूरतहमें दिलजान्सेभाती है।टेक
वो काले बालमाथेपे मुकुट मोरनके पांखोंकी
मकरकुंडलकी कानोंमें झलकवो यादआतीहै१
गले बनमालकी शोभा पीतांबरकी छटा तनपे
वो बंसीकी मधुर बोली हमें तन मन भुलाती है
कटीमेंमेखला सुंदरसजी मोतिनकीलडियोंकी
वो नूपुरकी धुनी पगमें हमारा दिल चुराती है
वो बनमें रासकीलीलावोजमुनातीरकेलिनकी
वो ब्रह्मानंदकी बातेंसुमरते रैन जाती है ॥४॥

(गजल ताल धमाल)

ऊधो वो सांवरी सूरत हमें फिर कब दिखावोगे।
बिरहकी आग ने हमरा जलाया है बदन सारा
मोहनके प्रेमपानीसें जलन वो कब बुझावोगे १
सुधी खाने वा पीनेकी रही हमको न सोनेकी
प्यासदर्शनकी है मनमें कृष्णको कब मिलावोगे
फिरें दिन रैन हम रोती वो वृंदाबनकी कुंजनमें
मनोहर बंसरीकी धुन हमें फिर कबसुनावोगे२
न हमको योगसें मतलब न मुक्तिकी हमे वांछा
वो ब्रह्मानंद सुंदरमें हमारा दिल लगावोगे ४

(गजल ताल धमाल)

ऊधो वो सांवरीसूरत हमारे दिलसमाई है।।टेक
न दिनको चैन नैननमें नींद नहि रातको आवे
खबर घरबारतनमनकी सबीहमको भुलाई है।।
बांधकर प्रेमबंधनसे छोड हमको गये मोहन
सही जातीनही हमसे शामकी अब जुदाई है।।

छोडकर काम हम घरके बनाकरवेष जोगनका
करेंगी खोज बनबनमें मिले कैसे कन्हाई है ॥३
चरणका ध्यान योगीजन सदा जिनका करेंमनमें
वो ब्रह्मानंद दर्शनकी लगन हमको लगाई है॥

(गजल ताल धमाल)

ऊधोवो सांवरीसूरत लगे हमको पियारी है ।टेक
धर्मकी पालना करने लिया अवतार नारायण
हमारे भाग्यथे जागे मिले हमकोमुरारी है ॥१॥
करें तपयोग बहुतेरे मिले दर्शन नहीं जिनका
वो हमरे साथ कुंजनमें फिरे बन बन बिहारी है२
ज्ञान अरु योगकी चर्चा हमारेमन नहीं भावे
पियारस प्रेमभक्तिका और सबबातखारी है ३
नही देखा है निर्गुणको न हमरे ध्यानमें आवे
वो ब्रह्मानंद मोहनकी छबीदिल बीचधारी है ४

(गजल ताल धमाल)

ऊधो वो सांवरीसूरत हमारा दिल चुरायाहै ।टे.।

बजा कर बंसरी सुंदर सुना कर गीत रागन के
रचा कर रास कुंजनमें प्रेम हमको लगायाहै १
छोड कर के हमें रोती बसे वो द्वारका जाकर
खबर लीनी नही फिरके हमे दिलसें भुलाया है
हमारा हाल जाकरके सुनाना शाम सुंदरको
तुमारे दरसके कारण हमें बनबन फिराया है
न भावें भोग दुनियांके न वांछा योग करनेकी
वो ब्रह्मानंद माधवका रूप मनमें समाया है ॥४

(गजल ताल धमाल)

ऊधो वो सांवरीसूरत नहींहमको दिखातेहो ।टे.
जगतहित कारणे हरिने धरी है देह मानुष की
मनोहर मोहनी मूरत नजर सें क्यों छिपातेहो१
कृष्ण चंदरके चरणों में लगाया ध्यान है हमने
कथा तुम रूप निर्गुणकी हमें अब क्यासुनातेहो
तरे संसारसागरको जपे जो नाम माधवका
कठिनवोयोगकासाधन हमें फिरक्योंसिखातेहो

लगीदिल बीचमें हमरे लगन दिनरातदर्शनकी
वोब्रह्मानंद किस कारण अबी देरी लगातेहो४

(गजल ताल धमाल)

ऊधो वो सांवरी सूरत हमारे नैन का तारा। टेक
अगर हम जानती मोहन चले जायेंगे गोकुलसे
लगाती प्रेम ना उनसे छोडघरकाज हम सारा
तुमारी ज्ञान की बातें असर करती नही दिलमें
वसा है कृष्ण हिरदेमें नही होता कबी न्यारा २
रहेंगे कंठमें जबतक हमारे प्राण देही में
न भूलेगा कबी हमको मनोहर रूप वो प्यारा ३
करोतुमहीवोनिर्गुणकाध्यानअरुयोगकासाधन
वो ब्रह्मानंद हमने तो हरि दिल बीचमें धारा ४

(गजल ताल धमाल)

मिलादोशामसेऊधोतेरागुणहमभीगावेंगी।टे०
मुकटसिर मोरपंखनका मकरकुंडल हैं कानोंमें
मनोहर रूप मोहनका देख दिलको रिझावेंगी१

हमनको छोडगिरधारी गये जबसे नही आये
चरणमें शीशधरकरके फेर उनको मनावेंगी२
प्रेम हमसें लगा करके विसारा नंदनंदन ने
खता क्याहोगई हमसे अरज अपनीसुनावेंगी ३
कवी फिरआय गोकुलमें हमे दर्शन दिलावेंगे
वो ब्रह्मानंदहमदिलसें नहीउनको भुलावेंगी ४

(गजल ताल धमाल)

विनाहरिनामकेसुमरे गतिनहिहोयगीतेरी। टे०
लगालेभस्मइसतनमें करो तप जाके वा वनमें
समझलेखूवयहमनमें मिटेनहिजन्मकी फेरी १
फिरोमथुरा वा काशी है सदा तीर्थनिवासी है
रहोसबसेउदासी है छुटेनहिआशमनकेरी।।२।।
करोब्रतनेमअरुदाना फिरोजंगलमेंमस्ताना
जोप्रभुकारूपनहिजाना जलेनहिकर्मकीढेरी ३
जपोहरिनामसुखकारी झूठदुनयांकीहैयारी
ब्रह्मानंदकालबलकारी करोमतभूलकरदेरी ४

(गजल ताल धमाल)

करोहरिकाभजनप्यारेउमरियाबीतजातीहै।टे
पूर्वशुभकर्म कर आया मनुजतन धरणिमें पा
फिरेविषयोंमें भरमाया मौतनहियाद आतीहै
बालापन खेलमें खोया जोबनमें कामबश हो
बुढ़ापेखाटपरसोया आशमनकोसतातीहै॥२
कुटुंबपरिवारसुतदारा स्वपनसम देखजगसा
मायानें जालविस्तारा नहीयहसंगजाती है॥
जोहरिकेचरणचितलावेसोभवसागरकोतरजा
ब्रह्मानंदमोक्षपदपावे वेदवाणीसुनाती है॥४

(गजल ताल धमाल)

जतनकरआपनाप्यारे कर्मकीआशमतकीजे।टे
मनुजकीदेहगुणकारी अकलपशुवोंसे है न्यार
ईश्वरकीहैदयाभारी फेरक्यामांगकरलीजे॥१
आलससें मूढ दुखपावे कर्मका दोष बतला
नगुणकोसीनजेखावे रातदिनशोचमेंछीजे॥

कर्मके आसरे सोवे नीच उसकी दशा होवे
लोकपरलोकसुखखोवेजतनबिनकौनपरतीजे ३
करोविधिसे जतन भाई सफल सबकाम हो जाई
वोब्रह्मानंदसुखपाई धीरजमनकोसदादीजे ॥४

(गजल ताल धमाल)

लगा ले प्रेम ईश्वरसे अगरतुंमोक्षच्हाताहै। टेक
रचा उसने जगत् सारा करे वो पालना सबकी
वहीमालिकहैदुनियांका पिता माता विधाताहै
नही पाताल के अंदर नही आकाश के ऊपर
सदा वो पास है तेरे कहां ढूंडन को जाताहै ॥२
करो जप नेम तप भारी रहोजाकर सदा बनमें
बिनासतगुरुकीसंगतसे नहीवोदिलमेंआताहै।
पडेजोशरणमेंउसकी छोडदुनियांकीलालचको
वोब्रह्मानंदनिश्चयसे परमसुखधामपाताहै ॥४॥

(गजल ताल धमाल)

दिलादे नाथ अब दर्शन खडाहुं द्वार पे आकर।

सुना जग बीचमे तेरा जबी से नाम भव तारण
फिरा मैं पूछता तेरी खबर को जाबजा जाकर १
नहीं लायक हुं मैं गरचे तेरे दीदार पानेका
क्षमा कर दोष को मेरे दया दिल बीच में लाकर
न मांगुं भोग दुनियांके न वांछा मोक्षकी केवल
तेरे दरबार में मुझको बनाले चरण का चाकर३
न जावुं द्वारका नगरी न मथुरा ढूंडने तुझको।
वो ब्रह्मानंद घटघटमें दिखा दे रूप करुणा कर४

(गजल ताल धमाल)

दिला दे भीख दर्शनकी प्रभुतेराभिखारी हुं। टे.
चला कर दूर देशन से तेरे दरबार मे आया
खडा हुं द्वार पे दिलमें तेरी आशा का धारी हुं१
फिरा संसार चक्कर में भटकता रात दिन विरथा
विना दीदार के तेरे हमेशां मैं दुखारी हुं।२।
तुंहीं माता पिता बंधु तुंहीं मेरा सहायक है
तेरे दासों के दासन के चरण का सेवकारी हुं।३

भरा हुं पाप दोषण सें क्षमा कर भूल को मेरी
वो ब्रह्मानंद सुन बिनती शरण में मैं तुमारी हुं ४

(गजल ताल धमाल)

पिला दे प्रेम का प्याला प्रभु दर्शन पियासी हुं ।
छोड कर भोग दुनियां के योग के पंथ में आई
तेरे दीदार के कारण फिरुं बन बन उदासी हुं
न जानुं ध्यानका धरना न करनाज्ञानचरचाका
नही तप योग है केवल तेरे चरणों की दासी हुं
न देखो दोष को मेरे दया की फेर दृष्टि को
न दूजा आसरा मुझ को तेरे दर की निवासीहुं
कोई वैकुंठ बतलावे कोई कैलास पर्वत को ।
वो ब्रह्मानंद घट घट में रूप की मैं बिलासीहुं

(गजल ताल धमाल)

विना सतसंगके मेरे नही दिलको करारी है ।
जगतके बीचमें आया मनुज की देहको पाकर
फसाया जाल माया के याद प्रभुकी बिसारीहै

सकल संसार के अंदर नही हितकार है कोई
नजर फैलायकर देखा सबी मतलबकी यारी है
किये जप नेमतप पूजन फिरातीरथके धामोंमें
न जाना रूप ईश्वरका उमर सारीगुजारी है
फटे अज्ञानका पडदा कटें सब कर्मके बंधन
वो ब्रह्मानंद संतनका समागम मोक्षकारी है

(गजल ताल धमाल)

मुझेक्याकामदुनियांसेबिरहमेंमैंदिवानाहुं । टेक
प्यारेकी खोजमेंनिशदिनफिरा जंगल पहाडोंमें
पतामुझकोनहिपाया बहुतदिनसेंहिरानाहुं ॥१
किये जपनेमतपभारी उसेमिलनेकी लालचसें
मिलादर्शन नही मुझको गमीमें मैं समाना हुं २
किसीकोयोगमनभावे किसीकोज्ञानकीचरचा
प्रेमसागरके पानीमें हमेशां मैं डुबानाहुं ॥३॥
बसी दिल बीचमें मेरे छबी दिलदारकी सुंदर
वो ब्रह्मानंद तनमनकी सुधीसारी भुलानाहुं ४

(गजल ताल धमाल)

मुझे है काम ईश्वरसें जगत रूठेतो रूठनदे ।। टेक
कुटुंबपरिवारसुतदारा मालधनलाजलोकनकी
हरिकेभजनकरनेमें अगर छूटे तो छूटनदे ।।१।।
बैठ संगतमें संतनकी करूं कल्याण में अपना
लोक दुनियांके भोगोंमें मौज लूटें तो लूटनदे।२
प्रभुके ध्यानकरनेकी लगी दिलमें लगन मेरे
प्रीत संसार विषयोंसें अगर टूटे तो टूटनदे ।।३
धरी सिर पापकी मटकी मेरे गुरुदेवने झटकी
वो ब्रह्मानंदने पटकी अगर फूटेतो फूटन दे ।।४

(गजल ताल धमाल)

बता दे मोक्षका मारग गुरु मैं शरणमें तेरी।टेक
जगत के बीचमें नाना किसम के पंथ हैं भारे
सुनाते हैं कथा अपनी भटकते हो गई देरी।।१
कोई मूरतके पूजनको बतावें होम करनेको
कोई तीरथके दर्शनको फिराते हैं सदा फेरी२

किताबें धर्मचर्चाकी हजारों बांच कर देखी
मिटा संसा नही मनका अकल जंजालमेंघेरी ३
सकल दुनियामें है पूरण सुना मैं रूप ईश्वरका
वो ब्रह्मानंद बिन देखे मिटे नही भरमना मेरी

(गजल ताल धमाल)

समझकर देखले प्यारे मोक्षका पंथ है न्यारा।
यज्ञ तप दान करनेसे स्वर्गके धामको पावे
भोगकर भोग देवनके जिमीपर होय अवतारा
कर्म की डोर से बांधा कबी नीचे कबी ऊपर
भटकता जीव जूनोंमेंफिरे नहि होय निस्तारा २
करे पूजा फिरे तीरथ अगनमें होम नित कीजे
बरत उपवास बहुतेरे नही हो ज्ञान उजियारा ३
बैठ कर संत संगत में विचारे रूप ईश्वर का
वो ब्रह्मानंदको पावे मिटे भवजाल संसारा ॥४

(गजल ताल धमाल)

दिखादेरूपईश्वरकामुझेगुरुदेवकरुणाकर ॥टेक

कोई वैकुंठके ऊपर कोई कैलास पर्वत में ।
कोई सागरके अंदरमें बतावें शेषशय्यापर ॥१
कोई दुर्गा गजाननको कहें जगदीश सूरजको
कोई सब सृष्टिका कर्ता चतुर्मुख देवपरमेश्वर २
धरें नितध्यानयोगीजनकोईनिर्गुणनिरंजनका
कोई मूरत पुजारीहैं कोई अगनीके हैं चाकर ।३
सकल संसार में पूरण कहें वेदांत के वादी
वो ब्रह्मानंद संशयकोमिटाकरतारभवसागर ४

(गजल ताल धमाल)

सुनो दिलकोलगाप्यारे रूपईश्वरकाअविनाशी
चलें जिसके सहारेसें सकल संसारके कारज
वो चेतन रूप ईश्वरका समझलेविश्वपरकाशी
वही वैकुंठके ऊपर वही कैलास पर्वत में
वही सागरके अंदरमें सदापातालकावासी २
उसीका तेज सूरज में चांदतारोंमें बिजलीमें
वही सब देवतारूपी सदानिर्गुणनिराभासी ३

वदनके बीचमें तेरे निरंतर जोत है उसकी
वो ब्रह्मानंद सुरतीकोउलटकरदेखसुखराशी ४

(गजल ताल ३)

[1] हरिको सुमर पियारे उमरा विहा रहीहै
दिनदिनघडीघडीमेंछिनछिनमेंजारहीहै ॥ टेक
दीपककीजोतजावे नदियोंकानीरधावे
जातीनजरनआवे चंचलसमारही है ॥१॥ ह०
पिछलीभलीकमाई मानुषकीदेहपाई
प्रभुहेतनालगाई विरथागमारही है ॥२॥ ह०
घरमालमीतनारी दुनयांकी मौजभारी
होवेपलकमेंन्यारीदिलकोफसारही है ॥३॥ह०
क्यानींदमेंपडाहै सिरकालआखडाहै
ब्रह्मानंददिनचडाहै रजनीबितारही है ॥४॥ह०

---

१ दिलदार यार प्यारे गलियोंमें मेरी आजा । १४ भजनतक.

(गजल ताल ३)

क्या भूलिया दिवाने दुनियांमें सारनाही
दिन चारका तमाशा आखिर करारनाही ।टेक।
राजा वजीर रानी पंडित सुवीर ज्ञानी
सबहोगयेहैं फानी जिनका शुमार नाही ॥१॥
सूरज वा चांद तारे सागर पहाड भारे
होवेंगे नाश सारे तनका अधार नाही ॥ २ ॥
दुनियांसे होय न्यारा सतसंग कर पियारा
सुन ज्ञानका विचारा नरजन्म हार नाही ॥३॥
भवसिंधु नीर भारी हरिनाम पार तारी
ब्रह्मानंद मोक्षकारी दिलसे बिसारनाही ॥४॥

(गजल ताल ३)

गाफिल तुं शोच मनमें हरिनाम क्यों बिसारा
सुनतानहीबजेहै सिरकालकानगारा ॥ टेक ॥
जोबन भरी है नारी दिलको लगे पियारी
जबमौतकीतियारी तुझसेकरेकिनारा।१।गा०

घर माल धन खजाना संगमें कोई न जाना
क्योंदेखकेलुभाना सबझूठहै पसारा ॥२॥ गा०
सुंदर है देह तेरी होवे भसम की ढेरी
पलकीलगेनदेरी बिरथाकरेबिचारा ॥३॥ गा०
मायाके जालमांही मूरख रहा फसाई
ब्रह्मानंद मोक्षपाई हरिचरणको सहारा ॥४॥

(गजल ताल ३)

ईश्वर मैं दास तेरो मुझको नही विसारो
भवसिंधुमें पडाहुं प्रभु बेग पारतारो ॥ टेक॥
तुमरी अपार माया जिन खेल यह रचाया
मनकोमेरे भुलाया नही ध्यानहैतुमारो॥१ई०
मदलोभ मोह यारी दुश्मन बडे हैं भारी
करते हैं मारमारी प्रभु दीजिये सहारो ॥२॥
अंजलीका नीर जावे उमरा सबी विहावे
फिरके गई न आवे पलका नही अधारो ॥३ ई०
सुत मात तात चेरा कोई नही है मेरा

ब्रह्मानंदबालतेरा करकेदयानिहारो ॥ ४ ॥ ई०

(गजल ताल ३)

जगदीश ईशप्यारे सुन बेनती हमारी
तुमरी शरणमे आया प्रभुलीजिये उबारी ॥ टेक
तुमने जगत बनाया सब साज से सजाया
किसुनेनभेदपाया क्याशक्तिहैतुमारी ॥ १ ज०
हम जीव सुत तुमारा तुमहो पिता हमारा
सबकातुंहीसहारा सुखरूपनिर्विकारी ॥ २ ज०
सब पाप दोष टारो हमरी मती सुधारो
सुखशांतिकोवधारो हमपेदयाबिचारी ॥ ३ ज०
हमरे कसूर भारे दिलसे बिसार सारे
ब्रह्मानंद दे हमारे भवबंधको निवारी ॥ ४ ज०

(गजल ताल ३)

ज़गदीश ईश प्यारे हिरदे में मेरे आ जा
तेरा स्वरूप पूरण मुझको प्रभु दिखा जा ॥टेक॥
तुझ नाम निर्विकारी सब पाप दोषहारी

तुमरी छवी पियारी दिल में मेरे बिठा जा १
तुं है दया निधाना सब विश्व में समाना
नित वेद गुण बखाना दर्शन मुझे दिलाजा ॥२॥
गुण हीन दीन भारी प्रभु मैं शरण तुमारी
मुझे लीजिये उबारी भव जाल से छुडा जा ३
करके दया निहारो प्रभु दास हुं तुमारो
ब्रह्मानंद बंध टारो निज रूप में मिला जा ४

(गजल ताल ३)

ईश्वर तेरी बडाई मुझसे कही न जावे
लीलाअनंतभारी प्रभुकौनपारपावे ॥ टेक ॥
गुणसिंधु तुं अपारा सब विश्वका अधारा
सबमेंसबीसेन्यारा नितवेदवाक्यगावे ॥१॥ ई०
भूमी अकाश पानी नर देव दैत्य प्राणी
रचनातेरीसुहानी तुझशक्तिकोजनावे ॥२॥ ई०
जग पाप पुण्य दोई तुझसे छिपा न कोई
पावेहैमोक्ष सोई तुझशरणमेजोआवे ॥ ३ ॥ ई०

सब झूठ जग पसारा तुझ नाम सत्य प्यारा
ब्रह्मानंद बारबारा दिलसेनहीभुलावे ॥४॥ई०

(गजल ताल ३)

ईश्वर तुं है दयालु दुख दूर कर हमारा
तेरी शरण में आया प्रभु दीजिये सहारा ॥टेक
तुं है पिता वा माता सब विश्व का विधाता
तुझ सा नही है दाता तेरा सबी पसारा ॥ १ ॥
भूमी आकाश तारे रवि चंद सिंधु भारे
तेरे हुकम में सारे सब का तुंही अधारा ॥ २ ॥
जग चक्र में चडा हुं भव सिंधु में पडा हुं
दर पे तेरे खडा हुं अब दे मुझे दिदारा ॥३॥
अपनी शरण में लीजे सब दोष दूर कीजे
ब्रह्मानंद दान दीजे तुझ नाम निर्विकारा ॥४॥

(गजल ताल ३)

ईश्वरको जान बंदे मालिक तेरा वही है
करले तुं याद दिलसे हरजांमें वो सहीहै ॥ टे०

भूमी अगन पवनमें सागर पहाड बनमें
उसकी सबी भुवनमें छाया समारही है ॥ १ ॥
उसने तुझे बनाया जग खेल है दिखाया
तुं क्यों फिरे भुलाया उमरा बितारहीहै ॥ २ ॥
विषयोंकी छोड आशा सब झूठ है तमाशा
दिन चारका दिलासा माया फसारही है ॥३॥
दुनियांसे दिल हटाले प्रभुध्यानमें लगाले
ब्रह्मानंद मोक्ष पाले तनका पता नही है ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

नजरोंसे देख प्यारे ईश्वर है पास तेरे
क्या ढूंडता है बनमें तनमें कबी न हेरे ॥ टेक ॥
पूर्वको कोई जावे पश्चिम दिशाको धावे
प्रभुका न भेदपावे बिरथा फिरे है फेरे ॥१॥ न०
भूतल आकाशमांही उसका मुकाम नाही
दुनियां रही भुलाई जाने नही है नेरे ॥ २ नज०
वो है सबी ठिकाने घटघटकी बात जाने

उसको जो दूर मानें वो मूढ हैं घनेरे ॥ ३न०
जगमें जगा न कोई ईश्वर जहां न होई
ब्रह्मानंद जान सोई सुन सत्य वाक्य मेरे ॥४न०

(गजल ताल ३)

नजरों से देख प्यारे यह क्या दिखा रहा है
सब चीज सब जगामें ईश्वर समा रहा है ॥ टेक
प्रभुनें जबी बिचारा जग का हुया पसारा
चौदें भुवन नियारा मनसे बना रहा है ॥ १ ॥
कहीं नर बना है नारी कहीं देव दैत्य भारी
पशु पक्षी रूप धारी बन बनके आरहा है ॥२॥
भूमी वही अगन है पानी वही पवन है
सूरज वही गगन है निर्गुण गुणा रहा है ॥ ३ ॥
तज भेद भाव मनमें बनमें वही है तनमें
ब्रह्मानंद ज्यों स्वपन में रचना रचा रहा है॥४॥

(गजल ताल ३)

नजरोंसें देख प्यारे क्या रूप है तुमारा

अपनेको भूल तनमें बाहिर फिरे गंवारा
करमें कंगण छिपावे ढूंडनको दूर जावे
फिरके समीप पावे मनमें करो विचारा ॥१॥
मृगनाभिमें सुगंधी सूंघे वो घास गंदी
दुनियां सबी है अंधी समझे नही इशारा ॥२॥
जिम दूधके मथनसे मिलता है घी जतनसे
तिम ध्यानकी लगनसे परब्रह्म ले निहारा॥३॥
जड जान देह सारी क्षणभंग दुःखकारी
ब्रह्मानंद निर्विकारी चेतनस्वरूप न्यारा ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

ब्रजराज आज प्यारे दर्शन दियो मुरारी
रस प्रेमका लगाके हमरी सुधी विसारी ॥ टेक ॥
सूरत तेरी कन्हाई नैननमें है समाई
हमसे सहा न जाई तुमरा वियोगभारी ॥ १ ॥
तेरे दरसकी प्यासी बनबन फिरें उदासी
चरणोंकी जान दासी मिल जा हमे बिहारी॥२॥

बंसीकी धुन सुनादे फिर रासको रचादे
मुखचंदको दिखादे सुन बेनती हमारी ॥ ३ ॥
घर माल जान प्यारी तुझपे सबी है वारी
ब्रह्मानंद मनमें धारी मोहन छबी तुमारी ॥४॥

(गजल ताल ३)

क्या सोरहा मुसाफिर बीती है रैन सारी
अब जागके चलनकी करले सबी तियारी॥टेक
तुझको है दूर जाना नही पासमें समाना
आगे नही ठिकाना होवे बडी खुवारी ॥ १ ॥
पूंजी सबी गमाई कुछ ना करी कमाई
क्या ले वतनमे जाई करजा किया है भारी २
वशमें ठगोंके आया दृढ जालमें फसाया
परदेश दिल रमाया घरकी सुधी बिसारी॥३॥
उठ चल न देर कीजे संगमें समान लीजे
ब्रह्मानंद काल छीजे मत नींदकर पियारी ॥४॥

(गजल ताल ३)

मिलजा मुझे पियारे क्यों देरियां लगाई
जलवादिखाकेअपना किसजांगयेछिपाई ।।टेक
खाना नही है पानी दिलको बडी हैरानी
फिरतीहुंमैंदिवानी दिनरैनचैननाही ।।१।।मि०
कर प्रेमका इशारा दिल लेलिया हमारा
अब क्यों मुझे बिसारा सूरत नही दिखाई ।।२।।
बिरहेकी आगभारी तनमन दिया है जारी
तुमरी छबी पियारी मनमें रही समाई ।। ३ ।।
कर माफ भूल मेरी दासनकी दास तेरी
ब्रह्मानंद कर न देरी चरणोंमे ले लगाई ।। ४ ।।

(गजल ताल ३)

सुनरी सखी मोहनकी वो बंसरी पियारी
जमुनाके तीर बनमे गायन करे मुरारी ।।टेक।।
जबसे धुनी सुनाई तनकी खबर भुलाई
मनमेबसेकन्हाई नहिचैनरैनसारी ।। १ ।। सु०

मीठी स्वरोंसे गावे दिलको मेरे सुहावे
कोई आनकेमिलावे मोहे सांवरोबिहारी ॥२सु०
तज काज लाजतनमे गोपी गई हैं बनमें
हमरहगईभवनमे किस्सतबुरीहमारी ॥३॥ सु०
मेरे नैनोंका तारा बंसी बजानेहारा
ब्रह्मानंददेदिदारा दासीहुंमैंतुमारी ॥ ४ ॥ सु०

(गजल ताल ३)

सुनरी सखी पियारी दिलका हवाल मेरा
मोहे शामसें मिलादे सुमरोंगी नाम तेरा ॥टेक
मेरे आंगनमें आया सिरपे मुकुट सुहाया
दिल देखके लुभाया मुख नंदलालकेरा ॥१॥
बनमाल गल सुहाई बंसी अधर लगाई
कैसे मिले कन्हाई मोहे प्रेम है घनेरा ॥ २ ॥
पलपलमें याद आवे नहि खानपान भावे
अखियोंसें नीर जावे बिरहेने आन घेरा ॥३॥
सुनले अरज हमारी दर्शन दियो मुरारी

ब्रह्मानंद आश भारी चरणोंमे दे बसेरा ॥४॥

(गजल कवाली)

१नाम हरी का लीना नहीं तैने
मूरख काम निकाम किया ॥ टेक ॥
बालपणो हस खेलन में
सब जोबन कामिनी संग गया
बूढे हूये तन छीन भया
तब रोग ने आय मुकाम किया ॥ १ ॥
तेरे लिये परमेश्वर ने
सब बस्तु रची बहु भांतन की
याद किया न कबी उसको
तैने खाय के माल हराम किया ॥ २ ॥
मानुष जन्म मिला तुझको
यह मोक्ष दुवार खुला जग में

---

१ प्रीतका वैदा करके सनम तैने प्रीत निभाना छोड दिया
१३ भजनतक। कोई ऐसी सखी चातुर न मिली मुझे पीके०

घर बार के कार विहारण में
तैंने भूल के नाश तमाम किया ॥ ३ ॥
काल बिताय चला सब ही
अब तो कर शोच जरा मनमें
ब्रह्मानंद बिना प्रभुके सुमरे
तैंने नाम तेरा बद् नाम किया ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

नाम लिया हरिका जिसने
तिन और का नाम लिया न लिया ॥ टेक ॥
पशु पक्षि सबी जग जीवनको जिसने अपने
सम जान सदा। सबकापरिपालननित्यकिया
तिन विप्रन दान दिया न दिया ॥ १ ॥
जिन के घर में प्रभु की चर्चा नित होवत है
दिन रात सदा। सत संगकथामृतपानकिया
तिन तीरथ नीर पिया न पिया ॥ २ ॥
जिन काम किये परमारथ के तन सें मन सें

धन सें करके। जग अंदर कीरत छाय रही
दिन चार विशेष जिया न जिया ॥ ३ ॥
गुरुके उपदेश समागम से जिस ने अपने
घट भीतरमें। ब्रह्मानंद स्वरूपको जान लिया
तिन साधन योग किया न किया ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

दीन दयाल दया करके
भवसागर से कर पार मुझे ॥ टेक ॥
नीर अपार न तीरदिसे किम धीर धरुं
अब मै मनमें। मेरी नाव डुबाय रही मग में
शरणागत जान के तार मुझे ॥ १ ॥
ग्राह बसें बलवान बडे जल घेर पडें
बहु मारगमें। बाज रही विपरीत हवा
तुंही एक बचावन हार मुझे ॥ २ ॥
छूट गया सब साथ मेरा कुछ हाथ में
जोररहाभीनही। अबनाथ न देर लगाय जरा

निज बांह पसार उबार मुझे ॥ ३ ॥
तेरा नाम जहाज बडा जगमें सब वेद पुराण
बतावत हैं । ब्रह्मानंद जपुं दिन रात सदा
प्रभु कीजिये पार किनार मुझे ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

ध्यान का वैदा कर के सजन तैंने
ध्यान लगाना छोड दिया ॥ टेक ॥
शीश तले पग ऊपर थे जब मातके पेटमें
लेट रहा । तब ईश्वर से इकरार किया
तैंने भूल के वो सब तोड दिया ॥ १ ॥ ध्यान०
देख लुभाय गया जग की रचना सब सुंदर
साज बनी । उस सर्जन हार की सार नहीं
तैंने भोगन में मन जोड दिया ॥२॥ ध्यान०
घर काजन बीच फसाय रहा दिन रात न
मौतकी याद रही । उमरासबबीततजायचली
तैंने क्यों प्रभुसें मुखमोड दिया ॥३॥ ध्यान०

बार ही बार फिरा जग भीतर जीवन की सब जूनन में । ब्रह्मानंद भजा भगवंत नही भव सागर में सिर बोड दिया ॥४॥ ध्यान०

(गजल कबाली)

विश्वपति जगदीश्वर तुं शरणागत पालन कारण है ॥ टेक ॥

तेरी रची सब है रचना गिरि सागर सूरजचांद मही । सब जीव तेरा परिवार बसा तुंही एक चराचर धारण है ॥ १ ॥

सब भीतर बाहिर में जग में परि पूरण तुं सुखरूप सदा । नही पामरलोक पिछान सकें तेरा नाम सबी दुख हारण है ॥ २ ॥

करुणा निधि दीन दयाल सदा प्रतिपाल करे सब जीवन की । तुझ ध्यान धरे नर जो मनमें पल में भव सागर तारण है ॥३॥

मुझ दोष अपार निहार नही निजदास

विचार करो करुणा । ब्रह्मानंद पडा तुझ चरणनमें प्रभु कीजिये बंध निवारण है ॥४॥

(गजल कवाली)

हेरी सखी बतलाय मुझे
पिंया के मन भावनकी बतियां ॥ टेक ॥
गुणहीन मलीन शरीर मेरा कछु हार सिंगार किया भी नही । नहिजानुं मैं प्रेमकीबात कोई मेरी कांपत है डरसे छतियां ॥ १ ॥ हेरी०
पिया अंदर मेहल विराज रहे घर काजन में अटकाय रही । नहि एक घडीपल संग किया विरथा सब बीत गई रतियां ॥ २ ॥ हेरी०
पियासोवतऊंचीअॅटारिनमेंजहांजीव परिंदकी गंम नही । किस मारग होयके जाय मिलुं किसभांत बनाय लिखुं पतियां ॥ ३ ॥ हेरी०
निज स्वारथका संसार सबी किससे अब प्रीत

१ परमात्मा. २ हृदयकमल. ३ उमरा. ४ ब्रह्मरंध्र.

करूं मनमें । ब्रह्मानंद पिया हितकार मेरा जग भीतर और नही गतियां ॥ ४ ॥ हेरी०

(गजल कवाली)

हेरी सखी चल ले चल तुं अब देश पिया का दिखाय मुझे ॥ टेक ॥

ढूंडत ढूंडतढूंड फिरीसब जंगल झाड पहाडन में। कोई ऐसा न राहनजीर मिला पिया के ढिग देत पुगाय मुझे ॥ १ ॥ हेरी०

उस देस के मैं बलिहार गई जहां मोर पिया नित वास करे । सिर धूल धरूं उस के पगकी जोई जाय के आज मिलाय मुझे ॥२॥ हेरी०

मछली बिन नीर न धीर धरे जिमचातक मेघ निहारत है । अबतो पिया दर्शन दे अपना किस काज रहे तरसाय मुझे ॥ ३ ॥ हेरी०

पिया की छबी सुंदर देख सखी जहां सूरज चांद लजाय रहे। ब्रह्मानंद मैं दामन गीर तेरी

पिया चरणन में लिपटाय मुझे ॥ ४ ॥ हेरी०

(गजल कवाली)

देदे पिया दर्शन तो मुझे
मैं तो शरण तुमारी आय पडी ॥ टेक ॥
मात पिता घर बार तजा तेरे काज मेरी
सब लाज गई । मैं तो छोडके आश सबी जगकी
तेरे द्वार पे ध्यान लगाय खडी ॥ १ ॥
सब जोबन के दिन बीत गये अब मैं मन में
पछताय रही । करुणा कर अंग लगाय मुझे
तेरे संग विना नही चैन घडी ॥ २ ॥
मेरे जैसी अनेक खडी दर पे तेरे दर्शन को
तरसाय रही । तेरी जान के दासन दास मुझे
मेरी पूरण कीजिये आश बडी ॥ ३ ॥
कर माफ कसूर मेरे सब ही अब देख दया की
नजर से मुझे । ब्रह्मानंद तेरी सुख धाम छबी
प्रभु नित्य मेरे दिल बीच जडी ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

ऐसी करी गुरु देव दया मेरा
मोह का बंधन तोड दिया ॥ टेक ॥
दौड रहा दिन रात सदा जग के सब कार
विहारण में । स्वप्नें सम विश्व दिखाय मुझे
मेरे चंचल चित्त को मोड दिया ॥ १ ॥
कोई शेष गणेश महेश रटे कोई पूजत पीर
पगंबर को । सब पंथ गरंथ छुडा कर के
इक ईश्वर में मन जोड दिया ॥ २ ॥
कोई ढूंडत है मथुरा नगरी कोई जाय बनारस
वास करे । जब व्यापक रूप पिछान लिया
सब भर्मका भंडा फोड दिया ॥ ३ ॥
कौन करूं गुरु देव की भेट न वस्तु दिसे तिहुं
लोकन में । ब्रह्मानंद समान न होय कबी
धन माणिक लाख करोड दिया ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

जाग मुसाफिर देख जरा
वो तो कूच की नौबत बाज रही ॥ टेक ॥
सोवत सोवत बीत गई सब रात तुझे
परभात भई। सब संग के साथी तो लाद गये
तेरे नैनन नींद विराज रही ॥ १ ॥
कोई आजगया कोई कालगया कोईजावनकाज
तियार खडा। नहि कायम कोई मुकाम यहां
चिरकाल से येही रिवाज रही ॥ २ ॥
इस देशमे चोर चकोर घने निज मालकी राख
संभाल सदा। बहुते हुशियार लुटाय गये
नहि कोई की साबत लाज रही ॥ ३ ॥
अब तो तज आलस को मन से कर संग समान
तियार सबी। ब्रह्मानंद न देर लगाय जरा
बिजली सिर ऊपर गाज रही ॥ ४ ॥

(गजल कबाली)

मान कही मन मूरख तुं
अब तो भज नाम निरंजन का ॥ टेक ॥
जून अनेकन में फिरते फिरते यह मानुष
देह मिली । कर ले परमारथ काम कछु
तज लालच तुं धन संचन का ॥ १ ॥
पेट हि में जब पेट भरा अब पेट के काज
कहां भटके । सब विश्व को नित्य भरे प्रभु जो
सोई पालन हार तेरे तन का ॥ २ ॥
मात पिता सुत दार सहोदर माल मकान
समान सबी । कोई बस्तु नही थिर है जगमें
बिरथा ममता मद जोबन का ॥ ३ ॥
काल कराल फिरे सिर पे जिम बाज चिडी पर
धावत है । ब्रह्मानंद बिचार निहार जरा
कर ध्यान सदा भय भंजन का ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

चालो सखी बिंद्रावन में
वो तो बंसरी शाम बजावत है ॥ टेक ॥
धर्म के पालन कारण से हरि ने व्रज में
अवतार लिया। मिल ग्वालन बालन के संगमें
जमुनातट धेनु चरावत है ॥ १ ॥
सिर मोरके पांख की टोप धरे मकराकृत कुंडल
कानन में। गलमें बनमाल विराज रही
कटि में पट पीत सुहावत है ॥ २ ॥
बन कुंजनमें हरि रास रची सखियां संगमें मिल
गान करे। भाग्य बडे ब्रज गोपिन के
हरि हाथ मिलाय नचावत है ॥ ३ ॥
मधुरी मुरलीधुनको सुनके सब देव समाज जुडे
नभ में। ब्रह्मानंद निहार छबी प्रभुकी
अपने मन में सुख पावत है ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

प्रीत की रीत न जाने सखी वो तो नंद
को बालक सांवरिया ॥ टेक ॥
जमुना तट जाय के गाय चराय बजाय
के बंसरी गावत है । सखियां संग केली
कलोल करे दधि लूटत खेलत फागरिया ॥१
संग लेकर ग्वालन बाल घने मग रोकत
है ब्रज नारिनको । तनसे चुनरी पटको झटके
सिर से पटके जल गागरिया ॥ २ ॥
बिंदरावन की घन कुंजन में मिल गोपिनके
संग रास करे । पगनूपरकी धुनबाज रही
नित नाचत है नट नागरिया ॥ ३ ॥
निज भक्तन के हितकार प्रभु ब्रज मंडल
बीच विहार करे । ब्रह्मानंद न रूपको जान
सकें बहु बात बनावत बावरिया ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

पूरण ब्रह्म सनातन तुं महादेव सदा
शिव शंकर है ॥ टेक ॥

अंग विभूति विराज रही नित संग बसे
गिरि राज सुता । सिर ऊपर गंग तरंग चले
गल बीच भुजंग विषं कर है ॥ १ ॥ पूरण०

चंद्र कला शुभ मस्तक में दृग तीन मनोहर
जूट जटा । कटि में मृग चर्म सुहाय रहा
कर बीच त्रिशूल भयं कर है ॥ २ ॥ पूरण०

कैलास के बीच निवास करे गण यूथ निरंतर
साथ रहें । मुनि ध्यान धरें मन बीच सदा
सुर वृंद सबी पद किंकर है ॥ ३ ॥ पूरण०

गुणखान विमोक्ष निधान सदा शरणागत जान
दया करके । ब्रह्मानंद करो प्रभु दान मुझे
तेरा नाम अपार सुखं कर है ॥४॥ पूरण०

(गजल कवाली)

आशक मस्त फकीर हूया जब क्या
दिलगीरपणा मन में । टेक ।
कोई पूजत फूलन मालन से सब अंग सुगंध
लगावत हैं । कोई लोक निरादर कार करें
मग धूल उडावत हैं तन में । १ । आशक०
कोई काल मनोहर थालन में रस दायक
मिष्ट पदारथ हैं । किस रोज जला सुकडा
टुकडा मिल जाय चबीना भोजन में २ आशक०
कबी ओढत शाल दुशालन को सुख सोवत
महल अटारिनमें । कबी चीर फटीतन गूदडिया
नित लेटत जंगल वा बनमें । ३ । आशक०
सब द्वैत के भाव को दूर किया पर ब्रह्म सबी
घट पूरण है । ब्रह्मानंद न वैर न प्रीत कहीं
जग में विचरे सम दर्शन में । ४ । आशक०

(राग प्रभाति ताल दादरा)

[1]जय जय जगदीश ईश शरण मैं तुमारी ।।टेक।।
ब्रह्मा वेद वचन रटत शंभू सदा ध्यान धरत
सुर नर मुनि गान करत महिमा अति भारी १
स्वर्ग भू पताललोक चंद्र सूर यथायोग
नानाविध पानभोग रचिया नरनारी ।। २ ।।
माया तुमरी दुरंत मोहे सब जीव जंत
जतन करत साधुसंत उतरे कोई पारी ।। ३ ।।
तुमरी जो शरण आय जनम मरण छूट जाय
ब्रह्मानंद धाम पाय निर्मल सुखकारी ।। ४ ।।

(प्रभाती ताल दादरा)

भज रे नर रामचरण निश दिन सुखदाई ।।टेक
नर तन यह वारवार जगमें नहि मिलनहार
कोई दिनकी बहार पीछे पछताई ।। १ ।।
नारी सुत मात तात चार दिवसकी जमात

---

१ ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पाजनिया ८ तक.

कोई नही संग जात नरकमें सहाई ॥ २ ॥
धनका क्या करत मान पंकज जल लव समान
करले कुछ करसें दान बहत नदी जाई ॥ ३ ॥
वारवार रामनाम भजले तज सकल काम
ब्रह्मानंद परम धाम अंतकाल पाई ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई ॥ टेक
राजा रानी वजीर पंडित ज्ञानी सुधीर
बडे बडे शूर वीर धरणिमें समाई ॥१॥ राम०
ब्रह्मादिक देव वृन्द तारागण सूर चंद
सागर पर्वत बुलंद सबन काल खाई ॥ २ ॥
सेना गढ राज पाट वाजी गजराज ठाठ
नारी घर बार हाट छूटें पलमांही ॥३॥ राम०
झूठे सब कारबार जगमें हरि नाम सार
ब्रह्मानंद बारबार जप ले मनलाई ॥४॥ राम०

(प्रभाती ताल दादरा)

आज सखी शामसुंदर बंसिया बजावे ॥ टेक ॥
मोरमुकुट सिर चडाय पगमें नूपुर सुहाय
बंसी मुखमें लगाय मधुर मधुर गावे ॥ १ ॥
यमुनाको रुकत वार पक्षीगणमौनधार
धेनु मुख घास डार धुनिमें मन लावे ॥ २ ॥
ब्रह्मा सुरराज शेष शंकर गौरी गणेश
धार धार मनुजवेष बृंदावन आवे ॥ ३ ॥
बंसीधुन सुन अपार भूले मुनि मन बिचार
ब्रह्मानंद गोप नार तनमन बिसरावे ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

आज सखी शाम सुंदर रास है रचाई ॥ टेक
बंसीकी सुन अवाज तजके घर कामकाज
गोपी मिलके समाज बृंदावन जाई ॥ १ ॥
संग लिये ग्वालबाल नाच करत नंदलाल
गावत स्वर संग ताल सुंदर सुखदाई ।२। आ०

हरिका सुन मधुर गान आये सुर चड विमान
दर्शन कर मोदमान होवें मनमांही ।।३।। आ०
सब जगके करणहार कीनो ब्रजवन विहार
ब्रह्मानंद वारवार चरण शीश नाई ।।४।। आ०

(प्रभाती ताल दादरा)

हेरी सखी आज मुझे शाम से मिलाय दे । टेक।
मोरमुकुट शीश धरे मकर कुंडल कान पडे ॥
पीत वसन मंद हसन मधुर मधुर गाय दे ॥१
जमुना को विमल नीर नंद लाल खडो तीर
बंसरी की टेर एक बेर तो सुनाय दे ॥ २ ॥
गहन विपन लता पुंज चांद चांदनी निकुंज
गोप नार संग रंग रास तो रचाय दे ॥ ३ ॥
नाच करत मंद मंद गगन खडे देववृंद
ब्रह्मानंद चंद वदन नैनसे दिखाय दे ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

देख सखी कृष्ण चंद्र की छबी सुहावनी ॥ टेक

सिरपेमुकट अलक भाल श्रवणकुंडल दृग रसाल
गल में माल भुज बिशाल पीत पट धरावनी १
बाजुबंद कंगण हाथ कमर मणी तिलक माथ
बंसी अधर मधुर मधुर सरस राग गावनी २
चंद वदन मंद हास सखियन संग करत रास
पग में छनन छनन नूपरों की धुन बजावनी ३
सजल मेघ शाम रंग संग राधिका उमंग
ब्रह्मानंद श्रीमुकुंद चरण रति लगावनी ॥४॥

(प्रभाती ताल दादरा)

आज मेरी लाज हरि आय के बचाईये ॥ टेक
कौरवों की सभा बीच जुडे सबी लोक नीच
खींच रहे केश मेरे बेग सें छुडाईये ॥ १ ॥
पति हमारे शूर बीर धर्म हेत धरे धीर
चीर हरण करत दुष्ट देर ना लगाईये ॥२॥
भीष्म द्रोण कर्ण वर्म[1] लोभ हेत तजा धर्म

१ कृतवर्मा.

कर्म बुरा करैं नाथ हाथ दे रखाईये ॥ ३ ॥
सकल जगत के अधार प्रभु मेरी सुन पुकार
ब्रह्मानंद हो सवार गरुड पे सिधाईये ॥ ४ ॥

(शाम कल्याण ताल दादरा)

आज मेरी बेनती दीन बंधु सुन जरा । टेक ।
सकल जगत के अधार निर्गुण नित निर्विकार
जनम मरण ताप हार परम सुख करा ॥ १ ॥
चौदें भुवन में समान पूरण सब गुण निधान
ऋषि मुनि गण धरत ध्यान सकल भय हरा२
महिमा तुमरी अपार वेद रटत वार वार
पावत नही परम पार कोई सुर नरा ॥ ३ ॥
नाथ मेरी अरज मान दीजे अपनी भक्ति दान
ब्रह्मानंद तेरो जान चरण किंकरा ॥ ४ ॥

(शाम कल्याण ताल दादरा)

आज मेरी बेनती दीन बंधु मान ले । टेक ।
भाई बंधु मीत नार चार दिवस का सहार

तुमरेचरणकाअधार एकमुझेजान ले।१।आज०
कोई जपत श्री गणेश कोई रटत है महेश
मैंतोतेरोहुंहमेश दास निजपिछान ले।२।आज०
मोह नदी जल अपार डूब रहा बीच धार
अबतो दया कर किनार बांह पकड तान ले।३।
सकल पाप दोष हरण परम धाम मोक्ष करण
ब्रह्मानंद अपनी शरण में दया निधानले।४।

(शाम कल्याण ताल दादरा)

आज मुझे आयके नाथ दरस दीजिये। टेक।
शीशमुकटतिलकभाल श्रवणकुंडलदृगविशाल
कंठ में वेजंती माल नयन सफल कीजिये।१।
सजल मेघ शाम रंग पीत वसन लसित अंग।
रमा वसत सदा संग शरण अपनी लीजिये २
शंख चक्र गदा धार कमर मेखला विहार
गरुड पीठ पे सवार दास जान रीझिये।३।
चंद्र वदन मंद हास शेष नाग तन निवास

ब्रह्मानंद मेरी आश दया कर पुरीजिये । ४।

(शाम कल्याण ताल दादरा)

राम नाम सुमर ले उमर बीत जा रही ।टेक।
अंजलि जल न थिर रहाय बूंद बूंद टपक जाय
पलक पलक में विहाय सब समा रही ॥१॥
अब तो चेत रे गवार सिर पे काल है सवार
झूठ जगत कार बार में गमा रही ॥ २ ॥
धन शरीर महल माल बिछड जात अंतकाल
माया मोह विषय जाल दृढ फसा रही ॥३॥
तीरथ बरत पुण्य दान तुलें न नाम के समान
ब्रह्मानंद वचन मान क्यों भुला रही ॥ ४ ॥

(शाम कल्याण ताल दादरा)

आज सखी कुंज में रास रचत है हरी ।टेक।
जमुनासरितविमल नीर हरितघासपुलिन तीर
चलत मधुर गति समीर परम सुख करी ॥१॥
सिर पे मोर मुकट धार गल में पहन फूल हार

मुरली अधर धुन विहार चरण नूपरी ॥ २ ॥
मिल के ग्वाल बाल संग करत सरस नाच रंग
गोप नार मन उमंग प्रेम रस भरी ॥ ३ ॥
बजत घन मृदंग ताल गान करत नंद लाल
ब्रह्मानंद प्रणत पाल छबी मनोहरी ॥ ४ ॥

(भजन राग देस)

श्रीकृष्ण नाम सार ऊधो कठिन योग है। टेक
आसन मूल बंध तान प्राण पवन कर समान
कैसे धरें ध्यान सबी तज के भोग है।१। श्री०
शीश मुकट कुंडल कान बंसी अधर मधुर गान
हम से सहन होय नही वो वियोग है।२। श्री०
कलिमें केवल हरिकानाम लेतमिलत मोक्ष धाम
मन में सदा जपत मुनी सिद्ध लोग है।३। श्री०
बरत नेम यज्ञ दान कोई न नाम के समान

---

१ वैराग योग कठिन ऊधो हमी न करबहो ४.

ब्रह्मानंद हरण जन्म मरण रोग है ।।४।। श्री०

(भजन राग देस)

श्रीरामनाम सुमर उमर बीत जात है ।। टेक ।।
जोबन धन शरीर माल सबका नाश करत काल
जग में कोई वस्तु नही थिर रहात है ।१। श्री०
भाई बंधु नार मीत स्वारथ हेत करत प्रीत
मरण काल में न कोई काम आत है ।२। श्री०
लोक विभव राज्य पाट गज तुरंग महल हाट
निकस जांय प्राण जबी सब बिलात है ।३। श्री०
जगत झूठ जान जान धरो प्रभु ध्यान ध्यान
ब्रह्मानंद मान मान हमरी बात है ।।४।। श्री०

(भजन राग देस)

देख सखी बन को चले आज राम है ।। टेक ।।
दशरथ के कुंवर बाल कोमल तन भुज विशाल
जनक सुता संग जात अंग वाम है ।१। देख०
जटा जूट सोहे माथ धनुष बाण धरे हाथ

पीत वसन कमर बीच मुंज दाम है ।२। देख०
भूपति वर दिया दान धर्म हेत तजे प्राण
केकई नादान किया कठिन काम है ।३। दे०
भूमी के भार हरण आये सुर काज करण
ब्रह्मानंदकंद चरण मोक्ष धाम है ।।४।। देख०

(भजन राग देस)

जगदीश सकल जगत का तुम ही अधार है। टेक
भूमी नीर अगन पवन सूरज चांद शैल गगन
तेरा किया चौदें भुवन का पसार है।१। जग०
सुर नर पशु जीव जंत जल थल चर हैं अनंत
तेरी रचना का नही अंत पार है ।।२।। जग०
करुणा निधि विश्व भरण शरणागत ताप हरण
सत चित सुख रूप सदा निर्विकार है।३।जग०
निर्गुण सब गुण निधान निगमागम करत गान
ब्रह्मानंद नमन करत वार वार है ।।४।।जग०

(राग पीलु ताल ३)

सुनो आज जगदीश बिनती हमारी
पडाहुं शरण बीच आकर तुमारी ॥ टेक ॥
माता तुंही है पिता तुं हमारा
विधाता जगत का तुंही है सहारा
सबी जग मे पूरण है सब से नियारा
निगम नेति नेति से महिमा उचारी ॥ १ ॥
मनुज तन को पाकर जगत बीच आया
तेरी देख रचना को मनुवा लुभाया
कुटुंब जाल बंधन में गहरा फसाया
दया कर निकालो प्रभु निर्विकारी ॥२॥ सु०
दुनियां की लालच में तुझ को बिसारा
सबी वक्त विषयों में बिरथा गुजारा
बहा जा रहा हुं न सूझे किनारा

---

१ इस तन धनकी है कवन बडाई
देखत नैन चल्यो जगजाई ५ भजनतक.

मुझे मोह सागर सें लीजे उबारी ॥ ३ ॥ सु०
अवगुण हजारों न मेरे बिचारो
मुझे अब दया की नजर से निहारो
समझ दास अपनो न दिल से बिसारो
ब्रह्मानंद चरणकमल बलिहारी ॥ ४ ॥ सुनो०

(राग पीलु ताल ३)

प्रभु आज चरणोंमें आयो तुमारे
दया कर सबी दोष हरिये हमारे ॥ टेक ॥
नही जानुं ध्यान न योग न अरचा
नही सतसंग न ज्ञान की चरचा
केवल नाम तुमारे का परचा
मुझ को सदा जगदीश पियारे ॥ १ ॥ प्रभु०
काम क्रोध मद लालच भारी
झूठ कपट छल पाप विकारी
दुस्तर मायाने जाल पसारी
तुमरे विना कौन बंधन टारे ॥ २ ॥ प्रभु०

तुम सब के पालक हो घट घट वासी
भुवन चतुरदश विश्व बिलासी
चांद सूरज सब जग परकाशी
सब ही जीवन के हो नित हित कारे ॥३॥ प्र०
सुत पितु मात बंधु अरु भाई
अंत समे कोई संग में न जाई
मेरे तो तुमही हो परम सहाई
ब्रह्मानंद राखिये अपने सहारे ॥ ४ ॥ प्रभु०

(राग पीलु ताल ३)

अेरी सखी बलहारी तुमरियां
चल के बता मुझे पिया की नगरियां ॥ टेक ॥
पियाके विना मुझे चैन न आवे
काम काज घर के न सुहावे
रात दिवस मेरा जिया तरसावे
कौन कहे मेरी जा के खबरियां ॥१॥ अेरी०
दूर शिखर पर पिया की अटारी

मारग कठिन विघन बहु भारी
किस विध जावुं मैं अवगुण हारी
करुणा करो प्रभु फेर नजरियां ॥ २ ॥ ऐरी०
भाग्यवती पिया संगमें सहेली
निश दिन करत मनोहर केली
गुण विहीन जग फिरुं मैं अकेली
कैसे रहे अब लाज हमरियां ॥ ३ ॥ ऐरी०
अब तो क्षमा कर भूल हमारी
मैं दासन की हुं दासी तुमारी
दे दर्शन मोहे सब सुखकारी
ब्रह्मानंद चरणनमें चित्त धरियां ॥ ४ ॥ ऐरी०

(राग पीलु ताल ३)

नाम हरीका सुमर ले रे प्राणी
सब ही उमर तेरी जाय विहानी ॥ टेक ॥
काल की गती पल पल चल जावे
पवन वेग जिम थिर न रहावे

बीत गया दिन फिर के न आवे
टपक जात जैसे अंजलि को पानी ॥१॥ नाम०
रुद्र पुरंदर रवि शशि तारे
शूर बीर नर भूपति भारे
काल बलीने सब ही संहारे
मानुष तनकी है कवन कहानी ॥२॥ नाम०
राज पाट धन लाख हजारी
सुंदर महल मनोहर नारी
गज रथ वाजि संपदा भारी
पलक बीच सब होय बिगानी ॥३॥ नाम०
जप तप योग जतन बहु भारे
क्षणभंगुर तन बनत न सारे
प्रभु का ध्यान करो नित प्यारे
ब्रह्मानंद येहीहै मोक्षनिशानी ॥ ४ ॥ नाम०

(राग पीलु ताल ३)

सुनरी सखी मेरे दिल की कहानी

शाम सुंदर छबी मन में समानी ॥ टेक ॥
मोर मुकुट सिर ऊपर राजे
बनमाला गल बीच विराजे
देख स्वरूप मदन मन लाजे
सुंदर बदन मनोहर बानी ॥ १ ॥ सुनरी०
मकर कुंडल कानन में सुहावे
मस्तक तिलक अलक मन भावे
मधुर मधुर धुन मुरली बजावे
सुन कर तन मन सुध बिसरानी ॥२॥ सुन०
पीत वसन पग नूपर धारी
कमर मणी अति शोभत भारी
मंद हसन मोहे लगत पियारी
ध्यान धरत सुर नर मुनि ज्ञानी ॥३॥ सुन०
धर्म हेत हरि व्रज अवतरिया
दैत्यदलन कर सब दुख हरिया
भाग्य बडे जिन दर्शन करिया

ब्रह्मानंद सहज परमपददानी ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

दिखा[1] दे नजर से वो जलवा तुमारा
जुदाई का पडदा करो दूर प्यारा । टेक ।
तेरी खूब सूरत है शकले जिमी पे
तुंही स्वर्ग परियों का सुंदर नजारा ॥ १ ॥
करुं क्या बडाई मैं तेरे हुसन की
लजाते हैं सूरज वा चंदर सितारा ॥ २ ॥
करे कौन तेरे गुणों का निरूपण
कितावें कवीश्वर मुनीश्वर भी हारा ॥ ३ ॥
सुनो मेरी बिनती को दिल से दया कर
ब्रह्मानंद चरणों में दीजे सहारा ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

प्रभु मेरे दिल में सदा याद आना

---

१ किसी मस्तके आनेकी आरजू है
बिया साकिया सागरे मुशकबू है

दया करके दर्शन तुमारा दिलाना । टेक ।
सदा जान कर दास अपने चरण का
मुझे दीन बंधु न दिल सें भुलाना ॥ १ ॥
सबी दोष जन्मों के मेरे हजारों
क्षमा कर के अपने चरण में लगाना ॥ २ ॥
किया काम कोई न तेरी खुशी का
अपना बिरद देख मुझ को निभाना ॥ ३ ॥
फसाया हुं माया के चँकर में गहरा
ब्रह्मानंद बंधन सें मुझ को छुडाना ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

देखो नजर सें वो जाती उमरिया
कबी हाथ में फिर न आती गुजरिया । टेक ।
दिन दिन घडी पल में छिन छिन में जावे
जैसे नदी बेग पानी लहरिया ॥ १ ॥
क्या सो रहा है बे फिकरी से गाफिल
फिरे काल की तेरे सिर पे चकरिया ॥ २ ॥

मानुष की देही को दुनियां में पा कर
बिरथा न खोवो रतन की पिटरिया ॥ ३ ॥
सुमरो सदा नाम दिल सें निरंजन
ब्रह्मानंद सब भव बंधन हरिया ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

मानुष जनम फिर के आना नही है
बिना ज्ञानके मोक्ष पाना नही है । टेक ।
मिले ज्ञान मारग न कबहुं जगत में
अगर संत संगत में जाना नही है ॥ १ ॥
सबी विश्व में एक ईश्वर समाया
अज्ञान कारण पिछाना नही है ॥ २ ॥
स्वपने की माया यह रचना है सारी
कोई बस्तु कायम रहाना नही है ॥ ३ ॥
संसार विषयों में फिरता भुलाया
ब्रह्मानंद निज रूप जाना नही है ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

बिना कृष्ण दर्शन के शांती नही है
ऊधो ज्ञान चरचा सुहाती नही है । टेक ।
क्या तुम सुनाते हो निर्गुण कहानी
हमारी समझ बीच आती नही है ॥ १ ॥
बसी दिल के अंदर में मोहन की मूरत
घडी पल कबी दूर जाती नही है ॥ २ ॥
नही योग साधन की हम को जरूरत
बिना प्रेम की बात भाती नही है ॥ ३ ॥
जपें नाम माधव का हम तो निरंतर
ब्रह्मानंद दिल सें भुलाती नही हैं ॥ ४ ॥

(भजन राग पीलु चलित)

जय जय जय जगदीश्वर प्यारा
विश्व चराचर सर्जन हारा ॥ टेक ॥
अचरज भारी रचना सारी
भुवन चतुर दश न्यारा न्यारा ॥ १ ॥ जय०

रवि शशि तारे गिरिवर भारे
सरवर सागर नीर अपारा ॥ २ ॥ जय०
सुर नर नारी जल थल चारी
तुम सब जीवन का रख वारा ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद दयाल दयाकर
कीजिये भव भय दूर हमारा ॥ ४ ॥ जय०

(राग पीलु चलित)

सुन सुन सुन प्रभु विनती हमरिया
शरण पडे हम आय तुमरिया ॥ टेक ॥
भव भय हारी सब सुख कारी
ऋषि मुनि गण तुझ नाम सुमरिया ॥ १ ॥
दया निधाना सब सुख खाना
सकल जगत निश दिन हित करिया ॥ २ ॥
घट घट गामी अंतर यामी
सुर नर पशु जग जीवन भरिया ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद शरण में तेरी

जन्म मरण सब संकट हरिया ॥ ४ ॥ सुन०

(राग पीलु चलित)

प्रभु प्रभु प्रभु मैं दास तुमारो
मुझे न अपने दिल सें बिसारो ॥ टेक ॥
भव जल धारा दुस्तर पारा
डूब रहा हुं पार उतारो ॥ १ ॥ प्रभु०
परम कृपाला दीन दयाला
करुणा कर निज नैन निहारो ॥ २ ॥ प्रभु०
क्षमा करीजे दर्शन दीजे
मेरे अवगुण लाख हजारों ॥ ३ ॥ प्रभु०
ब्रह्मानंद चरण को चेरो
दीन जान भव बंध निवारो ॥ ४ ॥ प्रभु०

(राग पीलु चलित)

हरि हरि हरि नित नाम सुमरणा
भव सागर जल पार उतरणा ॥ टेक ॥
बिन हरि सुमरे कबहुं न उबरे

पुन पुन पुन जग जीवन मरणा ॥१॥ हरि०
जो जन ध्यावे पर पद पावे
सुंदरवदन मनोहर चरणा ॥ २ ॥ हरि०
पल में सारे पाप निवारे
सकल मनोरथ पूरण करणा ॥ ३ ॥ हरि०
ब्रह्मानंद दया के सागर
भक्त जनों के सब दुख हरणा ॥ ४ ॥ हरि०

(राग पीलु चलित)

चल चल चल सखी देस हमारे
वास करे जहां प्रीतम प्यारे ॥ टेक ॥
बिन घन गाजे अनहद बाजे
घंटा शंख मृदंग नगारे ॥ १ ॥ चल०
बिजली चमके अमृत टपके
पुन पुन झलकत रवि शशि तारे ॥ २ ॥ च०
बिन जल थल में गगन महल में
सुंदर सेज बिछी रतनारे ॥ ३ ॥ चल०

ब्रह्मानंद निरख छबि निर्गुण
तेज पुंज मय परम उजारे ॥ ४ ॥ चल०

(राग बरहंस अथवा आशावरी ताल धमाल)

अहो प्रभु अचरज माया तुमारी
जिस मोहे सकल नर नारी ॥ टेक ॥
ब्रह्मा मोहे शंकर मोहे मोहे इन्द्र बलकारी
सनकादिकनारदमुनिमोहेदुनियांकौनबिचारी
योग करंते योगी मोहे बन में मोहे तपधारी
वेद पढंते पंडित मोहे भूल गये सुधि सारी२
पांचविषयकी जाल बिछाई बंधनरचिया भारी
लालचसें सबजीवफसाये निकलनकीनहिबारी
जिसपर किरपा होय तुमारी सो जन उतरे पारी
ब्रह्मानंद शरण में आयो लीजिये मोहे उबारी ४

(राग आशावरी ताल धमाल)

प्रभु इक नाम तेरा सुखकारी
सब दुनियां परम दुखारी ॥ टेक ॥

गर्भवास में उलटे तनसे नौ दस मास गुजारी
बाहिर आयपडापृथिवीपर मायालिपटीतुमारी
बालपणे में पराधीन नित माता गोद खिलारी
सुखदुखसबहीव्यापततनमें बचनसकेनउचारी
जोबन में नित काम सतावे मोह लियो मननारी
बालबचोंके पालनकेहितपरघरदास भिखारी३
वृद्धपणे में रोग लगे सब काया निर्बल हारी
ब्रह्मानंद भजनबिनतुमरे जन्ममरणभय भारी४

(राग आशावरी ताल धमाल)

प्रभु तेरी महिमा किस विध गावुं
तेरो अंत कहीं नहीं पावुं ॥ टेक ॥
अलखनिरंजनरूपतुमारोकिसविधध्यानलगावुं
वेदपारअजहुंनहिपायो मैं कैसे बतलावुं ॥१॥
गंगा यमुना नीरबहाये मज्जन किम करवावुं
वृक्ष बगीचे रचना तेरी कैसे पुष्प चढावुं ॥ २
पांच भूतकी देह न तुमरी चंदनकिमलिपटावुं

सकलजगतकेपालनकर्ता किसविधभोगलगावुं
हाथ जोड कर अरज करूं मैं बार बारशिरनावुं
ब्रह्मानंद मिटादे पडदा घटघट दर्शन पावुं ४

(राग आशावरी ताल धमाल)

प्रभु तेरी महिमा कौन बखाने
जां को ब्रह्मादिक नहीं जाने ॥ टेक ॥
तुं सर्वज्ञ चराचर पूरण व्यापक सबी ठिकाने
घट घट भीतर जोत तुमारी ढूंडत दूर दिवाने। १
कैसे देह रची है तुमने किस विध प्राण चलाने
जीव कहां सें आवे जावे कोई सके न पिछाने २
सूरज चांद सितारे पर्वत नदियां नीर बहाने
भुवनचतुरदशरचनातेरी तुझमेंसकलसमाने ३
तेरी शरण पडे जो प्राणी मोक्ष धाम पहुंचाने
ब्रह्मानंद बिना तुझ सुमरण जन्म जन्म भटकाने

(राग आशावरी ताल धमाल)

प्रभु तेरी महिमा परम अपारा

जां को मिलत नहीं कोई पारा ॥ टेक ॥
सकलजगत को आपरचावे सबका पालन कारा
अंदरबाहिरसबघटपूरण सबसेंनिशदिनन्यारा १
कैसे सूरज गर्म बनाया शीतल चांद उजारा
जुदाजुदानितनभकेमांही कैसे चमकत तारा २
ऊंचे ऊंचे पर्वत कीने सरिता निर्मल धारा
कैसे भूमी अचल निरंतर क्यों सागर जलखारा
किसविधबीजबनेबिरछनके नानाभांतहजारा
ब्रह्मानंद अंतनहीं आवे सुर नर मुनिगणहारा ४

(राग आशावरी ताल धमाल)

रे मनुवा क्यों जगमें लिपटायो
तेरो कोई नही है सहायो ॥ टेक ॥
यह संसारस्वपनकी माया बिरथा भरमभुलायो
क्षणभंगुरसबवस्तुविनाशी प्रीतलगापछतायो १
विषया रस मृगतृष्णापानी देखदेखकरधायो
कबहुं प्यासमिटेनहितेरी जनमजनमभटकायो

जोप्रभुनित्यसहायक तेरो तिसकोक्योंविसरायो
सकलव्यापकअंतरयामी जिनसबजगउपजायो
तेरी मेरी करते निश दिन सबहीजन्मबितायो
ब्रह्मानंद ध्यानकर प्रभुका जोचाहेसुखपायो

(राग आशावरी ताल धमाल)

अहो प्रभु काल बडो बल कारी
जांको भोजन है नर नारी ॥ टेक ॥ अहो प्रभु०
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र गण खाये खाये दैत्य हजारी
बडे बडे पृथवी के राजा खाये जिम तरकारी॥१
सूरज चांद सितारे नदियां सागर पर्वत भारी
कालचकरमें सबपिसजावें अपनी अपनीवारी२
जलचर नभचर वनचरभूचर लघुदीर्घ तनधारी
सबही जीव कालके मुखमें घूमरहे दिन चारी३
नाम तुमारो अमर निरंतर काल पाश भय हारी
ब्रह्मानंद शरणमें तेरीकीजिये भवजल पारी॥४

(राग धुन ताल ३)

जो जन हरिका ध्यान लगावे
सो भवसागर पार तरेरे ॥ टेक ॥ जो जन०
हिरदे बीचकमलकेअंदर सिंघासननिर्माणकरेरे
तिसके ऊपर कोटि भानुसम
हरिस्वरूप मनमें सुमरेरे ॥ १ ॥ जो जन०
पग नूपर कटिमेंमणिमेखल सुंदरपीतांबरपहरेरे
कौस्तुभमणि बनमाल गलेमें
कुंडल कानन बीच परे रे ॥ २ ॥ जो जन०
चतुरभुजा बाजुबंद सोहे करकंकण धुनि
मनको हरे रे । शीशमुकटमणि रतनजडित है
शंख चक्र गदा पद्म धरेरे ॥ ३ ॥ जो जन०
वामअंकमें लक्ष्मी विराजे शेषनागसिरछत्रकरेरे
शिव सनकादि खडे कर जोडे
ब्रह्मानंद मन मोद भरे रे ॥ ४ ॥ जो जन०

१ देखोरी इक बाला जोगी द्वारे हमरे आया है री । ४

(राग धुन ताल ३)

जो जन ध्यान धरे निर्गुण को
सो ईश्वर का दर्शन पावे ॥ टेक ॥

जाय इकांत भुवन में बैठे कोमल आसन भूमि बिछावे । चिंता फिकर छोड सब मन के त्रिकुटी महल में सुरति जमावे ॥ १ ॥

पहले पहले रवि शशि तारे पल पल में बिजली चमकावे । दूर दूर के दिव्य देवगण पुन पुन तेज बीच दरसावे ॥ २ ॥

दिन दिन ध्यान धरे योगी जन ब्रह्मजोत घट में प्रगटावे । कोटि भानु सम झिल मिल झिल मिल रोम रोम में सुख उपजावे ॥ ३ ॥

कर्मन के बंधन सब टूटें माया मोह जाल कट जावे । ब्रह्मानंद मोक्ष पद पावे गर्भवास फिर के नहि आवे ॥ ४ ॥

(राग धुन ताल ३)

काहे शोच करे नर मनमें
वो तेरा रखवारा है रे ॥ टेक ॥ काहे०
गर्भवाससे जब तूं निकला दूधकुचनमें डारा है रे
बालापणमेंपालनकीनोमातामोहदुवारा है रे ॥
अन्नरचामनुजोंकेकारण पशुवोंकेहितचारा है रे
पक्षीवनमेंपानफूलफल सुखसें करतअहारा है रे
जलमेंजलचररहतनिरंतरखावेंमांसकरारा है रे
नाग बसें भूतलकेमांही जीवें वर्षहजारा है रे ३
स्वर्गलोकमें देवनकेहित बहतसुधाकीधारा है रे
ब्रह्मानंदफिकरसबतजकर सुमरोसर्जनहारा है रे

(राग धुन ताल ३)

जाग मुसाफर क्या सुख सोवे
आखिर तुझको जाना है रे ॥ टेक ॥
इस सरायमें रहननपावे क्याराजाक्याराना है रे
काहेपैर फैलावेमूरख घडीपलक ठहरानाहैरे ॥१

इकआवतदूजाचलजावे कायमनहीठिकानाहै रे
यहछलभरियांसुंदरपरियांकाहेदेखलुभानाहै रे
इसमकानमेंचोरबसतहैं अपनामालबचाना है रे
आपरदेसखर्चमतकीजेयहांतोतुझेकमानाहैरे ॥
दूर देशमें जाना तुझको पासनकछुसमाना है रे
ब्रह्मानंदसुकृतकरप्राणीजो आगेसुखपानाहै रे४

(लावणी कवाली)

अब तुम दया करो श्रीकृष्णजी
ब्रजराज कहानेवाले ॥ टेक ॥
तुम मात देवकी जाये जसमतिके पुत्र कहाये
मथुरासे गोकुलआयेजी माखनकेचुरानेवाले॥
लडकनसंग माटीखाई सुनमातजसोदा धाई
तुम अपने मुखकेमांहीजी सबविश्वदिखानेवाले
तुम दैत्यबकासुर मारा नलकूबरशाप निवारा
जलनागनाथकरडाराजी गिरवरके उठानेवाले
थन चूस पूतना मारी कुबरीकी देह सुधारी

तुमकंसराजबधकारीजी दुष्टनकेदबानेवाले॥४
जमुनातटबंसी बजाई सबसखियां सुनकर आई
वृंदावन रासरचाई जी मिलनाचनचानेवाले ५
तुम पुरी द्वारका आये सोनेके महल बनाये
रुकमणकोजीतकरलायेजीयदुबंशबढानेवाले ६
तुम अर्जुनकेरथवाही पांडवकी जीत कराई
द्रुपदीकी लाजरखाईजी भक्तनकेबचानेवाले ७
सब दैत्यनको संहारा भूमीकाभार उतारा
ब्रह्मानंददेवदुखटाराजी निजधामसिधानेवाले

(लावणी कवाली)

अब तुम दया करो श्रीरामजी
रघुनाथ कहानेवाले ॥ टेक ॥

बनजायताडकामारी खरदूषणफौजसंहारी ।
सब विघ्नदियेतुमटारीजी मुनियज्ञकरानेवाले॥
तुम जनकपुरीपगधारा शिवधनुषतोडकरडारा
राजोंकागर्वनिवाराजी सीताकोबिहानेवाले २

भई राजतिलककीत्यारी तबकेकईकीमतिमारी
दशरथआज्ञा सिरधारीजी बनवाससिधानेवाले
तुमचित्रकूटचलआये सबऋषिमुनिसुखउपजाये
जहांभरतमिलापकरायेजी निजकंठलगानेवाले
तुमपंचवटीमेंजाई निजपर्णकुटीबनवाई
तहांसीतागईचुराईजी मृगमारगिरानेवाले ॥ ५
सुग्रीवकोमित्रबनाया बालीकोमारगिराया
हनुमान दूत भिजवायाजी लंकाजलवानेवाले ६
तुम सागरपुलबनवाई सबसेनापारलंघाई
रावणसेकरीलडाईजी सबबंशमिटानेवाले ॥ ७
घरजनकसुताकोलाये दे राज्यबिभीषणआये
ब्रह्मानंदविमलयशगायेजी सुरकाजबनानेवाले

(लावणी कवाली)

अबतुमदयाकरोमहादेवजी कैलासबसानेवाले।
सब अंग विभूति रमाई सिर ऊपर जटा सुहाई।
गिरिराजसुतासुखदाईजी निजअंकबिठानेवाले

कानन में कुंडल राजे मस्तक में चंद्र विराजे ।
तननागविभूषणसाजेजी मृगछालबिछानेवाले
नर मुंड माल गल धारी कर में त्रिशूल भय कारी
नंदीगणपीठसवारीजी डमरुकेबजानेवाले ॥३॥
गंगा नद बेग अपारा जब नभसे उतरी धारा।
तुमबीचजटाकेडाराजी जलबूंदबनानेवाले ॥ ४
जबरावणनेतपकीना तबमनवांछितवरलीना ।
तुम तीन लोक पति कीना जी
सब राज्य दिलाने वाले ॥ ५ ॥
तुम काम देव तन जारा त्रिपुरासुर मार विदारा
सबदक्षयज्ञसंहाराजी गणसेनपठानेवाले ॥६॥
मुनि मार्कंड तप धारी जब आयो शरण तुमारी
यमपाशपलकमेंटारीजी तनअमरकरानेवाले ७
तुमदीनबंधुब्रतधारी निजभक्तनकेहितकारी
ब्रह्मानंदसकलभयहारीजी सुखधामपुगानेवाले

(लावणी कवाली)

अब तुम दया करो जगदीश जी
सब विश्व रचानेवाले । टेक ।
तुम मन में प्रथमविचारा तबपांचतत्त्वरचडारा
फिरहूयाजगतविस्ताराजी सबभुवन बनानेवाले
कोईनभचरजीवबनाये कोईपृथिवीबीच बसाये
जल चर जलमें उपजाये जी बहु रूपधरानेवाले
कहींअमृतफलरचदीनेकहींअन्न बहुतविधकीने
तुमभोजननित्यनवीनेजी सबकोदिलवानेवाले
नही जीव कर्म चतुराई तुम ने सब वस्तुबनाई
सब जगा सबी सुखदाई जी सब ढंगजमानेवाले
तुम पंखा पवन चलाया दीपक रविचंद्र जलाया
नितनदियांनीरबहायाजीसबजीवजिलानेवाले
जड चेतन जीव बनाये फिर बीजसे बीज लगाये
कोईनाशहोननहिपायेजी जगचक्र चलानेवाले
तुमकोसब जीवसमाना निजकर्मकियेपरधाना

फिरऊंचनीचजगठानाजी सबखेलदिखानेवाले
तुम पार ब्रह्म अविनाशी घटघटके अंतरवासी
ब्रह्मानंद परम सुखराशीजीभवबंधमिटानेवाले

(गजल ताल कवाली)

[१]भजलेरामनामसुखधाम तेरा पूरणहोसबकाम।
काशी जावे मथुरा जावे तीरथ फिरे तमाम
जाय हिमाचल करे तपस्या नही पावे विश्राम१
जटा रखाये भस्म रमाये जंगल किया मुकाम
सतगुरुकीसंगत नहिकीनी मिले न आत्मराम
आसन साधे भोजन साधे साधे प्राणायाम।
घटमेंब्रह्मस्वरूप न चीनो कीनोजतननिकाम३
संत समागम करे निरंतर जग से हो उपराम।
ब्रह्मानंद परम पद पावे होवे मन निष्काम॥४॥

(भजन ताल कवाली)

देखो वृन्दावन की कुंज में री नाचे नंद कुमार।

---

१ रंगसे कैसे होरी खेलूंरी मां सांवरियाके संग ६.

मोरमुकट सिर ऊपर सोहे गल फूलनके हार
पीतांबर कटि बीच बिराजे मुरलीअधर सुधार
वीणा ताल मृदंगी बाजे बाजे झांज सितार ।
छनछनछनछननूपरबाजे करकंकणझनकार २
सखियांके संग राधा नाचे नाचे ब्रजकी नार
ग्वालबालसबमिलकरनाचें करकरकेसिंगार ३
जलचर मोहे थलचर मोहे मोहे नभ संचार
ब्रह्मानंद मुनीश्वर मोहे बंसी धुन निर्धार ४

(भजन ताल कवाली)

बंसीकाबजानाछोडदेरे नंदमहरकेलाल। टेक।
तेरी बंसरी रस की भीनी बाजे मधुर रसाल
सुन सुन सारी ब्रज की नारी भूल गई घर माल १
बन में जाते धेनु चराते मोह लिये सब ग्वाल
दधि बेचन को चली गुजरिया रोक लई तत्काल
पक्षी मौन हुये पशवों ने तजा चरन का ख्याल
ध्यानछुटामुनियोंकाबनमें सुनकरधुनीविशाल

मोर मुकट पीतांबर सोहे गल बेजंती माल
ब्रह्मानंद की सुनो बेनती दीजे दरस दयाल ४

(भजन ताल कवाली)

बंसीकाबजानारीसखी मैंकैसेछोडुंआज । टेक ।
इस बंसीमें सबरागनकी सुंदरभरीअवाज
वीणातालमृदंगसरंगी बाजेंसबहीसाज ॥ १ ॥
इसबंसीकीधुनकोसुनके मग्नभयेमुनिराज
स्वर्गलोकसेंसुननेआवें मिलकरदेवसमाज ॥२॥
इसबंसीमेंनिगमागमकी वाणीरहीविराज
जोसुनपावेमोक्षसिधावे सफलहोंयसबकाज ३
वृन्दावन में कृष्ण चंद्र की रही बंसरी बाज
ब्रह्मानंद शरण में आयो राखिये मेरी लाज॥४॥

(भजन ताल कवाली)

मनुवा सोच समझकर देखलेरे नश्वरसबसंसार।
राजा जावे रानी जावे जावे सब परिवार
महल खजाना सब चल जावे जावे घर दरबार

सूरज चांद सितारे पर्वत सागर नीर अपार
दिनदिन काल सबीको खावे धावे पवन सवार
बालपणा जोबन सब बीता बीता काम विहार।
मौत खडी सिर ऊपर तेरे अबतो चेत गवार
प्रभुकानामसुमरनिशबासर छोडजगतव्यवहार
ब्रह्मानंद मिटे भवबंधन छूटें सकल विकार ।४।

(भजन ताल कवाली)

अब तो छोडजगतकीलालसारेसुमरोसर्जनहार
बालापण खेलनमे खोयो जोबन मोह्यो नार
बूढापण तन जर्जर होयो मन तृष्णा विस्तार ॥१
पलपलछिनछिनउमराजावे जैसे अंजली धार
गयावकतफिरहाथनआवे कीजेजतनहजार ॥२
मातपितानारीसुतबांधव स्वारथकाव्यवहार ।
अंतकालकोईसंगनजावे मनमेंदेखविचार ॥३॥
स्वपनसमान जगतकी रचना झूठा सबसंसार
ब्रह्मानंदभजनकरहरिका पावेमोक्ष दुवार ॥४॥

(खमाच ताल ३)

प्रभु कर सब दुख दूर हमारे
शरण पडे हम दास तुमारे॥ टेक ॥
सकल जगत तुमने उपजाया
तुमही हो प्रतिपालन हारे ॥ १ ॥ प्रभु०
सकल व्यापक अंतर यामी
ध्यावत सुरनर मुनि गण सारे ॥ २ ॥ प्रभु०
नाम तुमारो सब सुखदायक
सकल दोष भय पाप निवारे ॥ ३ ॥ प्रभु०
सत चित आनंद रूप तुमारो
ब्रह्मानंद सदा मन धारे ॥ ४ ॥ प्रभु०

(खमाच ताल ३)

प्रभु तुम सकल जगत के स्वामी
घट घट के नित अंतर यामी ॥ टेक ॥
निर्मल पूरण रूप तुमारो

१ गणपतिविघनविनाशन हारे ४

भुवन चतुर दश जल थल गामी ॥१॥ प्र०
तुमरा नाम लेत सब उधरें
पामर नीच जीव खल कामी ॥ २ ॥ प्रभु०
तुझ बेमुख सुख कबहुं न पावे
नरक कुंड नर पडत हरामी ॥ ३ ॥ प्रभु०
ब्रह्मानंद दयाल दया कर
भव दुख हारण सब सुख धामी ॥ ४ ॥ प्रभु०

(खमाच ताल ३)

प्रभु तुम सब जग सर्जन हारे
सकल शक्ति मय पिता हमारे ॥ टेक ॥
भूमी पर्वत नदियां सागर
तुमरी रचना रवि शशि तारे ॥ १ ॥ प्रभु०
सुर नर पशु सब जीवजगत में
तुम अधीन सब पुत्र तुमारे ॥ २ ॥ प्रभु०
नाना विध सब भोग पदारथ
सब के सुख कारण विस्तारे ॥ ३ ॥ प्रभु०

ब्रह्मानंद शरण में तुमरी
जन्म मरण भय भंजन हारे ॥ ४ ॥

(खमाच ताल ३)

हरी तुम भगतन के रखवारे
सकल जगत के नित हित कारे ॥ टेक ॥
गज को पकड ग्राह ने खेंचा
गरुड सवार पधार उबारे ॥१ ॥ हरि०
प्रल्हाद भगत की रक्षा कीनी
हिरणकशप तन तुरत विदारे ॥ २ ॥ हरि०
द्रुपदसुता की लाज बचाई
खेंच खेंच पट कौरव हारे ॥ ३ ॥ हरि०
ब्रह्मानंद शरण में आयो
कीजिये भवजलसिंधुकिनारे ॥ ४ ॥ हरि०

(राग खमाच ताल ३)

चंचल[1] मन निशदिन भटकत है

---

१ दर्शनबिन अखियां तरस रही एजी तरस रही तरसाय रही ८ तक.

एजी भटकत है भटकावत है ॥टेक॥ चंचल०
जिम मर्कट तरु ऊपर चडकर
डार डार पर लटकत है ॥ १ ॥ चंचल०
रुकत जतनसें क्षण विषयनतें
फिर तिनहीमें अटकत है ॥ २ ॥ चंचल०
काचके हेत लोभकर मूरख
चिंतामणिको पटकत है ॥ ३ ॥ चंचल०
ब्रह्मानंद समीप छोडकर
तुच्छ विषय रस गटकत है ॥ ४ ॥ चंचल०

(खमाच ताल ३)

हरि सुमरण बिन दिन जाय रहे
एजी जाय रहे नित धाय रहे ॥ टेक ॥
बालपणा खेलन मे खोया
जोबन काम लुभाय रहे ॥ १ ॥ हरि०
वृद्धपणे में शिथल भयो तन
नाना रोग सताय रहे ॥ २ ॥ हरि०

जप तप दान योग नहि कीनो
बिरथा जन्म गमाय रहे ॥ ३ ॥ हरि०
ब्रह्मानंद भजन बिन प्रभु के
भवसागर भटकाय रहे ॥ ४ ॥ हरि०

(खमाच ताल ३)

हरि नाम सुमर सुख कारण रे
सुख कारण रे भव तारण रे ॥ टेक ॥
सोवत जागत फिरत निरंतर
सुख से करो उचारणरे ॥ १ ॥ हरि०
जन्म जन्म के संचित सारे
पल में पाप निवारण रे ॥ २ ॥ हरि०
जप तप योग कठिन कलिमांही
होय न भव भय हारण रे ॥ ३ ॥ हरि०
ब्रह्मानंद करो प्रभु के नित
चरण कमलचित धारण रे ॥ ४ ॥ हरि०

(खमाच ताल ३)

अनहदधुनी सिरपर बाज रही
एजी बाज रही अरु गाज रही ।।टेक।।अनहद०
बाजत शंख मृदंग बंसरी
घन गर्जन अति छाज रही ॥ १ ॥ अनहद०
सुनकर मस्त भया मन मेरा
चंचलता सब भाज गई ॥ २ ॥ अनहद०
तनके धर्म कर्म सब छूटे
लोक वेद की लाज गई ॥ ३ ॥ अनहद०
ब्रह्मानंद गिरा गमनाही
शून्य समाधि बिराज रही ॥ ४ ॥ अनहद०

(खमाच ताल ३)

मेरी सुरत गगनमें जाय रही
एजी जाय रही अरु धायरही ।।टेक।। मेरी०
त्रिकुटी महलमें चडकर देखा
जगमग जोत जगाय रही ॥ १ ॥ मेरी०

अमृत बरसे बादल गरजे
बिजली चमक मन भाय रही ॥ २ ॥ मेरी०
दसवें महलमें सेज पियाकी
चुन चुन फूल बिछाय रही ॥ ३ ॥ मेरी०
ब्रह्मानंद देहसुध बिसरी
सहजस्वरूप समाय रही ॥ ४ ॥ मेरी०

(खमाच ताल ३)

मुझे लगन लगी प्रभु पावनकी
एजी पावनकी घर लावनकी ॥ टेक ॥ मुझे०
छोड काज अरु लाज जगतकी
निशदिन ध्यान लगावनकी ॥ १ ॥ मुझे०
सुरत उजाली खुलगई ताली
गगन महलमें जावनकी ॥ २ ॥ मुझे०
झिलमिलकारी जोत निहारी
जैसे बिजली सावनकी ॥ ३ ॥ मुझे०
ब्रह्मानंद मिटी सब प्यासा

निरख छबी मन भावनकी ॥ ४ ॥ मुझे०

(खमाच ताल ३)

मुझे सतगुरु संत मिलाय सखी
मेरे मन की तपत बुझाय सखी ॥ टेक ॥
आन बसी चोरन की नगरिया
खोस खोस कर खाय सखी ॥ १ ॥ मुझे०
झूठे कार विहार जगत के
बिरथा रही फसाय सखी ॥ २ ॥ मुझे०
विन गुरु ज्ञान मोक्ष नही होवे
कोटिन जतन कराय सखी ॥ ३ ॥ मुझे०
ब्रह्मानंद मिले गुरु पूरा
भव बंधन मिट जाय सखी ॥ ४ ॥ मुझे०

(खमाच ताल ३)

भजले नरशारंगपाणीरे भजले नरशारंगपाणी

---

१ जग दर्शनका मेला है ? दिननीके वीते जाते हैं.
२ तक.

मानुषतन पुन पुन नहि आवे
दिन दिन घडी घडी पल पल छिन छिन
स्रवत जात जैसे अंजलिको पानी ।।टेक।। भज०
नरमूढ पापसें डर रे। हरिचरणकमल
चित धर रे। संतन सम संगति कर रे।
तज धन जोबनका मद मनसे
शरण गहो सतगुरु ज्ञानी ।। १ ।। भजले०
विषयारस फिरत भुलाना। निजसुख स्वरूप
नहि जाना। फिर मरकर मन पछताना।
भटकत पुन पुन लख चौरासी
सुख न लहत क्षण अभिमानी ।।२।। भजले०
सुतदारादिकपरिवारा।क्षणभंगुर देख बिचारा।
जिम बिजलीका चमकारा।
करकर पाप करत धनसंचय
नरक पडत पामर प्राणी ।। ३ ।। भजले०
जो नाम हरिका गावे। भवसागरको तर जावे

फिर गर्भवास नहि आवे
ब्रह्मानंद परम पद पावत
जावतब्रह्मस्वरूप समानी ॥ ४ ॥ भजले०

(खमाच ताल ३)

जग स्वपनेकीमायासाधो जगस्वपनेकीमायाहै
शोच समझ नर दिल अपनेमें
कौन है तुं किस कारण
इस दुनियांमें मनुज तन पाया है। टेक। जग०
नारी सुतबांधवचेरा है नहि तेराहैनहिमेराहै
चिडियांका रैन बसेरा है
अपने अपने कर्मनके वश
कोई जावत कोई आया है ॥ १ ॥ जग०
घर मंदिर माल खजाना है
दो दिनका यहां ठहराना है
फिर आखिर तुझको जाना है
कर अपने करसे शुभ कारज

जो परलोक सहाया है ॥ २ ॥ जग०
चेहरेकी सुंदरताई है थोडे दिनकी रुशनाई है
फिर खाकमें खाक मिलाई है
सुमरण कर हरिका निशदिन
दिन दिन छीजत यह काया है ॥ ३ ॥ जग०
यहझूठासबसंसाराहै मायानेजालपसाराहै
क्यों भूला फिरत गवारा है
ब्रह्मानंदरूपबिन जाने
जन्ममरण भटकाया है ॥ ४ ॥ जग०

(ध्रुवपद ताल ४)

प्रथम सुमर श्रीगणेश गौरी सुत प्रिय महेश
सकल विघन भय कलेश दूर से निवारे ॥ १ ॥
लंब उदर भुज विशाल कर त्रिशूल चंद्र भाल
शोभत गल पुष्प माल रक्तवसन धारे ॥ २ ॥
ऋद्धि सिद्धि दोऊ नार चमर करत वार वार

---

१ प्रथममान ओंकार० ५ भजनतक.

मूषक वाहन सवार भक्तन हित कारे ॥ ३ ॥
पूरणगुणगणनिधान सुर मुनियशकरतगान ।
ब्रह्मानंद चरण ध्यान सकल काज सारे ॥४॥

(ध्रुवपद ताल ४)

शीशमुकट तिलक भाल काननकुंडल विशाल
कंठ में बेजंती माल शोभत अति भारी ॥१॥
विलसत तन पीत वसन वदन मंद मंद हसन
तीन लोक ताप ग्रसन चतुर भुजा धारी ॥२॥
शंख चक्र गदा संग रमा वसत वाम अंग
सुंदर शुभ शाम रंग गरुड के सवारी ॥३॥
कुटिल कुटिल अलक राजे पग में नूपर विराजे
ब्रह्मानंद मदन लाजे रूप को निहारी ॥४॥

(ध्रुवपद ताल ४)

जय महेश जटाजूट कंठ सोहे कालकूट
जन्म मरण जाय छूट नाम लेत जांके ॥ १ ॥
तीन नयन चंद्र भाल गल में मुंडन की माल

शोभत तन मिरग छाल कटि में नाग बांके२
गौरी बसत सदा संग भस्म लसत अंग अंग
शीश गंग के तरंग वाहन वृषभाके ॥ ३ ॥
कर त्रिशूल अरु कुठार ब्रह्मानंद निर्विकार
जांकी महिमा अपार कहत वेद थाके ॥ ४ ॥

(ध्रुवपद ताल ४)

ईश्वर तुं है दयाल जगतपति प्रणतपाल
व्यापक पूरण बिशाल सत चित सुख दाई १
सकल भुवन जन्म करण जीवन के परम शरण
शरणागत ताप हरण निगमागम गाई ॥ २ ॥
तेरी महिमा अपार कोई नहि पावे पार
ऋषि मुनि कर कर विचार अंत हार जाई ३
ब्रह्मा श्रीपति गणेश नारद शारद सुरेश
ध्यावत मन में हमेश ब्रह्मानंद पाई ॥ ४ ॥

(ध्रुवपद ताल ४)

आदि देव विश्वनाथ भक्तन के सदा साथ

पकड प्रभु मेरो हाथ दास मैं तुमारो ॥ १ ॥
सुर नर मुनि धरत ध्यान वेद वचन करत गान
तुं ही सब गुणनिधान जग सर्जनहारो ॥ २ ॥
पाप हरण तेरो नाम सुखस्वरूप परम धाम
अचरज सब तेरे काम दया कर निहारो ॥३॥
सकल जगतके अधार निर्गुण नित निराकार
ब्रह्मानंद सुन पुकार भवसागर तारो ॥ ४ ॥

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

[1]प्रभुनिर्विकार जगरचनहार महिमाअपार
नहिमिलतपार करकरविचार मैतो निशदिन
हारो ॥ १ ॥ प्रभु निर्विकार०
सबविश्वभरण भवतापहरण दीननकेशरण
दुखदूरकरण मेरोजनममरण सब बंधनटारो
॥ २ ॥ प्रभु निर्विकार०
तुमजगतनाथ मैं हुं अनाथ मेरो पकडहाथ

---

१ इकचतुर नार करकरसिंगार० ४ भजनतक.

रखअपनेसाथ धरुंचरणमाथ दयाकरकेनिहारो
॥ ३ ॥ प्रभु निर्वि०
मेरीसुनपुकार करुं बारबार तेरीआशधार
पडोआयद्वार ब्रह्मानंदपार भवसागरतारो ४॥
प्रभुनिर्विकार०

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

हरिनामसुमर तेरीजायउमर घडीपलछिनभर
नहिदिलसे बिसर सबशोच फिकर नर मनसे
विहाई ॥ १ ॥ हरिनामसुमर०
सुतमीतनार घरकारबार जगकी बहार
दिन देखचार कोईअंतबार तेरेसंगनसहाई २॥
हरिनामसुमर०
राजावजीर रणशूरबीर गुणिगणगभीर
नहिधरतधीर कोईसिद्धपीर जगथिरनरहाई ३॥
हरिनामसुमर०
बिनप्रभुकेभजन सबझूठजतन करकेथिरमन

मेरोसुनलेबचन ब्रह्मानंदरटन नितकरमनमांहीं ॥ ४ ॥ हरिनामसुमर०

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

आलीनंदकोलाल लोचनविशाल गलफूलन माल शोभे तिलकभाल चलेललितचाल नितबंसरीबजावे ॥ १ ॥ आलीनंदकोलाल०

घनशामवदन मुखचंदकिरण तनपीतबसन मृदुमंदहसन पगनूपरधुनसुन मनहरखावे॥२॥ आलीनंदकोलाल०

अतिविमलनीर जमुनाकेतीर कसेकमरचीर करेनाचधीर संगमेंअहीर मिलरासरचावे॥३॥ आलीनंदकोलाल०

चलीब्रजकीनार करकरासिंगार हरिछबिनिहार भुलीसदनकार ब्रह्मानंदपार नहिमुनिजनपावे ॥ ४ ॥ आलीनंदकोलाल०

(राग सारंग ठुमरी ताल)

देखोदेखोरीलंगर मेरोरोकतडगर मेरीबंयरा पकर तलपटकीगगर मैंतोजोडतहुंकर नहिमा-नतबिहारी ॥ १ ॥ देखोदेखोरीलंगर०

सिरमुकटधार गलपहनहार संगबालडार नितकरतरार मैंतोगईरीहार बडोढीठअनारी ॥ २ ॥ देखोदेखोरीलंगर०

सखीनागरनट ठाडोजमुनाकेतट करकपटझपट मेरोहरलियोपट बंसीबटझटपट चडगयोरी मुरारी ॥ ३ ॥ देखोदेखोरीलंगर०

धरमुरलीअधर स्वरगातमधुर मैंतोधुनसु-नकर सुधगईरीबिसर ब्रह्मानंदनजर बिचबसोगिरधारी ॥ ४ ॥ देखोदेखोरीलंगर०

(ठुमरी खमाच)

रस भरी रे मोहन तेरी अखियां ॥ टेक ॥
डगर चलत पग धरत हरत मन करत रार नहि माने लंगर कर रही पुकार सब सखियां १

चुनरीझटकमोरी गगरी पटकदीनी मटकचाल
गयोनंदकोलालआली अलक भालपररखियां२
जमुनातट पनघट वंसीबट गावत मधुरी
बेन बजावत नाचत परम हरखियां ॥ ३ ॥
श्यामलतन मुख चंद्रकिरण सम ब्रह्मानंद
मुकुंदछबी मनमोहन नैननिरखियां ॥ ४ ॥

(ठुमरी खमाच)

मोकुं जाने दे जाने दे रे कन्हैया ॥ टेक ॥
जमुनाकोजलभरमैंतोचलीनिजघरठाडोमगपर
करे रारनिडर मैतो कहुंगीजायतोरीमैया ।१।
काहेकोमुरारीमगरोकतहमारीतुमसारीब्रजना
री हमगारीदेदेहारी नहिमानतहैधेनुचरैया२
निपटअजानमांगेदानब्रजनारिनसेकंसकोनक
रेमान देखोरीबडोगुमानबलवाननिठुरलडैया
नंदकेदुलारे मेरे नैननके तारे हरि ब्रह्मानंद
विहारे ब्रजअंदर सुंदर रूप धरैया । ४ ।

(ठुमरी खमाच)

दर्शन बिन जियरा तरसे । टेक । घडी घडी दिन दिन पल पल छिन छिन कल न पडत नहि धरत धीर मन नीर नैन सें बरसे ॥ १ ॥

बिनती हमारी अब सुनो गिरधारी तुम जावुं बलि हारी तेरे चरण कमल तो पे वारी मेरी जान जिगर से कीजिये सुनाई मेरी देर क्यों लगाई अब और न सहाई तेरे बिना यदुराई मुझे लीजिये बचाई निजकर से ॥ ३ ॥

दूषण हमारो सब दिलसें बिसारो प्रभु ब्रह्मानंद निहारो निज नैनन तारो भव सिंधु लहरसे ४

(ठुमरी खमाच)

दर्शन बिन तरसे नैना । टेक । सांवरी सूरत प्यारी बनमाल गलधारी जबसे निहारी सारी तन की बिसारी सुध पडत न घडी पल चैना ॥ १

जमुना के नीरे तीरे विमल समीरे सखी धीरे धीरे

गावेनंद लालग्वालबालसंगमधुरमधुरस्वरबैना
शीशमुकट कटिपीतविमलपट रासकरतनटवर
वनकुंजन पगनूपर धुन छैना ॥ ३ ॥
सुंदर अलक झलक श्रुति कुंडल ब्रह्मानंद
पलक नही बिसरत सकल मनोरथ दैना ॥ ४ ॥

(राग कसूरी ताल ३)

दीनानाथ[१] दयालसुने मैं भक्तन हितकारी॥टेक
हिरणकशिपने बांध भक्तको चाबुक जब मारी
थंभफोडकर प्रगट भये हरि नखसेकमरफाडी १
गजको पकडले चला ग्राह जब जलमे बलकारी
मारचक्रग्रहका सिरकाटा गजकीविपतटारी २
बीच सभाके नगन करी जब पांडवकी नारी
दुःशासनकी भुजा चीर को खेंच खेंच हारी ३
ध्रुवनें नाम लिया जब दीना अचल धाम भारी
ब्रह्मानंद देर नहि कीजे अब मेरी वारी ४ दी०

१ सदा रहो अलमस्त नामकी पीलेना बूटी । भजन ७.

(राग कसूरी ताल)

पियामिलनकेकाजआजजोगनबनजावुंगी।।टे०
हारसिंगार छोडकर सारे अंग बिभूत रमावुंगी
सिंगी सेली पहर गलेमें अलख जगावुंगी ।।१।।
काशी मथुरा हरिद्वार सब तीरथ नावुंगी
जाय हिमाचल करूं तपस्या तनको सुकावुंगी २
ऋषि मुनियोंके आश्रम जाकर खोज लगावुंगी
अंदर बाहिर सब जग ढूंडुं नहि अटकावुंगी।।३
निशदिन उसका ध्यान लगाकर दर्शन पावुंगी
ब्रह्मानंद पिया घर लाकरमंगल गावुंगी।।४पि०

(कसूरी ताल ३)

हरिनाम सुमर सुखधाम
जगतमें जीवन दो दिनका ।। टेक ।।
पाप कपटकर माया जोडी गर्वकरे धनका
सबी छोडकरचला मुसाफिरवासहुया बनका
सुंदरकाया देख लुभाया लाड करे तनका

छूटा श्वासबिखर गई देही ज्योंमालामनका।।२
जोबननारी लगे पियारी मौज करे मनका
कालबलीका लगे तमाचा भूल जाय ठनका ३
यह संसार स्वपनकी माया मेला पल छिनका
ब्रह्मानंद भजनकर बंदे नाथ निरंजनका ।।ह०

(कसूरी ताल ३)

तेरी शरण पडा मैं आय नाथ मोहे
दे दर्शन प्यारा ।। टेक ।।
गोकुल ढूंडी मथुरा ढूंडी बिंद्राबन सारा
काशीपुरी सकल फिर ढूंडी ढूंडा हरद्वारा।।१ते०
कोई वैकुंठ कैलास बतावे कोई सागरपारा
कोई कहे सबजगके भीतर व्यापक कर्तारा।।२
संत बतावें घटके मांही परगट उजियारा
कोई कहे वो अलखनिरंजन सबसे है न्यारा।।३
चतुर्भुजा पीतांबर सोहे शीशमुकटधारा
ब्रह्मानंद मैं दर्शन पावुं जावुं बलिहारा ।।४।।ते०

(कसूरी ताल ३)

तेरो जन्म मरण मिट जाय
हरी का नाम सुमर प्यारे ॥ टेक ॥
जग मे आया नरतन पाया भाग्य बडे भारे
मोह भुलाना कद्रनजाना रेत रतन डारे॥१॥
बालापनमें मन खेलन में सुख दुख नहि धारे।
जोबनरसिया कामनवासिया तनमनधनहारे।२
बूढा होकर घर मे सोकर सुने बचन खारे
दुर्बल काया रोग सताया तृष्णा तन जारे।३।
प्रभु नहि सुमरा बीती उमरा काल आय मारे
ब्रह्मानंद विना जगदीश्वर कौन विपत टारे।४

(कसूरी ताल ३)

शरण पडे की लाज आज
तुम राखो भगवाना ॥ टेक ॥
जप तप योग यज्ञ नहि कीने नहि तीरथ दाना
बिरथा बीत गई सब उमरा विषयन भरमाना१

सत संगत में बैठ तुमारा किया न गुण गाना
भवसागर जल दुस्तर भारी कैसे तर जाना ॥२
चौरासी लख जीव जून में पुन पुन भटकाना
तुमरे भजन बिना नहि कबहुं होय मोक्ष पाना ३
दीनदयाल दया के सागर तुम सब गुण खाना
ब्रह्मानंद मैं दास तुमारो मुझे न बिसराना ॥४॥

(कसूरी ताल ३)

तुम जाय बसे मोहन मथुरा
गोकुल कब आवोगे ॥ टेक ॥
मोरमुकुट पीतांबर माला गल पहरावोगे
जमुना तट पर ग्वालनके संग धेनु चरावोगे ॥१
मीठी धुनसें शाम मनोहर बेन बजावोगे
वृन्दाबन की कुंज गलिनमे रास रचावोगे ॥२
छीनछीन सखियन सें दधि माखन कबखावोगे
राधा प्यारी शोच करे मन फिर मिल जावोगे ३
अखियां तरस रही दर्शनको कब दिखलावोगे

ब्रह्मानंद हमारे मनकी आश पुरावोगे ॥४॥

(राग रासडा)

हरिभजन करोरे नर नारियांरे
मिटे जनममरणकी खुवारियांरे ॥ टेक ॥
मानुषतन दुर्लभहै भाई
भजन विना विरथा चलजाई
गयावकतनहि आवे दूजी वारियांरे॥१॥हरि०
बालापण खेलनमे जावे
जोबन कामकला मनभावे
बूढे तनमें लागें घणी बिमारियांरे॥ २ ॥ हरि०
यह संसार सराय तमाशा
मूरख करे भोगकी आशा
सिरपर काल खडा है करे तियारियांरे ॥ ३ ॥
सुत दारा धन मीत पियारे

---

१ जावुं जावुंरे सांवरिया तोपे वारणारे ६ तक.

कोई न जावे संग तुमारे
ब्रह्मानंद जगतकी झूठी यारियांरे ॥४॥ हरि०

(राग रासडा)

हरिभजन करे तो सुख पायगारे
नहि तो जनम जनम भटकायगारे ॥ टेक ॥
भवसागर में नीरअपारा
हरिका नाम सहाज सुखारा
जपे जो निश्चय धार पार लगायगारे॥१॥हरि०
मायाजाल बडा है भारी
निकलन की नहि दूजी बारी
मानुषतन जबछूटे फिर पछतायगारे॥२॥हरि०
चारदिवसकाजगमे डेरा क्याकरता है मेरामेरा
खालीआयाथा फिरखाली जायगारे॥३॥हरि०
सकल जगतका कर्ता स्वामी
घटघटका प्रभु अंतरयामी
ब्रह्मानंद सुमर नर दुःख मिटायगारे॥४॥हरि०

(राग रासडा)

हरिचरणकमल चितलावनारे
फिर मनुषजनम नहि आवनारे ॥ टेक ॥
मैथुन नींद खान अरु पाना
यह सब जीव स्वभाव समाना
नरतनमें कुछकरलेकर्मसुहावनारे ॥१॥ हरि०
गर्भवासमे किया करारा
अब क्यों प्रभुका नाम बिसारा
झूठे जगव्यवहार देख भुलावनारे ॥ २ ॥ हरि०
मंदिरमहल अटारी डेरे क्या करता है मेरे मेरे
चारदिवसका रहना आखिरजावनारे ॥४॥ ह०
तीर्थदान बरत अरु पूजा
भजन समान उपाय न दूजा
ब्रह्मानंद विचार मोक्षपदपावनारे ॥४॥ हरि०

(राग रासडा)

चलो चलो सखियां मिलजाइयेरे

सतसंगतमे हरिगुण गाइयेरे ॥ टेक ॥ चलो०
सतसंगतमे लाभ घनेरा
जन्मजन्म का मिटे अंधेरा
परमेश्वरका दर्शन घटमें पाइयेरे ॥१॥ चलो०
सतसंगत महिमा अतिभारी
ऋषि मुनि वेद पुराण पुकारी
ज्ञानविवेकविचारसदामनलाइयेरे॥२॥चलो०
करे हजार जतन जो कोई
सतसंगत बिन ज्ञान न होई
जपतपसंयमसाधनसफलकराइयेरे॥३॥चलो०
पापी नीच मूढ नर नारी
सब सुधरें सतसंगत धारी
ब्रह्मानंद मनुजतन नहीगमाइयेरे॥४॥चलो०

(राग रासडा)

आवो आवो सखी बात बिचारियेरे
इस मनुष जनम को सुधारियेरे ॥ टेक ॥

जिम अंजलीका जावे पानी
दिनदिन उमरा जाय विहानी
हरिका नाम सुमर कर काल गुजारियेरे ॥१॥
स्वपन समान जगत सब जानो
हर्ष शोक मनमें नहि आनो
प्रभुका ध्यान सदा हिरदे में धारियेरे ॥२॥
स्थावर जंगम जग नर नारी
परमेश्वर की रचना सारी
ऊंचनीच सब मनमें भेद निवारियेरे ॥ ३ ॥
सतगुरु शरण गहो दृढ मनमें
पारब्रह्म खोजो निज तनमें
ब्रह्मानंद सकल भवबंधन टारियेरे ॥ ४ ॥

(राग रासडा)

सुनो सुनो सखी ज्ञान विचारणारे
भवसागर सें पार उतारणारे ॥ टेक ॥
पांच तत्त्व की देह बनाई

क्षणभंगुर जड रूप कहाई
सुख दुख जीवन मरण धर्म तन कारणारे ॥१॥
ईश्वर अंश जीव अविनाशी
चेतनरूप परम सुखराशी
निर्गुण निर्मल अचल सदा निर्धारणारे ॥२॥
घटजल सागरजल नहि दोई
ईश्वर जीव भेद नहि कोई
व्यापक पूरण ब्रह्म अखंड निहारणारे ॥ ३ ॥
सीप मांहि जिम रजत निहारा
जिम मृगतृष्णा जलकी धारा
ब्रह्मानंद झूठ सब जगत पसारणारे ॥ ४ ॥

(राग जिला ठुमरी ताल)

दे दर्शन[1] मोहे आज सांवरिया
बिन दर्शन मन धीर न धरिया ॥ टेक ॥ दे०
सांवरी सूरत मेरे दिलमें समाई

---

१ गोविंदभजनकी येहि तेरी विरिया ५ तक.

खान पान तन सुध बिसराई
कल न पडत निशदिन पल घडिया ॥१॥ देद०
जिम चातक वर्षाबिन होई
हरिके मिलन बिन मम गति सोई
तडप रही बिन नीर मछरिया ॥२॥ दे दर्शन०
मेरे अवगुण नाथ बिसारो
कर किरपा मम धाम पधारो
जनम जनमकीमैं दास तुमरिया ॥३॥ दे दर्श०
ब्रह्मानंद दरसकी प्यासी
करुणा करो जान निजदासी
बारबार येहि मांग हमरिया ॥४॥ दे दर्शन०

(जिला ठुमरी ताल)

हरिका भजन करलेरी मेरी मतिया
भजनबिना न मिलेरी शुभ गतिया॥टेक॥हरि०
क्या विषयोंमे फिरत भुलानी
अंतकाल सब नरक निशानी

जावत बीत काल दिन रतिया ॥१॥ हरिका॰
जग दुर्लभ मानुषतन पाया
हरिके भजन बिन काम न आया
जिम निष्फल दीपक बिन बतिया ॥२॥ हरि॰
प्रीतम है तेरे तन अंदर
क्या खोजे बन पर्वत कंदर
उलट देख घटमांहि सुरतिया ॥३॥ हरिका॰
ब्रह्मानंद वचन हितकारी
छोड जगतकी झूठी यारी
हरिचरणनमें करो नित रतिया ॥४॥ हरिका॰

(जिला ठुमरी ताल ३)

अब तो सुनो प्रभु अरज हमरिया
शरण पडा मैं आय तुमरिया ॥ टेक ॥
सकल जगतके पालक स्वामी
घटघटके प्रभु अंतरयामी
तुम सागर जगजीव लहरिया ॥ १ ॥

पापहरण तुझ नाम निरंजन
मायामोहजाल भयभंजन
गावत सुरनर मुनिमन धरिया ॥ २ ॥
मैं मतिमंद सकल गुणहीना
जपतप योग भजन नही कीना
दीन जानकर फेर नजरिया ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद कहे कर जोरी
भक्तिदान दीजे प्रभु तोरी
जन्ममरण दुख संकट हरिया ॥ ४ ॥

(जिला ठुमरी ताल ३)

अब तो सुमर नर रामचरणको
जन्ममरण दुख दूर करणको ॥ टेक ॥
चौरासी लख भटकत आया
जगमे दुर्लभ नरतन पाया
क्यों खोवे इस परम रतनको ॥ १ ॥
श्रवण सुने नहि नैनन सूझे

वृद्ध भया कोई बात न बूझे
क्या बिरथा भटकावत मनको ॥ २ ॥
आज गया जैसे कल जावे
बीता वकत फेर नहि आवे
करले बेग बिचार जतनको ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद कहे हित बाणी
प्रभुकी शरण पडोरे प्राणी
भवसागर जल पार तरणको ॥ ४ ॥

(जिला ठुमरी ताल ३)

अब तो तजो नर रति विषयनकी
कर ले फिकर परलोक गमनकी ॥टेक॥ अब०
बालपणा जिम गई जुवानी
सुंदर काया भई पुराणी
तदपि मिटे नहि लालच मनकी ॥१॥ अब०
जरा दूत यमराज पठाया
रोग फौज संग लेकर आया

मूरख आश करे क्या तनकी ॥२॥ अब तो०
स्वारथ हेत करें सब प्रीति
सकल जगतकी है यह रीति
छोड ममत धन धाम सुतनकी ॥३॥ अब तो०
ब्रह्मानंद वचन सुन लीजे
निशिदिन हरिचरणन चित दीजे
पाश कटे तेरी जनममरणकी ॥४॥ अब तो०

(गजल ताल ३)

तेरी[१] शरणमें आयके फिर
आश किसकी कीजिये ॥ टेक ॥ तेरी०
नहि देख पडता है मुझे दुनियांमें तेरी शानका
गंगाकिनारे बैठके किम कूपका जल पीजिये १
हरगिज नही लायक हुं मै गरचे तेरे दरबारका
मेरी खताको माफ कर दीदार अपना दीजिये २
पतितपावन नाम सुन के मैं शरण तेरी पडा

---

१ शामकी उधो जुदाई अब सही जाती नही ७ तक.

सफल कर इस नामको अपना मुझे करलीजिये ३
मिलता है ब्रह्मानंद जिसके नाम लेनेसे सही
ऐसे प्रभुको छोडकर फिर कौनसे हितकीजिये ४

(गजल ताल ३)

जो भजे हरिको सदा
सोई परमपद पायगा ॥ टेक ॥ जो भजे०
देहके माला तिलकअरु छाप नहिकिसुकामके
प्रेमभक्तिके बिना नहि नाथके मन भायगा १
दिलके दर्पणको सफा कर दूरकर अभिमानको
खाक हो गुरुके कदमकी तो प्रभु मिलजायगा
छोड दुनियाके मजे सब बैठकर एकांतमें
ध्यानधर हरिके चरणका फिर जनमनहि आयगा
दृढ भरोसा मनमें करके जो जपे हरिनामको
कहताहै ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद बीच समायगा॥४॥

(गजल ताल ३)

दे पियादर्शनमुझे तेरावियोग सतारहा॥टेक॥

छोडकर घरमें मुझे तुम जा बसे परदेसमें
यह मेरा दिनचारका जोबन मुफतमे जारहा
खाना व पीना सोवना घर कामकाजभुलादिया
दिनरातमन मेरा तेरे मिलनेकी आशलगारहा
तेरा कहा माना नही यह भूल मेरी है सही
अबतो दयाकर माफकरदिल है मेरा पछतारहा
जानकर दासी सदा अपनी मुझे मिलजाइये
ब्रह्मानंद शरण पडा करजोड अर्जसुनारहा ४

(गजल ताल ३)

मानले कहना हमारा
दिलकी लालच छोडदे ॥ टेक ॥
चारदिनकी जिंदगी आखिरयहांसेजायगा
सबतरफसेदिलहटा हरिकेचरणमें जोडदे ॥१॥
यह सबी स्वारथभरे जिनको पियारे जानता
भजनकरप्रभुका सदा सबसेपरीतितोडदे ॥२॥
बालकपणा जोबन गया बूढा हुया मरणे लगा

अबतोमूरखचेतकरविषयोंसेमनकोमोडदे ॥३॥
यह तेरा मानुषजनम पलपलमें बीताजारहा
ब्रह्मानंदमिलेनही फिर जोतुंलाखकरोडदे॥४॥

(गजल ताल ३)

देखले नजरोंसे प्यारे ईशका दरबार है॥टेक॥
भूमी गलीचा है बिछा आकाश तंबु सुहावना
रवि चंद दीपक रोशनी सब वृक्ष बाग बहारहै १
नदियां फुवारे चल रहे पंखा पवन झूले सदा
सागर सरोवर शोभते सब पर्वतोंकी दिवारहै २
न्यायकारी आप ईश्वर जीवलोक सभाभरी
राजा वा रंक समानसे सुनतासबीकी पुकारहै ३
स्वर्ग भूमी इनाम सुंदर नरक जेल जगा बनी
ब्रह्मानंद मिले सबीफल कर्मके अनुसारहै॥४॥

(गजल ताल ३)

ज्ञान दे गुरुदेवने मेरे दिलका भरम मिटा
दिया ॥ टेक ॥

जाताथा देखनको जिसे मथुरा बनारस द्वारका
सोई चेतनदेवको घटमें मेरेदिखलादिया ॥१॥
इस नजरसें जगतको मैं देखताथा जुदा जुदा
जीवजून अनेकमें मुझे एकरूप बतादिया ॥ २ ॥
जगत साचा मानके फिरताथा मैं भटका हुआ
स्वपनेसमानबिचारके सब नाशरूपजतादिया ३
सुखदुःख भूखपियास जीवनमरणधर्मशरीरके
ब्रह्मानंदस्वरूपको करकेजुदादरसादिया ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

शामकी ऊधो छबी दिलमें हमारे भारही ॥ टेक
मुकुट सिरपे कानमे कुंडल गले वनमाल है
मुखमें लगाई बंसरी वो याद हमको आ रही॥१
छोड कर हमको मुरारी बास मथुरामें किया।
एक एक घडी हमे अब वर्ष वर्ष बिता रही ॥२॥
फिर कबी आवेंगे गोकुलमें दया करके हरी।
अखियांहमारीरातदिन दर्शनलिये तरसारही ३

ज्ञानका उपदेश तुमरा औरको बतलाइये ।
ब्रह्मानंद हमे कृष्णकी प्रेमभक्ति सुहारही ॥४

(गजल ताल ३)

[1]जो गर्भका इकरार था
तुमे याद हो के न याद हो ॥ टेक ॥
उलटे बदनसें लटकना फिर लख चौरासी
भटकना । तब सोच कर सिर पटकना
तुमे याद हो के न याद हो ॥ १ ॥ जो०
पिछले जनमका संभारना सब कर्मकावो
विचारणा । फिर ईश ईश पुकारना
तुमे याद हो के न याद हो ॥ २ ॥
विषयोंसे दिलको हटावना हरिके चरणमें
लगावना । किसी जीवका न सतावना
तुमे याद हो के न याद हो ॥ ३ ॥ जो०

---

१ जो हमसे तुमसे करार था तुमे याद हो कि न याद हो ४ भजन तक.

उस बातका बिसरावना दुनियांकी मौज उडावना । ब्रह्मानंद फिर दुःख पावना तुमे याद हो के न याद हो ४ ॥ जो० ॥

(गजल ताल ३)

जो ईशका उपकार था
तुमे याद हो के न याद हो ॥ टेक ॥ जो०
करी गर्भमें तेरी पालना फिर दुखसें बाहिर निकालना । कुचियोंमें दूधका डालना
तुमे याद हो के न याद हो ॥ १ ॥ जो०
सूरजवाचांदसितार है जलपवनभोगअपारहैं
तेरे वासते यह बहार है
तुमे याद हो के न याद हो ॥ २ ॥ जो०
नरजन्मयहबहु कामका तुझको दिया बेदामका
अब भजन उसके नामका
तुमे याद हो के न याद हो ॥ ३ ॥ जो०

हरिके भजनबिनबेवफा तुझको मिलेनकवीनफा
ब्रह्मानंदका कहना सफा
तुमे याद हो के न याद हो ॥ ४ ॥ जो०

(गजल ताल ३)

जो नामका परताप है
तुमे याद हो के न याद हो ॥ टेक ॥
जबदैत्यचाबुकमारिया प्रहलादनामउचारिया
नखसे असुरको विदारिया
तुमे याद हो के न याद हो ॥ १ ॥ जो०
ध्रुवकोपितानिकलादिया हरिनाममेंमन
लादिया । उसे अचल धाम दिलादिया
तुमे याद हो के न याद हो ॥ २ ॥ जो के०
गजराज पे विपता पडी मनमे जपाजो हरी हरी
ग्रह मारके मुकती करी
तुमे याद हो के न याद हो ॥ ३ ॥ जो के०
द्रुपदीकीलाजउतारिया जबकृष्णकृष्ण

पुकारिया । ब्रह्मानंद चीर वधारिया
तुमे याद हो के न याद हो ॥ ४ ॥ जो के०

(गजल ताल ३)

जो मौतका दिन आयगा
तुमे याद हो के न याद हो ॥ टेक ॥
दुनियांमें दिलको मिलादिया
हरिके भजनको भुलादिया
मनुषा जनमको रुला दिया
तुमे याद हो के न याद हो ॥ १ ॥ जो के०
जबरोगआयसतायगा खटियामें तुझको
लिटायगा । कोई कार काम न आयगा
तुमे याद हो के न याद हो ॥ २ ॥ जो०
सुतमीतबांधवनारियां धनमालमहल
अटारियां । तेरी छूट जांयगी सारियां
तुमे याद हो के न याद हो ॥ ३ ॥ जो०
यमदूत लेकर जायगा तुझे नरक बीचगिरायगा

ब्रह्मानंद फिर पछतायगा
तुमे याद हो के न याद हो ॥ ४ ॥ जो के०

(गजल राग पहाडी)

कैसी मधुर शाम आज बंसी बजाई तैंने
ब्रजग्वालनकी सबी होश भुलाई तैंने ॥ टेक०
जमुना के तीर विमल नीर बडी टेर सुना के
तज के घर कार गोप नार बुलाई तैंने ॥ १ ॥
सखियन के संग रंग नाच करे कुंजन में
वृंदावन पास सरस रास रचाई तैंने ॥ २ ॥
सुनके मधुर गान सुर विमान चडे आयरहे
मुनियोंका छुटा ध्यान अजब तान सुनाई तैंने ३
वन के मृग पक्षी सबी मौनहुये धुन सुन के
ब्रह्मानंद चंद किरण रात सुहाई तैंने ॥ ४ ॥

(गजल राग पहाडी)

राम तेरा नाम सदा याद दिलाना मुझको

१ मेरी सुधलीजिये ओ बंसीके बजानेवाले ४

दुनियाकेकारबारमेंनिशिदिननभुलानामुझको
जान दयासिंधुतुझेदीननहितकार सदा
शरण तेरी आयपडा दास बनाना मुझको ॥१॥
नाम पतित पावन जग बीच में है तेरा
जन्म जन्म पापके बंधनसे छुडाना मुझको ॥२
मोह नदी नीर भरा तीर नजर ना आवे
डूब रहा धार प्रभु पार लगाना मुझको ॥ ३
तेरे बिना कोई नही विश्व में पालक मेरा
ब्रह्मानंद चरण कमलबीच लगाना मुझको ॥४

(गजल राग पहाडी)

कैसे करूं मैं तो प्रभु आज बडाई तेरी
ऋषिमुनियों ने गति जान न पाई तेरी ॥टेक
भूमि रवि चंद गगन सागर गिरिवर तारे
अचरज सब देख पडे विश्व बनाई तेरी ॥१॥
जल के कतरे से बदन खूब बनाया तैने
वर्णन कर कौन सके नाथ सफाई तेरी ॥ २॥

सुर नर पशु पक्षि सबी जीव हैं बालक तेरे
चौदे भुवन बीच सबी बस्तु जमाई तेरी ॥ ३
सकल जगत बीच तेरा रूप प्रभु है पूरण
ब्रह्मानंद मन में सदा आश लगाई तेरी ॥ ४

(गजल राग पहाडी)

मैं तो तेरा दास प्रभु मुझ को भुलाया कैसे
दीन बंधु दीन नाथ नाम धराया कैसे ॥ टेक
गज को जल बीच जबी ग्राह ने आकर पकडा
जाय पलक बीच कठिन बंध छुडाया कैसे ॥१
बांध के प्रल्हाद को जब थंभ से चाबुक मारा
बन के नरसिंह दैत्य फाड गिराया कैसे ॥ २
द्रुपदी की लाज सभा बीच लगे लेन जबी
खेंच खेंच हार गये चीर बढाया कैसे ॥ ३ ॥
ध्रुव ने बन जाय जपा नाम तुमारा दिल से
ब्रह्मानंद कर के दया राज्य दिलाया कैसे ॥४

(गजल राग पहाडी)

ईश तेरा रूप मुझे अब तो दिखा दे प्यारे
दिल में लगी आश मेरी प्यास मिटा दे प्यारे
ढूंडता फिरता हुं तुझे मैं तो सदा बन बन में
कौन जगा खास तेरा वास बता दे प्यारे ॥ १ ॥
कहते हैं मुनीराज सबी विश्व में तुं है पूरण
घटघटमेंतेरीजोतका दर्शनतोदिलादेप्यारे ॥ २
सुर नर पशु जीव तेरे अंश सबी हैं जग में
भेद के पडदे को मेरे दिल से हटा दे प्यारे ॥३
तेरी महिमा का सबी वेद वचन गान करें
ब्रह्मानंद नाम तेरा दिल में बसा दे प्यारे ॥ ४

(जिला रेखता ताल दादरा)

अंये राम तेरे नामका मुझको अधार है
अंधेको जैसे लाकडी तनका सहार है ॥ टेक॥
तप योग यज्ञ और कर्म बनपडे नही

---

१ वृजराज आज सांवरो बंसी बजा गयो २१ भजनतक.

कलियुगमे तेरे नामकी महिमा अपार है ॥ १
लिखनेसे राम नामके जलमें शिला तरी
कैसे मनुज न जा सके भवसिंधु पार है ॥२॥
शबरी[1]के पादनीरसे सरवर विमल हूया
छूनेसे चरणके तरी गौतमकी नार है ॥ ३ ॥
करके भरोसा मनमें राम नाम सुमर ले
ब्रह्मानंद मिटे जन्म मरण वार वार है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

शरण पडेकी लाज प्रभु राख लीजिये
करके दया दयाल गुना माफ कीजिये ॥टेक॥
गरचे कपूतहुं पिता न दूर कर मुझे
चरणकमलमे आसरा मुझकोभी दीजिये ॥१॥
तेरी खुशीका काम कोई बन पडा नही
अपने विरद को देख जरा दिलमें रीझिये ॥२
तेरे विना पालक मेरा नही है दूसरा

---

१ भीलनी

स्वारथके सबी लोक हैं किसपे पतीजिये ॥३॥
दिल बीच लगरही सदा दर्शनकी लालसा
ब्रह्मानंद मेरी बेनती अब तो सुनीजिये ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

ईश्वर तेरे दरबारकी महिमा अपार है
बंदा न सके जान तेरा क्या विचार है ॥टेक॥
पृथिवीजलोंकेबीचमे किस आसरे खडी
सूरज वा चांद घूंमते किसकेअधार है १ ईश्वर०
सागर न तीर लांगते सूरज दहे नही
चलतीहवा मर्यादसेकिसके करारहै ॥२ ईश्वर०
जलबूंदसे पैदा किया यह देह जीवका
खाताहै बोलता फिरे किसके सहारहै ॥३ईश्वर०
पंडित हकीम ज्योतिषी करते बडे जतन
ब्रह्मानंद तेरी शक्तिका पाया न पार है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

ईश्वर तेरी दयालुता जगतमे छारही

हर बातमे मुझको तेरा परचा दिखारही ॥ टेक
भूमीमे बीज डालते होता है सौगुणा
रस चांदसे पडता है सूर्यसे पका रही ॥ १ ॥
पानी अधार जीवका मिलता है सबजगा
गले न सभी वस्तु पवनसे सुका रही ॥ २ ॥
भूतलमें जीव जो बसें जलमें आकाशमें
सबको हिसाबसे सदा भोजन खिला रही ॥३॥
पापी वा नीच जीव जो तुझ शरणमे पडे
ब्रह्मानंद तिनको मोक्षका मारग बता रही ॥ ४

(रेखता ताल दादरा)

ईश्वर तेरी दयालुतासे काम सब सरे
यह जीव पराधीन सदा आप क्याकरे ॥ टेक ॥
चाहते हैं सबी लोक हम भी भूपती बने
हो वे न कोई बात व्यर्थ आश मन धरे ॥१॥
बालकपणा जोबन चला जाता है बेगसे
बूढा हुया मरणासही किसुसे नही टरे ॥२॥

जल वायु धूप जो कबी मिले नही जरा
रहे न कोई जीव पलकमें सबी मरे ॥ ३ ॥
पडते हैं बडे विघ्न योग तपके करण में
ब्रह्मानंद किस तरह कोई भवसिंधुको तरे ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

ईश्वर तेरी दयालुता हम पे अपार है
जाने नही जो पुरुष वो मूरख गवार है ॥टेक॥
तुमने रचे हैं जीव विविध भांत के सही
सबमे मनुजकी देह जगत बीच सार है ॥१॥
भूमी बिछा है बिस्तरा नदियों में जलभरा
चलती हवा दिन रात में जीवन अधार है ॥ २॥
फल फूल अन्न शाक कंद मूल रस भरे
घृत दूध दही खान पान की बहार है ॥ ३ ॥
पिता है तुं दयालु तेरे बाल हम सबी
ब्रह्मानंद तुझे धन्यवाद वार वार है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

ईश्वर दयानिधान दया दासपे करो
दीननका नाथ जान तेरी शरणमें पडो ॥टेक॥
दुनियांकी सैरमें प्रभु तुझको भुलादिया
करके कसूर माफ मेरे हाथ सिरधरो ॥१॥ई०
किये अनेक पाप पेटभरण काज मैं
सब दोषको बिसार प्रेमकी नजर भरो ॥ २ ॥
विषयोंके लोभसे फसा मायाके जालमें
बंधनको मेरे काट सबी पापपरहरो॥३॥ईश्वर०
भवसिंधुमें पडाहुं मुझे पार कीजिये
ब्रह्मानंद करे अर्ज तेरे द्वारपे खडो॥४॥ईश्वर०

(रेखता ताल दादरा)

ईश्वर तेरा स्वरूप विश्वका अधार है
तेरे हुकमसे होरहा सब कारबार है ॥ टेक॥
सूरज वा चन्द्रमा सदा उगते हैं नेमसे
दिनरात घडीपलक कालका शुमार है॥१॥ई०

पडती है धूप शीत वृष्टि वकत पे सदा
फलते हैं वृक्ष लता अपनीअपनीवार है ॥२॥ ई०
बालक जुवान वृद्धपणा होत कालसे
मरणा न देहका कोई सके निवार है ॥३॥ ई०
तप योग यज्ञ जतन सबी कठिन हैं बडे
ब्रह्मानंद जगतबीच तेरा भजन सार है ॥४॥ई०

(रेखता ताल दादरा)

अब तो करो दया दयाल देर हो गई
सब बीत गई रात तो सवेर हो गई ॥ टेक ॥
जन्म जन्म का मैं तेरा दास होरहा
सुन लीजिये पुकार मेरी ढेर हो गई १ ॥
खाली गया न कोई तेरे दरपे आनकर
किसमत मेरीमें क्या यह आज फेर होगई ॥२
कृपाकटाक्षसे मुझे इकबार देखले
जरा सी मेरी अर्ज क्या सुमेर हो गई ॥ ३ ॥
अगर कसूर वार हुं तो माफ कीजिये

ब्रह्मानंद तेरे चरण की मैं चेर हो गई ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश दासपे दया करोगे या नही
सब पाप तापको मेरे हरोगे या नही ॥टेक॥
शरणमे तेरी आनपडा जान आसरा
सिरपे मेरे अब हाथको धरोगे या नही ॥अये॥
भवसिंधु है अपार पार तीर दूर है
पकडके बांहको मेरी तरोगे यानही ॥२॥ अये०
व्यापक है तेरा रूप सबी विश्वमें भरा
हिरदेमे मेरे आयके विचरोगेयानही ॥३॥ अ०
जाउं कहां मैं छोड तुझे दूसरी जगा
ब्रह्मानंद प्रेमकी नजर भरोगे यानही॥४॥अये०

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश मेरी बेनती अब तो सुनो सही
दिन बीत गया बातमें अब रात आगई ॥टेक॥
मिली मनुजकी देह तेरे भजनके लिये

घर काम काज बीच तेरी याद ना रही ॥१॥
बालक था फिर जुवान हूया विरध होगया
मनकी मिटी न आश होत है नईनई ॥ २ ॥ अ०
आयाथा लाभके लिये दुनियाकी सफरमें
चोरोंने लिया लूट पास खरचभी नही ॥ अये०
जनम मरणके फेरमें पडाहुं मैं सदा
ब्रह्मानंद काटो फंद नाद देरियां भई ॥४॥अ०

(रेखता ताल दादरा)

अये विश्वपति नाथ पकड हाथ हमारा
शरणमे पडा आन तेरो जान सहारा ॥ टेक ॥
काल की नदिया जो मोहनीरसे भरी
मद कामक्रोधलोभ बसें ग्राहअपारा ॥१॥ अ०
सब देव दनुज मनुज जीव जात हैं बहे
तेरी दया विना न मिले पार किनारा ॥२ अ०
क्षणभंग है शरीर मर्त्य लोकमें सही
मायाके जालमें फसाहै जीवबिचारा ॥ ३ ॥अ०

तुमने रची है विश्व तुंही पालना करे
ब्रह्मानंद तेरे नामबिना झूठ पसारा ॥४॥ अ०

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश तेरा नाम सर्व पाप हरण है
भवसिंधु में पडे हुये को पार तरण है ॥टेक॥
कारण समस्त विश्वका धारण करे सदा
सब जीव जातका प्रभु तुं एक शरण है ॥१॥अ०
तेरे बिना खाली नही जगा है जगतमें
घट घट में तेरी जोतका परकाश करण है ॥२॥
तेरे संकल्प से बनी रचना नई नई
सबका तुंही पिता दयाल विश्व भरण है ॥३॥
तेरे कृपाकटाक्षसे दुख दूर हों सबी
ब्रह्मानंद मोक्ष धाम तेरा विमल चरण है॥४अ०

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश मेरी बेनती को मान मान मान।
तेरे चरण का दास मुझे जान जान जान ॥टेक

महिमा तेरी अपार नही पार वार है
सब वेद ग्रंथ पंथ करें गान गान गान ॥१॥
व्यापक है तेरा रूप सबी विश्वमें सदा
जाने न कोई जीव बिना ज्ञान ज्ञान ज्ञान ॥२॥
मालिक सबी जहान का पालक भी है तुंही
मुनिराज तेरा धरें सदा ध्यान ध्यान ध्यान॥३॥
दाता तेरे समान जगत में न दूसरा
ब्रह्मानंद तेरी भक्ति करो दान दान दान ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश तुझे नित्य धन्यवाद हमारा
सब विश्वका तुंही है प्रभु एक अधारा ॥टेक॥
तुझ ने दिया दयाल हमें देह मनुजका
सब जीव जूनसें बडा है प्राण पियारा ॥१॥अ०
सब इंद्रियां हमारी बडी कुशल काम में
हमरे लिये रचा है विषयभोग नियारा॥२॥अ०
भूमी अगन समीर नीर गगन तारका

रविचंद्र सबसें दे रहे हो हमको सहारा॥३॥अ०
पापी हैं हम बडे जो तेरा नाम ना जपें
ब्रह्मानंद करो माफ बाल जान तुमारा ।४।अये०

(रेखता ताल दादरा)

शंकर तेरी जटासे चले धार गंग है
उठतेहैं बारबार बारिके तरंग है ॥टेक॥ शंकर०
गलेमें मुंडमाल है कानोंमें हैं कुंडल
खानेको कंद मूल फल पीनेको भंग है ॥१॥
मृगछाल कमरमें कसी वृषराजपे चडे
मस्तकमें चंद्रकी कला विभूति अंग है ॥ २ ॥
डमरु त्रिशूल हाथमें गिरजा है अंकमें
त्रिनेत्र भुजा चार कंठ नील रंग है ॥ ३ ॥
कैलासमें निवास है गणसाथमें रहें
ब्रह्मानंद अपने दासके सदाही संग है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

अये कृष्ण तेरे नामपे कुर्बान हो रही

सूरतको तेरी देख परेशान होरही ।।टेक।। अ०
सिर पर वो मोरकी मुकुट कानोमें हैं कुंडल
वो अधर बंसरीकी मधुर तान होरही ।। १ ।।
फूलोंकी माल है गले में तिलक भाल है
मुखचंद मंदहाससें बेजान होरही ।। २ ।।अ०
नहि खान पानकी सुधी न लोकलाज है
तेरे दीदारके लिये हैरान हो रही ।। ३ ।।अ०
न भूलिये मुझे दीननके नाथ तुम सुने
ब्रह्मानंद तेरे दरकी मैं दरबान हो रही ।।४।।

(रेखता ताल दादरा)

अये शाम तेरी बंसरीने क्या सितम किया ।
तनकी रही न होश मेरे मनको हर लिया।। टेक
बंसीकी मधुर टेर सुनी प्रेमरस भरी
ब्रजनार लोकलाज कामकाज तजदिया ।।१।।
नभमें चडे विमान खडे देव गण सुनें
मुनियोंका छुटा ध्यान प्रेम भक्तिरस पिया।।२।।

पशुवोंने तजा घास पंछी मौन होरहे
जमुनाका रुका नीर पवन धीर होगिया ॥३॥
ऐसी बजाई बंसरी सबलोक बश किये
ब्रह्मानंद दरस दीजिये मोहे रासके रसिया॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

ब्रजराज तेरे काज गई लाज हमारी
बंसीकी सुनी आज जो अवाज पियारी ॥टेक॥
संगमें हैं ग्वालबाल नंदलाल सांवरो
जमुनाके आसपास रची रासबिहारी ।१। ब्रज०
सिर मोरमुकुटधार गलेहार पहनके
करते हैं नाचरंग सखासंग मुरारी ॥२॥ब्रज०
दे दे के मधुरतान करे गान मनोहर
सुनके चली ब्रजनार सदन कार बिसारी३ब्र०
हरिका मुखारबिंद देख चंदकी छबी
ब्रह्मानंद मनआनंद भई गोपकुमारी ॥४॥ब्र०

(रेखता ताल दादरा)

अये राम तेरा नाम परमधाम दुवारा
लेताहूं आठयाम और काम बिसारा ॥ टेक ॥
दुनियांके झूठ कारबार सार है नही
सुत भाई बंधु नार न हितकार हमारा ॥ १ ॥
शरणमे पडा आन धरूं ध्यान चरणका
प्रभु दीजे भक्तिदान दास जान तुमारा । २।अ०
दया करो दयाल विश्वपाल अब सही
हरो मायाका जाल मिटे काल पसारा ।३। अ०
तेरे दरसकी प्यास मेरी आश पूरिये
ब्रह्मानंद करो नाश मोहपाश अपारा॥४अये०

(रेखता ताल दादरा)

अये राम तेरी शाम छबी दिल में बस रही
मुखचंदसे सदा मधुर सुधा बरस रही ॥ टेक॥
सिरपे सुवर्णका मुकट रतन जडा हुया
कानों में मकर कुंडल मंद मंद हस रही ॥१॥

गल मोतियों की माल तिलक भाल में लगा
मणियोंकी मेखला सुंदर कटीमें कस रही ॥२
हाथों में धनुष बाण है तन पीत पट धरे
शुभ वाम अंगमें जनकसुता बिलस रही ॥ ३
भरतके हाथ छत्र है लछमन चमर करे
ब्रह्मानंद मेरी जांन दरसको तरस रही ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

नरसिंघ तेरा रूप मेरे दिल समा रहा
व्यापकपणा जगमें तेरा सबको बता रहा ।टेक।
नरका अकार संगमें मृगराज की छबी
निकलके थंभ बीचसें गर्जन सुना रहा॥१॥न०
बिजलीसी जीभकी छटा आंखें अगन भरी
धरणी पे दैत्यराजको नखसें गिरारहा ।२।नर०
भगतकी करी पालना देवनका दुख हरा
शरणागतोंकीबेनतीका फल दिखारहा ।३।न०
सुमरण करे जहां कोई तुं हैं उसी जगा

ब्रह्मानंद तेरे चरणमें मनको लगारहा ॥४॥न०

(रेखता ताल दादरा)

सुनरी सखी तुझसे कहुं अपना हवाल है
दिल चोर लिया आज मेरा नंदलाल है ॥टेक
यमुनाके तीरपे खडा कदमकी छायमें
सिरमोरकी मुकट धरे संग ग्वालबाल है॥१॥
बंसीकी धुन सुनाय मुझे प्रेमवश किया
घरबार कामकाज न तनकी संभाल है ॥ २॥
अगर वो सांवरी सूरत नजर न आयगी
मेरी जांन जांन जानेका मुझको खयाल है॥३॥
करके दया दयाल दरस दीजिये मुझे
ब्रह्मानंद तेरे चरणमें येही सवाल है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

तेरे दिदारके लिये बंदा हैरान है
सुनते नही हो अरजक्यों दयानिधान है ॥टेक॥
काशी गया दुवारका मथुरामें फिर लिया

मिला नही मुझको तेरा असली मकान है ॥१॥
फिरा तेरी तलाशमें जंगल पहाड में
देखा नही तेरा किसी जगा निशान है ॥ २ ॥
पूछा जो आलिमोंसे तेरा खास कर पता
रहता है तेरेपास यह उनका बियान है ॥ ३ ॥
कर मिहरकी नजर मुझे अब दरस दीजिये
ब्रह्मानंद तेरे चरणपे कुर्बान जान है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

आशक हूया जो मन तो क्या माशूक दूर है
दिलमें बसा दिलदारकी चशमोंका नूर है ।टेक
सिरको चडा दिया जबी कदमों पे यार के
घरबारजानमालकी फिर क्या जरूर है ॥१॥
गरचे सरे दरबारमें मुशकिल है पहुंचना
घायल हुया हटता नही रणबीच शूर है ॥२॥
बाना फकीरी पहनके फिरणा जंगल पहाड
गुरुके चरणको चुमना फिर क्या गरूर है ॥३॥

दुनियांकी हवश छोडदे कर कैद नफसको
ब्रह्मानंद घटमें देख ले हाजर हजूर है ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

आशकहूया जोदिलतो क्या दुनियांकी शरमहै
करनाइशककाजगतमें नहि सहजकरम है। टेक
दीपक को देखके पतंग प्रेम वश भया
पडके अगनमें जलगया क्या शीत गरम है ॥१
भ्रमर सुगंधके लिये फूलनमें जा बसा
फस के कमल में रह गया गरचे वो नरम है ॥२
जाकरके रण में शूरमा आगे चरण धरे
घायल हूया बदन नहिं मरणेका भरम है ॥३॥
ईशु तथा मनसूर को शूली चडा दिया
ब्रह्मानंद गई जान तो छोडा न धरम है ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

आशक हूया जो दिल तो क्या कायरपणा करे
ऊखल में दिया शीश तो चोटनसेक्याडरे ॥टेक

माशूक का मिलना बडा है कठिन समझले
पावेगा सो दिदार जोजीता हूया मरे ॥ १ ॥
अगर मुकाम यार के जाना जरूर है
जाता है वकत बीतता फिर धीर क्या धरे ॥२॥
च्हाता है देखना जबी दिलदारको अपने
दुनियां कि तरफ में सदा फिर क्यों नजर भरे
तृष्णा नदी की धार में जो डूबता फिरे
ब्रह्मानंद वो भवसिंधुनीर पार क्या तरे ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

किस देवताने आज मेरा दिल चुरालिया
दुनियांकी खबर नारही तनको भुलादिया। टेक
रहताथा पासमें सदा लेकिन छिपाहूया
करके दया दयालने पडदा उठालिया॥ १ ॥
सूरज वो था न चांद था बिजली न थी वहां
यकदम वो अजब शानका जलवादिखादिया२॥
फिरके जो आंख खोलकर ढूंडन लगा उसे

गायत्र था नजरसे सोई फिरपास पालिया ॥३॥
करके कसूर माफ मेरे जन्मजन्मके
ब्रह्मानंद अपने चरणमें मुझको लगालिया ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

जिसको नही है बोध तो गुरुज्ञान क्या करे
निजरूपको जाना नही पुराण क्या करे ॥ टेक
घटघटमें ब्रह्म जोतका परकाश हो रहा
मिटा न द्वैतभाव तो फिर ध्यान क्या करे ॥ १
रचना प्रभुकी देखके ज्ञानी बडे बडे
पावे न कोई पार तो नादान क्या करे ॥ २ ॥
करके दया दयालने मनुषा जनम दिया
बंदा न करे भजन तो भगवान क्या करे ॥३॥
सब जीव जंतुवों में जिसे है नही दया
ब्रह्मानंद बरत नेम पुण्य दान क्या करे ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

श्रीरामचंद्र नंदनंदन अब दया करो

शरण में पडो आन तेरो जान आसरो ॥ टेक
सिर पे सुवर्ण का मुकुट मोरों की पांख का
गल मोतियों की माल है बनमाल गल धरो १
हाथों में धनुष बाण है बंसी अधर धरे
जनकसुता है संग रंग राधिका भरो ॥ २ ॥
लंका पुरी में जाय के मथुरा गमन किया
रावण का किया नाश प्राण कंस को हरो ॥३॥
सरजू के नीर में खडा जमुना के तीर पे
ब्रह्मानंद छबी युगल मेरे नैन में फिरो ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

जगत में एक सार है धरम धरम धरम
करो परोपकार के करम करम करम ॥ टेक ॥
मानुष की देह पाय के हरि नाम ना लिया
बिरथा जनम गमा दिया शरम शरम शरम ॥ १
तेरे शरीर में है दिव्या जोत ईश की
गुरुके वचन से समझ ले मरम मरम मरम २

दुनियां की सबी बस्तु नाशवान थिर नही
स्वपने समान देखले भरम भरम भरम ॥ ३ ॥
व्यापक है सबी विश्वमें पर ब्रह्म जान ले
ब्रह्मानंद मिले मोक्षपद परम परम परम ॥ ४

(भजन राग पहाडी)

निरंजन[1] पद को साधु कोई पाता है। टेक
मूलद्वारसेखेंचपवनको उलटापंथचलाता है
नाभीपंकजदलमेंसूती नागनजायउठाताहै । १ ।
मेरुदंडकीसीडीबनाकर सुंनशिखरचडजाताहै
अमरगुफामेंजायविराजे जगमगजोतजगाताहै
शशीमंडलसेंअमृतटपके पीकरप्यासमिटाता है
गगनमहलमेंजाकरसोवे सुरतासेजबिछाताहै ३
सबकर्मनकीधूनीजलाकर तनमेंभस्मरमाताहै
ब्रह्मानंदस्वरूपमगनहो आपहीआपसमाताहै ४

---

१ निरंजन बनमें योगी एक रमताहै ६ भजन

(भजन राग पहाडी)

निरंजन धुन को सुनता है संत सुजान ॥ टेक
बैठइकंतजमाकरआसन मुंदलियेदोऊकान
झीनीधुनमेंसुरतलगावे करतानादपिछान ॥ १
घंटा शंख बंसरी वीणा बाजे मधुरी तान
ताल मृदंग नगारा पीछे गर्जन मेघ समान २
दिनदिनसुनसुननादध्वनीकोहोवेमनगलतान
ब्रह्मजोतघटमेदरसावे विसरेकायाभान ॥ ३ ॥
तन मनकी दुविधा सब मेटे करे निरंतर ध्यान
ब्रह्मानंदमिटेभवबंधन पावेपदनिर्वान ॥ ४ ॥

(भजन राग पहाडी)

निरंजन घर का भेद सुनो सब संत । टेक ।
नहीकाशीनहीपुरीद्वारकानहीगिरिशिखररहंत
नहिपतालनहीस्वर्गलोकमेंक्योंफिरताभरमंत १
कायानगरीबीचमनोहर त्रिकुटीमहलसुहंत
तिसकेऊपरबसेनिरंजन जगमगजोतजगंत २ ॥

नेत्रबंदकरदृष्टिजमावे निशदिनध्यानधरंत
आसनथिरकरसाधनकीजे बैठेभवनइकंत ॥३॥
पहलेपहलेरविशशितारे बिजलीकीचमकंत
ब्रह्मानंदस्वयंभूजोती फिरपीछेद्दरसंत ॥ ४ ॥

(भजन राग पहाडी)

निरंजन माला घट में फिरे दिनरात । टेक ।
ऊपर आवे नीचे जावे श्वास श्वास चल जात
संसारीनरसमझेनाही बिरथाउमरविहात ॥ १ ॥
सोहंमंत्रजपेनितप्राणी विनजिव्हाविनदांत
अष्टपहरमेंसोवतजागत कबहुंनपलकरुकात २
हंसा सोहं सोहं हंसा वार वार उलटात
सतगुरुपूराभेदबतावे निश्चलमनठहरात ॥३॥
जोयोगीजनध्यानलगावे बैठसदापरभात
ब्रह्मानंदमोक्षपदपावे फेरजन्मनहीआत ॥ ४ ॥

(भजन राग पहाडी)

निरंजन गुरु का ज्ञान सुनो नर नार । टेक ।

क्याखोजेबनपर्वतकंदर क्याखोजेजलधार
तेरेतनमेंदेवविराजे उलटसुरतसंभार ॥१॥
पांच तत्व की है जड काया चेतन जीव अधार
ईश्वरअंशजीवअविनाशीसतचितरूपविचार २
सुरनरदानवपशुपक्षी सबविश्वसमाननिहार
अंदरबाहिरघटघट पूरणएकब्रह्मनिर्धार ॥ ३ ॥
ऊंचनीचसबभेदमिटावो द्वैतभावसबटार
ब्रह्मानंदसंतसंगतसे दृढनिश्चयमनधार ॥ ४ ॥

(भजन राग पहाडी)

लगा ले प्यारे राम भजन से प्रीत ॥ टेक ॥
मातपितासुतबांधवनारी सबदोदिनकेमीत
परमेश्वरनिजबंधुतुमारो सदारहेसंगीत ॥ १ ॥
अपनेअपनेस्वारथलागे यहसबजगकीरीत
परमारथकेसाधनकारण सबहोवेंविपरीत ॥ २
सकलजन्मकेपापनिवारे हरिकानामपुनीत
भवसागरकेतारणकारण सुमरोमनकोजीत ३

तनधनजोबनकामद त्यागोसबसेरहोविनीत
ब्रह्मानंदशरणपडप्रभुकी सबदुखजावेंबीत ४ ॥

(राग माड ताल दादरा)

मेरी बिनती सुनो नाथ तेरी शरण में पडो॥टेक
मात तात भाई बंधु स्वारथ के सब मीत
कोई सहायक है नही रे झूठी जगकी प्रीत ॥१॥
तेरी शरण में पडो०

भव सागरमें भटकिया रे पाया दुख अपार
अब तो दया करके प्रभुलीजिये मुझे उबार ॥२
तेरी शरणमें पडो०

तीरथ बरत पुण्य दान किया नही शुभ काज
दासतुमारो जानके जी राखिये मेरी लाज ॥३
तेरी शरणमें पडो०

अवगुण मेरे ना गिणो जी पतित पावनहार

ब्रह्मानंदतेरे बिना मेरा कौन करे निस्तार॥४॥
तेरी शरणमें पडो०

(राग माड ताल दादरा)

तेरी उमर बीती जाय रे प्राणी राम सुमरले। टे०
बुंद बुंद टपकता रे ज्यों अंजलीका नीर
पल पल छिन छिन मे तेरा रे छीजत जाय
शरीर ॥ १ ॥ प्राणी राम सुमरले०
हाथी घोडे पालकी रे दासी दास अनेक
महल खजाना नारियां तेरे संग न जावे एक २
प्राणी राम सुमरले०
चार दिना की जिंदगी रे जासी हंस बिलाय
करले जो कुछ हो सके रे फिर पीछे पछताय ३
प्राणी राम सुमरले०
खाली आया जगतमे रे खाली जावन हार
ब्रह्मानंद भजन बिना तेरा झूठा सब विचार४
प्राणी राम सुमरले०

(राग माड ताल दादरा)

जगदीश्वर जगत बीच तेरा नाम सार है ॥ टेक
बडे बडे भूपती रे सेनाके सरदार
काल सबीको खा गया रे रह्या न एक अधार १
तेरा नाम सार है०
रूपवंती रानियां रे करती नित्य सिंगार
सो तन जर्जर हो गये रे दिये चितामें डार ॥२
तेरा नाम सार है०
रावण जैसा सूरमा रे जिनके मन हंकार
भूमीमें सब मिल गया रे पलक न लागीबार ३
तेरा नाम सार है०
सूरज तारे चंद्रमाजी नश्वर सब संसार
ब्रह्मानंद सदा रहे प्रभु तुं साचा करतार ॥४॥
तेरा नाम सार है०

(राग माड ताल दादरा)

नर करलेरे सतसंग तेरा जन्म सफल होय ॥ टेक

काशी गया दुवारका रे कोटिन तीरथ नाय
विन गुरुके उपदेशसे रे मन की मैल न जाय १
तेरा जन्म सफल होय०
सिर पर जटा रखाय के रे अंग विभूति रमाय
छाप तिलक तनमें कियेरे मोक्ष कबी नहि पाय
॥ २ ॥ तेरा जन्म सफल होय०
सदा रहे बनवास मे रे कीनो तप अपार
मनकी तृष्णा ना मिटी रे मिले न सर्जनहार ।३
तेरा जन्म सफल होय०
तजके मनकी भटकना रे संतनकी कर सेव
ब्रह्मानंद मिटायगा तेरा भवबंधन गुरु देव ॥४
तेरा जन्म सफल होय०

(राग माड ताल दादरा)

मनमोहन सुंदर शाम प्यारे दरस दीजिये ॥ टे०
हमको हरि छोडके जी जाय बसे परदेश
बन बन ढूंढन जांयगीरे कर जोगनका वेश॥१

प्यारे दरस दीजिये०
प्रेमरस पिलाय के जी भूल गये ब्रजराज
तेरे कारण सांवरो जी गई हमारी लाज ॥२॥
प्यारे दरस दीजिये०
जैसे मछली जलविना रे तडपत है दिन रैन
तेरे दर्शन के बिना जी नही हमे अब चैन॥३
प्यारे दरस दीजिये०
सुनो हमारी बेनती रे आय मिलो इक बार।
ब्रह्मानंद प्रभु तुमारे चरणनकी बलिहार ॥४॥
प्यारे दरस दीजिये०

(राग माड ताल दादरा)

प्रभु हमारा सुनोपियारा अर्ज हमारी आज।टेक
तुं पिता सब जगतका जी सबका पालनहार
गति तुमारी मतिहमारी लखे नही महाराज।१

---

१ वो छबि कब मिलेगी कथो नंदलालकी ६ भजनतक।

भूमी पवन अगन गगन सूरज चांद सितार
तेरे बनाये लोकबसाये धन्य तुमारा साज॥२॥
देवदनुजमनुज जीव सबी तुमारे दास
सबसे न्यारा रूप तुमारा तुं सबका सिरताज॥३
ब्रह्मानंद शरणमें तेरी आय पडा दयाल
काटो हमारेबंधनसारे राखो हमारी लाज॥४॥

(राग माड ताल दादरा)

हरि तुमारी छबी पियारी कब दिखावोगे ॥टेक
सिरपे मुकुट धारके जी रतनसे जडा
गलमें माल तिलक भाल में लगावोगे ॥ १ ॥
मकर कुंडल पीत बसन कमर मेखला
कमलनैन मधुरबैन कब सुनावोगे ॥ २ ॥
शंख चक्र गदा पद्म हाथमें धरे
लक्ष्मीसंग श्यामरंग कब सुहावोगे ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद करके प्रभु दासपे दया
पगमें कडे गरुडचडे बेग आवोगे ॥ ४ ॥

(राग झाड ताल दादरा)

ऊधो हमारा प्राण पियारा नंदलाल है ॥ टेक
व्रजमें धर्महेत हरि आप अवतरे
सांवरी सूरत मोहनीमूरत दृगविशाल है ॥१॥
प्रेमभक्तिके अधीन नाथ जगतके
हमसे प्रीत तजकेरीत करी दयाल है ॥ २ ॥
छोड हमको दीनबंधु क्योंचलेगये
दिवसरात उनकी बात का खियाल है ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद करे अरज हाथ जोडके
दयानिधान भक्तिदान का सवाल है ॥ ४ ॥

(राग झाड ताल दादरा)

सुनो हमारा भाई पियारा बात करम की॥टेक॥
मान वचन केकई रे दिया पिता बन वास
प्राण गमाया सत्य निभाया नीति धरमकी १
राज्य तिलक त्यारियांरे कछु न आई काम
विधि विचारी गति नियारी कठिन मरमकी२

कर्म लिखा सोई होत है रे कोई न मेटनहार
निष्फल सारी शोच तुमारी मनके भरमकी ३
अपना किया भोगना रे नही किसीका दोष
ब्रह्मानंद शरण पडो प्रभुनाथ परम की ॥ ४

(राग माड ताल दादरा)

तुम पढोरेतोता क्यासुखसोता रामरामराम ।टेक
पिंजरेमें बैठ केरे भूल गया निज धाम
लालचके वशमें पडा रे परवश आठो याम १
साथी तेरे चल गये रे कोई न आया काम
जीव अकेला फस गया रे छूट गया घर गाम२
मौत बिल्ली ताक में रे बैठी बीच मुकाम
अवसर तेरा देख के रे करसी काम तमाम ३
बोली तेरी रसभरी रे रटो निरंजन नाम
ब्रह्मानंद मिटें सब बंधन पावें पद विश्राम ४

(राग माड ताल दादरा)

तुमपढोरी मैना मधुर बैना हरिकानामसार। टेक

तजके तेरा मालिया री जंगल करें विहार
एक जगां थिर ना रहैं री फिरती डारनडार१
मीठे मीठे फल पके री खावें चूंच पसार
बाज झपेटा मारसी तेरी छूटे बाग बहार ॥२
कठिन लोह पिंजरा री बंद किये सब द्वार
मुशकिलतेराछूटनारी मनमें शोच विचार ॥३
कोटि जतन करभलेरी होय नही निस्तार ।
ब्रह्मानंद भजो जगदीश्वर बंध छुडावन हार ४

(राग माड ताल दादरा)

राम सुमर राम तेरे काम आयगा ॥ टेक ॥
भाईबंधु राज पाट महल माडियां
अंतकालमें न कोई संग जायगा ॥ १ ॥
दुनियां के कारबारमें तुं भूलया फिरे
चिडियाको जैसे बाज तुझे काल खायगा ॥ २
मनुजका शरीर बडे भाग्यसे मिला
जब बीत गया काल तो फिर क्या बनायगा ॥३

कर ले जतन हजार हरी नामके बिना
कहता है ब्रह्मानंद नही मोक्ष पायगा ॥ ४ ॥

(राग माड ताल दादरा)

राम सुमर राम उमर बीत जायगी ॥ टेक ॥
एक एक श्वास बडे मोलका मिला
भजन बिना व्यर्थ देह नाश पायगी ॥ १ ॥
वारवार जीया जून भटकता फिरा
मोक्षकी खिडकी न फेर हाथ आयगी ॥२॥
करले प्रभुका भजन नही देर कर जरा
आवेगी जबी मौत पलक ना रुकायगी ॥३॥
सुमरण करे जो रामनाम प्रेमभावसें
ब्रह्मानंद मोहपाश सहज में कटायगी ॥ ४ ॥

(राग माड ताल दादरा)

मोहनी मूरत शामकी कब नजर आयगी।टेक
रास हास कर बिलास मनको हरलिया
सखी बंसरीकी मधुर धुनी कब सुनायगी ॥१॥

प्रेमपाश डार गले वो चले गये
फिर आवनेकी खबर मुझे कब बतायगी ॥२
गोकुलमें फिर न आये नंदलाल जो कवी
बिन दरस तरस तरस मेरी जान जायगी ॥३॥
तज कामकाज लाज धरो ध्यान चरणका
ब्रह्मानंद प्रेम भक्ति नाथको मिलायगी ॥४॥

(राग भैरवी ताल चलित)

हरि नाम सुमरले हरि नाम सुमरले
हरि नाम सुमरले पछतायगा रे । टेक ।
मानुष काया दुर्लभ पाया
पलक बीच चल जायगा रे॥ १ ॥ हरिनाम०
माल खजाना संग न जाना
लोक लूट कर खायगा रे ॥ २ ॥ हरिनाम०
सुत परिवारा बांधव प्यारा

---

१ तेरी चलबल है न्यारी तेरी कलबल है न्यारी तेरे नैनाने मारी कटारिया जान । ५ तक

अंत काम नही आयगा रे ॥ ३ ॥ हरिनाम०
ब्रह्मानंद शरण पड प्रभु की
सब भव बंध मिटायगा रे ॥ ४ ॥ हरिनाम०

(भैरवी ताल चलित)

मेरी सुनले अरज मेरी सुनले अरज
मेरी सुनले अरजियां प्यारे राम । टेक ।
सब जग स्वामी अंतर यामी
विश्व चराचर के सुख धाम ॥ १ ॥ मेरी सुन०
नाम तुमारा भव भय हारा
सुमरण से हो पूरण काम ॥ २ ॥ मेरी सुन०
दीन दयाला जन प्रतिपाला
ध्यावत मुनि गण आठोंयाम ॥३॥ मेरी सुन०
ब्रह्मानंद शरण में आयो
चरण कमल में दे विश्राम ॥ ४ ॥ मेरी सुन०

(भैरवी ताल चलित)

तेरी बीती उमर तेरी बीती उमर

तेरी बीती उमरिया जायगी रे । टेक ।
दिन दिन जावे काल विहावे
फिर के गई नही आयगी रे ॥ १ ॥
लाड लडाई साज सजाई
देह पडी रह जायगी रे ॥ २ ॥ तेरी बीती०
महल अटारी सुंदर नारी
माया सकल बिलायगी रे ॥ २ ॥ तेरी बीती०
ब्रह्मानंद भजन कर हरिका
यमकी पाश कटायगी रे ॥ ४ ॥ तेरी बीती०

(भैरवी ताल चलित)

मेरो सुन ले बचन मेरो सुन ले बचन
मेरो सुनले बचन नर हित कारी । टेक ।
जग में आया नर तन पाया
वृथा उमर मत खो सारी ॥ १ ॥ मेरोसुन०
झूठी काया झूठी माया
झूठ जगत की है यारी ॥ २ ॥ मेरोसुन०

यह संसारा नश्वर सारा
क्या ममता मन में धारी ॥ ३ ॥ मेरोसुन०
ब्रह्मानंद भजन कर हरि का
सब सुख दायक दुख हारी ॥ ४ ॥ मेरोसुन०

(भैरवी ताल चलित)

प्रभु तेरी शरण प्रभु तेरी शरण
प्रभु तेरी शरण में आया हुं । टेक।
भव जल लहरी नदिया गहरी
कर्मन बेग बहाया हुं ॥ १ ॥ प्रभुतेरी०
परबल माया जाल बिछाया
चारों तरफ फसाया हुं ॥ २ ॥ प्रभुतेरी०
क्षण भंगारा विषय विकारा
जन्म जन्म भरमाया हुं ॥ ३ ॥ प्रभुतेरी०
ब्रह्मानंद दास दासन का
चरण कमल लिपटाया हुं ॥ ४ ॥ प्रभुतेरी०

(रागमारवाडी)

राम[1]रटलेरेप्राणी पलपल उमरा जाय विहानी
बूंदबूंद टपके जैसे अंजलि का पानी रे ॥टेक
गर्भवाससें बाहिर आया
बडेभाग्य मानुषतन पाया
मायामोहभुलायगयो प्रभुसुधविसरानी रे ॥१
हाथीघोडेमहलअटारी मालखजानासंपतभारी
श्वासनिकलजबगया पलकमें होयविगानीरे ॥२
क्या सुख सोवे सेज बिछाई
काल खडा सिर ताक लगाई
जैसे बाज झपट चिडिया लेजाय उडानीरे ३
रामनामजोजननितगावे ब्रह्मानंद परमपद पावे
जन्ममरणदुखजाय सकलभवपाशमिटानीरे ।४

(राग मारवाडी)

झूठसबजगतपसारा सोच समझनरदेखविचारा

---

१ जगत स्वपने की मायारे ७ भजन ।

मूरख गर्व करे मनमें हरिनाम बिसारारे॥टेक॥
बडेबडे राजाअरुरानीदेसखजानेहुकमदिवानी
भूमीमें मिल गया रह्या नहि एक इशारा रे ॥१
अर्जुनभीमकर्णसेभारे शूरबीर रणगर्जनहारे
काल बलीसें हार सबी परलोकसिधारा रे ॥२
पंडितयोगीराजघनेरे रूपवंत गुणिगण बहुतेरे
अपनी गाय बजाय गये जगमें दिन चारारे ३
धन जोबन गुण थिर नहि कोई
ब्रह्मानंद नाश सब होई
परमेश्वरका नाम सुमर सबसे हो न्यारारे ॥४॥

(राग मारवाडी)

देख नजरोंसे भाई परमेश्वर तेरे तन मांही
अंग अंग जैसे फूलनमें गंध समाई रे ॥टेक॥
क्या मथुरा क्या काशी जावे
जाय हिमालय क्यों दुखपावे
करसतसंग विचारभेद सतगुरुसें पाई रे ॥१॥

हाडमांसका पिंजर काया
चेतनके बल फिरे फिराया
बाजीगर जैसे पुतली को नाच नचाई रे ॥ २
कस्तूरीमृगनाभविराजे घाससूंघताबनबनभाजे
बिन जाने मूरख बिरथा बाहिर भटकाई रे ।३
विषयोंमेंतुंसुखको माने ब्रह्मानंदस्वरूप न जाने
उलट सुरत संभाल भरम मनका मिट जाई रे

(राग मारवाडी)

नाथ मैं शरण तुमारी आज सुनोप्रभुअरजहमारी
दीनदयालदयानिधि भक्तनकेहितकारीरे । टेक
गजको पकड ग्राह वश कीना
मनमें तुमरा सुमरण कीना
पहुंचे गरुड सवार पलकमें पाश निवारी रे १
राजाने ध्रुवको निकलाया
बनमें जाकर ध्यान लगाया
दे दर्शनकर दिया अचल पदमें अधिकारीरे २

प्रल्हादभक्त ने नाम उचारा
पिता बांध चाबुक से मारा
नरसिंघ रूप बनाय दैत्यकी देह विदारीरे ॥३
भवसागर में नीर अपारा
ब्रह्मानंद करो प्रभु पारा
तुम बिन कौन सहाय करे जगदीश मुरारीरे।४

(राग मारवाडी)

सुनो जगदीशपियारा विनतीहमरीपिताहमारा
हम बालक तुझ शरण पडे दे चरण सहारारे॥टेक
तुमरी महिमा हम क्या जानें
नेति नेति कर वेद बखाने
ऋषिमुनिगण सब ध्यानधरें नहिपावतपारारे १
सकल जगत तुमने उपजाया
नानाविध सब जीव बनाया
खेल रचा करदेख रहा सबसें हो न्यारा रे ॥२
अचरज प्रबल तुमारी माया

जिसमें सब जग फिरे भुलाया
दया नजर तुमरी बिन कबहुं न होय उधारा रे
रूप तुमारा है अविनाशी
ब्रह्मानंद सकल घटवासी
निर्मल निर्गुण निर्विकार सब विश्व अधारा रे ४

(राग मारवाडी)

करोसतसंगपियारा जन्मसफलहोजाय तुमारा
संशय सकल मिटाय ज्ञानका होय उजारारे॥टेक
मूरत पूजन में मन लावे
कोटिन तीरथ में फिर आवे
मनका भरम न जाय बिना सतसंग विचारारे १
यज्ञ दान जप तप बहु भारी
छाप तिलक माला गलधारी
ज्ञानबिना नहि मोक्ष होय कर जतन हजारारे२
करे अनेक कर्म शुभ कोई
सतसंगत सम फल नहि होई

घडी पलक छिनमांहि होय भवसागर पारारे॥३
निशि दिन हरि चर्चा जहां होई
ब्रह्मानंद संग शुभ सोई
परमेश्वर के ध्यान भजनसें हो निस्तारारे ॥४॥

(राग मारवाडी)

सखीसुनहालहमारा शामसुंदरमोहेलगेपियारा
खान पान सुध भूलगई घरकाज विसारारे ॥टेक
मैं जमुनाजल भर के आई
मग में देखे आज कन्हाई
पीतांबर तन मोर मुकुट सिर ऊपर धारारे ॥१
बनमाला गल बीच सुहावे
बंसी अधर लगाय बजावे
सुन मीठी धुन प्रेम मगन होगई अपारा रे ॥२
देख रूप मैं भई दिवानी
मंद हसन मेरे मन भानी
नैनन बीच समाय गया वो नंददुलारारे ॥ ३

किसविधि मनमोहन घर लावुं
ब्रह्मानंद दरस मैं पावुं
जन्म सफल होजाय मिटे भवबंधन सारारे ॥४

(ठुमरी ताल चलित)

मुंझे दे दर्शन गिरधारी रे
तेरी सांवरी सूरत पर वारी रे ॥ टेक ॥
जमुनातट हरि धेनु चरावे
मधुर मधुर स्वर बैन बजावे
कांधे कमरिया कारी रे ॥ १ ॥ मुझे दे०
मोरमुकुट पीतांबर सोहे
देख रूप मुनिगण मन मोहे
कुंडलकी छबि न्यारी रे ॥ २ ॥ मुझे दे०
वृन्दावनमें रास रचावे
गोप गोपिका संग मिल गावे
नूपर की धुन प्यारी रे ॥ ३ ॥ मुझे दे०

१ चरणनरज महिमाअबजानी ७ भजनतक ।

भक्त हेत हरि रूप बनाया
ब्रह्मानंद मेरे मन भाया
चरणकमल बलिहारी रे ॥ ४ ॥ मुझे दे०

(ठुमरी ताल चलित)

हरि रसभरी बैन बजाई रे
मेरे तनकी सुध बिसराई रे ॥ टेक ॥
सुन कर वंसीकी धुन प्यारी
चकित भई सब ब्रजकी नारी
उठ वृन्दावन धाई रे ॥ १ ॥ हरि रस०
पक्षी मौन हुये बिरछनमें
घास तजा गौयन ने बनमें
जमुना नीर रुकाई रे ॥ २ ॥ हरि रस०
सुर विमान चड नभ में आये
वंसी धुन सुन मन हरषाये
पुष्प वृष्टि बरसाई रे ॥ ३ ॥ हरि रस०
नारायण वैकुंठ विलासी

ब्रह्मानंद बने ब्रजवासी
संतन के सुख दाई रे ॥ ४ ॥ हरि रस०

(ठुमरी ताल चलित)

गुरुचरणकमल बलिहारी रे
मेरे मनकी दुविधा टारी रे ॥ टेक ॥
भवसागरमें नीर अपारा
डूब रहा नहि मिले किनारा
पल में लिया उबारी रे ॥ १ ॥ गुरुचरण०
काम क्रोध मद लोभ लुटेरे
जनम जनम के वैरी मेरे
सब को दीना मारी रे ॥ २ ॥ गुरुचरण०
द्वैतभाव सब दूर कराया
पूरण ब्रह्म एक दरसाया
घट घट जोत निहारी रे ॥ ३ ॥ गुरुचरण०
जोग जुगत गुरुदेव बताई
ब्रह्मानंद शांति मन आई

मानुष देह सुधारी रे ॥ ४ ॥ गुरुचरण०

(ठुमरी ताल चलित)

हरि भजन बिना सुख नाही रे
नर क्यों बिरथा भटकाई रे ॥ टेक ॥
काशी गया द्वारका जावे
चार धाम तीरथ फिर आवे
मन की मैल न जाई रे ॥ १ ॥ हरिभजन०
छाप तिलक बहुभांत लगाये
सिरपर जटा विभूति रमाये
हिरदे शांति न आई रे ॥ २ ॥ हरिभजन०
वेद पुराण पढे बहु भारी
खंडन मंडन उमर गुजारी
बिरथा लोक बडाई रे ॥ ३ ॥ हरिभजन०
चार दिवस जग बीच निवासा
ब्रह्मानंद छोड सब आशा
प्रभुचरणन चित लाईरे ॥ ४ ॥ हरिभजन०

(ठुमरी ताल चलित)

हरिदर्शनकी मैं प्यासी रे ॥
मेरी सुनिये अरज अविनाशी रे ॥ टेक ॥
निर्गुण से मोहे सगुण सुहावे
सुर नर मुनि गण ध्यान लगावें
भक्तनके सुखराशी रे ॥ १ ॥ हरिदर्शन०
नहि गोकुल नहि मथुरा जावुं
अठ सठ तीरथ मैं नहि नावुं
चरणकमलकी दासी रे ॥ २ ॥ हरिदर्शन०
जप तप योग नही बन आवे
कैसे प्रभुके मन में भावे
करो न मुझे निराशी रे ॥ ३ ॥ हरिदर्शन०
करुणा कर मोहे दर्शन दीजे
ब्रह्मानंद शरणमें लीजे
काटो यमकी फासी रे ॥ ४ ॥ हरिदर्शन०

(ठुमरी ताल चलित)

दर्शन विन जियरा तरसे रे
मेरे नैन धार जल बरसे रे ॥ टेक ॥

मैं पापन अवगुणकी राशी
कैसे करे प्रभु निज दासी
काया कंपत डरसे रे ॥ १ ॥ दर्शन०

पतित उधारण नाम तुमारा
दीजे मुझको चरण सहारा
देखो दया नजरसे रे ॥ २ ॥ दर्शन०

शरण पडी मैं आय तुमारी
माफ करो अब भूल हमारी
भुजा गहो निज करसे रे ॥ ३ ॥ दर्शन०

तुमबिन और न पालक मेरा
ब्रह्मानंद भरोसा तेरा
बिनति करुं जिगरसे रे ॥ ४ ॥ दर्शन०

(ठुमरी ताल चलित)

मेरा पिया मुझे दिखलादो रे
कोई आनके आज मिलादो रे ।। टेक ।।

मैं बिरहण नित रहुं उदासी
पिया मिलन की जान पियासी
प्रेम का नीर पिलादो रे ।। १ ।। मेरा पिया०

वर्षा बिन चातक दुख पावे
नीर बिना मछली तरसावे
हाल मेरा बतलादो रे ।। २ ।। मेरा पिया०

मैं गुणहीन कपट छल भरियां
कैसे मुझ पर होय नजरियां
दिलपर दया दिलादो रे ।। ३ ।। मेरा पिया०

चरण कमलकी दासी तेरी
ब्रह्मानंद अरज सुन मेरी
सुख की सेज सुलादो रे ।। ४ ।। मेरा पिया०

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

मिला[1] दो सखी शामसुंदर मोहे आज ॥टेक॥
रातदिवसमोहेचैननआवे भूलगयेसबकाज ॥१
खानपानपहरननसुहावे बिनदेखेब्रजराज ॥२॥
जोगनबनकरबनबनढूंडुं छोडजगतकीलाज॥३
ब्रह्मानंदबिनाहरिदर्शन बिरथा साज समाज॥४

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

सुहावे सखी मोहन की मोहे बेन ॥ टेक
जमुना तट पर बन कुंजन में शाम चरावे धेन १
जबकीबंसियाश्रवणसुनीमैंकलनपडतदिनरैन २
किसविधहरिकेदर्शनपावुंसफलकरुंनिजनैन ३
ब्रह्मानंद चरण की चेरी संतन के सुख देन॥४

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

तुमे है हरि शरण पडेकी लाज॥टेक॥ तुमेहै०
मैंगुणहीनमलीनसदामति कैसेबनेअबकाज ॥१

---

१ बतादो सखी कौन गली गये शाम ७ तक ।

जपतपतीरथव्रतनकीने नहिकियोसंतसमाज
तुमसमाननहीपतितउधारन मैं पापिनसिरताज
ब्रह्मानंदकरेनितबेनती सुनियेगरीबनिवाज ॥४

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

भजनबिन बिरथा जनम गयो ॥टेक॥ भजन०
बालपणोसबखेलगमायो जोबनकामब्रह्यो ॥१॥
बूढेरोगग्रसीसबकाया परवशआपभयो ॥ २ ॥
जपतपतीरथदाननकीनो नाहरिनामलयो ॥३
ब्रह्मानंदविनाप्रभुसुमरण जाकरनरकपयो ॥४॥

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

भजन बिन भव जल कौन तरे ॥ टेक ॥ भज०
कामक्रोधमदग्राहवसत हैं मारगमें पकडे ॥१॥
कुचकंचनदोऊघेरपडत हैं सबजगडूबमरे ॥२॥
यज्ञदानतपनिर्बलनौका अधबिचटूटपडे ॥३॥
ब्रह्मानंदकरोहरिसुमरण सबदुख दूरटरे ॥४॥

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

मुसाफिर क्या सोवे अब जाग ॥टेक॥ मुसा०
इनबिरछनकीथिरनहिछायादेखभुलायाबाग १
इससरायमें रहनानांही काहेकरतहै राग ॥२॥
यहसबचोरलगेसंगतेरे इनसे बचकरभाग ॥३॥
ब्रह्मानंद देरमतकीजे अपने मारग लाग ॥४॥

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

मेरे मना अब तो समझकर चाल ॥ टेक ॥
बाल्यगयोजोबनपुनिबीतो श्वेतभयेसबबाल । १
जोनतजेतुंइनविषयनको आनछुडासीकाल ॥२
जानादूरमुसाफिरतुझको पासनहीकछुमाल ॥३
ब्रह्मानंदमिलनकेकारण छोडजगतजंजाल ॥४

(राग पहाडी ताल केरवा)

प्रभु सुन ले बिनतिया हमारी रे ॥ टेक ॥
भव सागर में डूब रहा हुं ।

लिजिये बेग उबारी रे ॥ १ ॥ प्रभु० ॥
काम क्रोध मद दुश्मन भारे
निश दिन करत खुवारी रे ॥ २ ॥ प्रभु० ॥
स्वारथ के सब बंधु जगत में
केवल तुम हितकारी रे ॥ ३ ॥ प्रभु० ॥
ब्रह्मानंद आश तज सब की ।
आयो शरण तुमारी रे ॥ ४ ॥ प्रभु० ॥

(राग पहाडी ताल केरवा)

मुझे दीजे दरस गिरधारी रे ॥ टेक ॥
शीश किरीट गले बन माला ।
कुंडल की छबी न्यारी रे ॥ १ ॥ मुझे०
चतुर भुजा पीतांबर सोहे ।
नूपर धुन सुखकारी रे ॥ २ ॥ मुझे० ॥
शंख चक्र कर पद्म विराजे ।
मंद हसन अति प्यारी रे ॥ ३ ॥ मुझे०
ब्रह्मानंद दया कर कीजे

पूरण आश हमारी रे ॥ ४ ॥ मुझे०

(राग पहाडी ताल केरवा)

मत सोना मुसाफिर नींद भरी ॥ टेक ॥
तुम परदेसी भूल पडे हो ।
यह सब चोरनकी नगरी ॥ १ ॥ मत० ॥
पल पल छिन छिन ताक लगावें ।
चंपत माल चुका नजरी ॥ २ ॥ मत० ॥
लोक लुटाय गये बहुतेरे ।
विरला जाय बचा गठरी ॥ ३ ॥ मत० ॥
ब्रह्मानंद करो अब त्यारी ।
रैन विताय गई सगरी ॥ ४ ॥ मत० ॥

(राग पहाडी ताल केरवा.)

पिया चालो नगरियां हमारी रे ॥ टेक ॥
तुम बिन हार सिंगार न भावें ।
सूने महल अटारी रे ॥ १ ॥ पिया० ॥
सुंदर तन जोबन पट भूषण ।

विन प्रीतम सब खारी रे ॥ २ ॥ पिया० ॥
मेरे अवगुण याद न कीजे ।
दासी जान तुमारी रे ॥ ३ ॥ पिया०
ब्रह्मानंद दरस मोहे दीजे ।
चरणकमल बलिहारी रे ॥ ४ ॥ पिया० ॥

(राग पहाडी ताल केरवा)

आना आना रे मोहन मेरी गलियां ॥ टेक०
घिस घिस चंदन लेप लगावुं ।
धोवुं चरणनकी तलियां ॥ १ ॥ आना०
तेरे कारण हार बनावुं ।
चुन चुन फूलन की कलियां ॥ २ ॥ आना०
प्रेम सहित मैं भोग लगावुं ।
माखन मिशरीकी डलियां ॥ ३ ॥ आना०
ब्रह्मानंद दरस की प्यासी ।
मोर मुकुट पर जावुं बलियां ॥ ४ ॥ आना०

(राग टोडी ताल ३)

हरि तुम भक्तनके प्रतिपाल
शरणपडाहुं आयतुमारी कीजेदयादयाल ॥ टेक
यह संसार स्वपनकी माया झूठा सब जंजाल
चरणकमलकीभक्तितुमारी दीजेनजरनिहाल १
धन दारा सुत मीत पियारे कोई न जावे नाल
नामतुमाराहैअविनाशी संगरहेसबकाल ॥२॥
मानुष तन यह है क्षणभंगुर शिरपरकालकराल
कामक्रोधमदलोभजालसे लीजे मुझे निकाल३
जिनपरकिरपाहोयतुमारी तिनकेभाग्यविशाल
ब्रह्मानंददासचरणनका जन्ममरणदुखटाल ॥४

(राग टोडी ताल ३)

हरि तुम भक्तनके हितकार
भवसागरजलदुस्तरभारी लीजेमुझेउबार ॥ टेक
गज अरु ग्राह लडे जब जलमें गज ने पाई हार

---

१ बचाले मुझको मेरे करतार १ भजनतक ।

मनमें सुमरण कियातुमारा पहुंचेगरुडसवार ॥१
तुमरे दर्शन कारण ध्रुवने तप कीनो मनधार
अचलराज्यतिसकोप्रभुदीना देअपनादीदार २
प्रीत देख प्रहलाद भक्तकी निकले थंभ विदार
हिरणकशपको पकडकेशसे पलमे दीनामार ३
द्रुपदसुताकी लाज सभामें राखी चीर वधार
ब्रह्मानंद शरणमें तेरी मेरी सुनो पुकार ॥४॥

(राग टोडी ताल ३)

प्रभु सुन अरज हमारी आज
सकलजगतकेहोतुमस्वामी दीनबंधुमहाराज । टे.
हमबालकतुझशरण पडे हैं राखिये हमरीलाज
दयादृष्टिप्रभुहमपरकीजे पूर्णहोंसबकाज ॥ १ ॥
तुमरी महिमा वेदबखाने ध्यान धरें मुनिराज
सकलव्यापकअंतर्यामी घटघटरहेविराज ॥२॥
भूमिजलथलपर्वतसागर तुमरा है सब साज ॥
देवदनुजनरसबजीवनके तुमपालकसिरताज ३

तुमरेभजनविनासुखनांही कोटिन किये इलाज
ब्रह्मानंदकरोकरुणाप्रभु सदागरीबनिवाज ॥४॥

(राग टोडी ताल ३)

जगतपति ईश्वर करो सहाय
दीनदयालदयानिधिस्वामी अर्जकरुंसिरनाय ॥
दुस्तरमायाजालबिछाया सबजगरह्याफसाय
मैंशरणागतनाथतुमारी लीजेमुझेछुडाय ॥१॥
पांचविषयकीनदियाभारी जीवबह्यासबजाय
करकिरपाप्रभुपकडभुजासें मुझकोतीरलगाय २
कामक्रोधमदलोभलुटेरे खोसखोसकरखाय
तुमबिनऔरनपालकमेरो लीजेवेगबचाय ॥३॥
मेरे अवगुणनाथनहेरो अपनीदयादिखाय
ब्रह्मानंदशरणमेंआयो लीजेदासबनाय ॥ ४ ॥

(राग टोडी ताल ३)

जगतपति ईश्वर तुं करतार
सकल जगतमें जीवचराचर सब तुमरापरिवार

एकरूपसे बहुत बनावुं जब तुम किया बिचार
भुवन चतुर्दश परगट होकर फैलगया संसार१
चौरासी लख जीव जूनमें जोडा है नरनार
सब वस्तुनके बीज बनाये पूर रहे भंडार॥२॥
सागरनदियां पर्वत भारे सूरज चांद सितार
वृक्ष लता वन सरवर सुंदर रचना बडी अपार३
अजअविनाशीजगतनियंतासबजीवनहितकार
ब्रह्मानंद दयाल दयाकर भवभयसकलनिवार ४

(राग टोडी ताल ३)

जगत पति ईश्वर तुं सुखकंद
सत चित आनंद रूप तुमारो
ध्यावत सुरमुनि वृन्द ॥ टेक ॥
माया जाल बिछा है भारी जीव किये सब बंद
जो जन सुमरे नाम तुमारोटूटेंसबही फंद॥१॥
सकलजगतहै रचना तेरी गगन भूमि रवि चंद
तुमरी महिमा जान न पावें तर्क करें मतिमंद२

तुमरे भजन बिना जग मांही पंथ सबी हैं गंद
जिस मारग में नाम तुमारो सो सुरभी मकरंद३
तुमरा निर्णय कर कर हारे वेद ग्रंथ सब छंद
भक्ति दान दीजे प्रभु मुझको याचत ब्रह्मानंद४

(राग टोडी ताल ३)

जगत पति ईश्वर दया निधान
सकल जगत का कर्ता हर्ता
व्यापक तूं भगवान ॥ टेक ॥
जल की बूंद से देह बनाई तिस में डारे प्राण
माता कुच में दूध बनाकर पाला जीव अजान १
अन्न शाक फल फूल सबन के बीज रचे परधान
तिन के वर्धन भोगन के हित हमको दीना ज्ञान
भूमी पवन अगन जल अंबर सब तुमरा सामान
हमरे कर्म किये क्या होवे बिरथा सब अभिमान
नाम तुमारा भवभयभंजन दीजे हमको दान
ब्रह्मानंद दया कर प्रभुजी अरज हमारी मान४

(राग टोडी ताल ३)

सुमर नर रामनाम सुखधाम
जन्ममरणकेबंधनछूटें पूरणहोंसबकाम ॥ टेक॥
लालचतजविषयोंकामनसे नहि इनमें आराम।
हरिकेचरणकमलकाचिंतन करलेआठों याम १
दिनदिन पलपल छिनछिन उमरा
बीती जाय तमाम
नश्वरकायाथिरकरमाने भूलाफिरेनिकाम ॥२॥
बिनहरिभजनमुक्ति नहिहोवे
फिर फिर जन्म गुलाम
चौराशीलखजीवजूनमें नहिपावेविश्राम ॥३॥
प्रभुकानामजपोनितमनमें लगे नही कछुदाम
ब्रह्मानंदमोक्षपदपावे जो होवे निष्काम ॥४॥

(राग टोडी ताल ३)

जगतमें रामनाम है सार
सोचसमझनरदेखपियारे नश्वरसबसंसार ॥ टेक

राजा रानी पंडित ज्ञानी शूरवीर नर नार
सबहीकालबलीकेमुखमें जायबनेआहार ॥ १ ॥
सूरज तारे पर्वत भारे सागर नीर अपार
अंतकालमेंथिरनहिकोई यहनिश्चयमनधार ॥२
महल बगीचे हाथी घोडे दासी दास हजार
मालखजानासंगनजाना बिरथासबहंकार ॥३॥
हरिकानामसुमरनरनिशदिनदिलसेनहीबिसार
ब्रह्मानंदकटेभवबंधन छूटेंसकलविकार ॥ ४ ॥

(राग टोडी ताल ३)

जगत में जीवन है दिन चार
सुकृत कर हरि नाम सुमर ले
मानुष जन्म सुधार ॥ टेक ॥
सत्य धर्म से करो कमाई भोगो सुख संसार
मातपितागुरुजनकीसेवाकीजेपरउपकार ॥ १ ॥
पशु पक्षि नर सब जीवनमें ईश्वर अंश निहार
द्वैत भाव मन से विसरावो सबसे प्रेम विहार२

सकल जगतके अंदर बाहिर पूर्णब्रह्म अपार
सतचितआनंदरूपपिछानोकरसतसंगबिचार ३
यह संसार स्वप्न की माया ममता मोह निवार
ब्रह्मानंद तोड भव बंधन पावो मोक्ष दुवार ४

(भजन ताल ३)

[1]जपो हरि नाम बंदे उमर विहानी रे ॥ टेक ॥
बालपणोसबखेलगमायो तिरियामोहजुवानीरे
बूढा पण मे रोग सतावे
सुंदर काया तेरी होत है पुरानी रे ॥ १ ॥
दिन दिन पल पल छिन छिन जावे
जिम अंजलीका पानी रे
गया वकत फिर के नहि आवे
छुट गया तीर जैसे चढे न कमानी रे ॥ २ ॥
हाथी घोडे माल खजाना राज पाट पटरानी रे
श्वास निकल जब जाय बदन से

१ हरिने कुटिया बनाई जाय वनमें ३ भजनतक.

सब ही संपत तेरी होयगी बिगानी रे ॥ ३ ॥
स्वपन समान जगत की रचना
क्याभूलाअभिमानीरे ब्रह्मानंदभजनबिनप्रभुके
व्यर्थ तेरी है नर सारी जिंदगानी रे ॥ ४ ॥

(भजन ताल ३)

सुनो जगदीश प्रभु अरज हमारी रे ॥ टेक ॥
मानुषजन्ममिलाजगमांही किरपा भईतुमारीरे
गर्भवास में किया करारा
बाहिर आया तेरी याद विसारी रे ॥ १ ॥
मायामोहजालमेंफस्यो निकलनकीनहिबारीरे
जन्म मरण भव चँकर मांही
फिरत फिरत भयो दीन दुखारी रे ॥ २ ॥
जप तप योगयज्ञ नहि कीनो
नहिसतसंगतप्यारीरे केवलशरणपडोमेंतुमरी
अब तो दयाल मुझे लीजिये उबारी रे ॥ ३ ॥
तुमरे भजनबिनासुखनांही कीनेजतनहजारीरे

ब्रह्मानंद दया कर दीजे
भक्ति तुमारी प्रभु परम सुखारी रे ॥ ४ ॥

(भजन ताल ३)

तजो अब नींद रे मुसाफिर करो त्यारी रे। टेक।
इस नगरी के नौदरवाजे खुली पडीसबबारी रे
दिन दिन लोक सभी चल जावें
काहे को तैने घर की याद बिसारी रे ॥ १ ॥
राजा रानी पंडित ज्ञानी शूर वीर नर नारी रे
अपने अपने मारग जावें
रहन न पावें करें जतन हजारी रे ॥ २ ॥
जाना दूरतात अंधियारी सिरपरगठरीभारी रे
चोर खडे मारग में लूटें
कर ले जतन पीछे होयगी खुवारी रे ॥ ३ ॥
प्रभु का नाम सुमर ले प्यारे वो तेराहितकारी रे
ब्रह्मानंद विलंब न कीजे
सिर पे खडी है तेरे काल की सवारी रे ॥४॥

(राग जिला टोडी ताल ३)

प्रभुजी[1] तेरी किसविध करुं मैं बडाई ॥ टेक ॥
ब्रह्मानिशदिनवेदउचारे शंभुध्यानसमाधिधारे
सनकादिकनारदमुनिभारे अजहुंपारनहीपाई ॥
भूमी अगन पवन जल अंबर
सरवर सागर पर्वत कंदर
सूरजचांदसितारेसुंदर तुमसबसृष्टिबनाई ॥२॥
देव दनुज मानव नरनारी
पशुपक्षि जलथल नभ चारी
सकलजीवसंतानतुमारी तुमपालकसुखदाई ॥
विश्व बनाकर नाश करावे
नाश कराकर फिर उपजावे
ब्रह्मानंदपारनहिपावे अचरजखेलरचाई ॥ ४ ॥

(जिला टोडी ताल ३)

प्रभुजी मेरा तुम बिन कौन सहाई ॥ टेक ॥

---

१ सभामें मेरा तुमहि करोगे निस्तारा ३ भजनतक.

मात पिता बांधव सुतनारी
जगमें सब स्वारथकी यारी
नहिपरलोकहोयहितकारी सबसेहोयजुदाई ॥
मालखजाना महलचुबारे कोई नजावेसंगहमारे
चलचलजावेंभोगनहारे जगमेंथिरनरहाई ॥२॥
लाड लडाकर पालन कीना
अतर फुलेल सदा मलदीना
वसतरभूषणनित्यनवीना देहपडीरहजाई ॥३॥
तुमसबकाहैपालनहारा तेरीमहिमाबडीअपारा
ब्रह्मानंददानदेप्यारा नामतेरासुखदाई ॥ ४ ॥

(जिला टोडी ताल ३)

हरिजी तुम भक्तनके रखवारे ॥ टेक ॥
हिरणकशपने चाबुक मारा
प्रह्लाद भक्तने नाम उचारा
नरसिंहहोकरदैत्यपछाडा देवनकेदुखटारे॥१॥
मात बचन हिरदे धरलीना

ध्रुवने वनमे जा तप कीना
गरुडचडेप्रभुदर्शनदीना अंतवैकुंठसिधारे ॥२॥
द्रुपदसुताकी लाज बचाई
गौतम नारी बिपत मिटाई
शबरीकीमहिमाअधिकाईगजकेबंधनिवारे ॥
जोजननामतुमारागावे सोनिश्चयनिर्भयपदपावे
ब्रह्मानंदनितअर्जसुनावे कीजियेभवजलपारे ॥

(राग पहाडी)

प्रेम नगर मत जाना मुसाफिर ॥ टेक ॥
प्रेम नगर का पंथ कठिन है
ऊंचे शिखर ठिकाना मुसाफिर ॥ १ ॥ प्रेम०
प्रेम नगर की नदिया गहरी
लाखों लोक डुबाना मुसाफिर ॥ २ ॥ प्रेम०
प्रेम नगर की सुंदर परियां
सब जग देख लुभाना मुसाफिर ॥ ३ ॥ प्रेम०

---

१ कितनीक दूर तेरी काशी रे पंडित ५ भजनतक.

ब्रह्मानंद कोई बिरला पहुंचे
पावे पद निर्बाना मुसाफिर ॥ ४ ॥ प्रेम०

(राग पहाड़ी ३)

शाम सुंदर से मिलादो रे ऊधो ॥ टेक ॥
शाम सुंदर की मोहनी मूरत
हम को फेर दिखादो रे ऊधो ॥ १ ॥
जमुना तट पर बंसी बट पे
मुरली की टेर सुनादो रे ऊधो ॥ २ ॥
वृंदा बन की कुंज गलिन में
मिल कर रास रचादो रे ऊधो ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद दरस की प्यासी
हमरीतपत मिटादो रे ऊधो ॥ ४ ॥

(राग पहाड़ी)

सुन ले अरज हमारी रे ईश्वर ॥ टेक ॥
तुम बिन और न पालक मेरो
आयो शरण तुमारी रे ईश्वर ॥ १ ॥

भवसागरमें डूब रहा हुं
लीजिये बेग उबारी रे ईश्वर ॥ २ ॥
तुमरी माया जाल बिछाया
तुम ही करो नियारी रे ईश्वर ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद दया कर टारो
जन्म मरण भय भारी रे ईश्वर ॥ ४ ॥

(राग पहाडी)

हरिदर्शन की प्यासी रे अखियां ॥ टेक ॥
हार सिंगार छोडकर सारे
जग से भई मैं उदासी रे अखियां ॥ १ ॥
गोकुल ढूंडी मथुरा ढूंडी
ढूंड फिरी सब काशी रे अखियां ॥ २ ॥
जप तप योग किये बहु तेरे
मिले नही अविनाशी रे अखियां ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद गुरु देव दया से
देखे घट घट वासी रे अखियां ॥ ४ ॥

(राग पहाडी)

भज ले शारंगपाणी रे प्राणी ॥ टेक ॥
पल पल उमरा जाय निरंतर
जिमि अंजली का पानी रे प्राणी ॥ १ ॥
सुत दारा कोई संग न जावे
काहे बना अभिमानीरे प्राणी ॥ २ ॥
पाप कपट कर संचित धन को
आगे नरक निशानी रे प्राणी ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद भजन बिन हरि के
मिटे न भव दुख खानी रे प्राणी ॥ ४ ॥

(ठुमरी राग झंजोटी)

सांवरी[1] सूरत तेरी मोहनी मूरत हरि
कमल नयन शशी वदन सुहावनी ॥ १ ॥
कनक मुकुट भाल सोहे बन माल गल
सुंदर विशाल भुज कंकण धरावनी ॥ २ ॥

---

१ माथेपे मुकुट श्रवण कुंडल विशाल लाल. ३ भजन.

कानन कुंडल पडे कटि पट पीत धरे
चरण नूपर धुनी मधुर बजावनी ॥ ३ ॥
श्यामल कोमल अंग रमा बसे सदा संग
ब्रह्मानंद मंद हास मेरे मन भावनी ॥ ४ ॥

(ठुमरी झंजोटी)

देख ले चतुर नर अब तो नजर भर
घडी पल छिन तेरी बीतत उमरिया ॥ १ ॥
दीपक की लोय जैसे अंजली को तोय तैसे
कब हुं न होय थिर जायरे गुजरिया ॥ २ ॥
पशु मृग राज धरे चिडिया को बाज हरे
तैसे यमराज करे पडे न खबरिया ॥ ३ ॥
पापन से डर नर हरिका भजन कर
ब्रह्मानंद मन धर बात रे हमरिया ॥ ४ ॥

(ठुमरी झंजोटी)

मान ले बचन मेरो जान ले स्वरूप तेरो
जाने बिना रूप भवसिंधु में डुबावनो ॥ १ ॥

पाय के मनुज तन कर ले जतन नर
दारा सुत धन तेरे संग में न जावनो ॥ २ ॥
आवे जब काल तब रहे न संभाल कछु
करत हवाल बुरो फिर पछतावनो ॥ ३ ॥
कर ले उपाय सारे जप तप दान भारे
ब्रह्मानंद ज्ञान बिना मोक्ष नही पावनो ॥४॥

(राग पहाडी ताल ३)

मेरी मतिया हरि हरि हरि गुण गा ॥टेक॥
नाममुरारी भवभयहारी नहीनहीनहीविसरा १
दुर्लभकाया जगमेपाया दिनदिनदिन नगमा२
करतलपानीउमरविहानीपलपलपलचलजा ॥३
ब्रह्मानंदासबसुखकंदानितनितनितचितला ॥४

(राग पहाडी ताल ३)

मेरी मतिया कर कर हरिभजना ॥ टेक ॥
सिरपरकाला फिरतकराला डरडरडरमरणा ॥१
लखचौरासी भवदुखराशी फिरफिरफिरफिरना

दीनदयाला सबजगपाला पडपडपडशरणा ॥३

ब्रह्मानंदा करनितवंदा प्रभुप्रभुप्रभु चरणा ॥४॥

(राग पहाडी ताल ३)

मेरी सजनी सुन सुन सुन सुन सुन ॥टेक॥

अनहदबाजे गगनबिराजेमधुरी धुनधुनधुन॥१

अमृतधारा परमसुखारा टपकत पुनपुनपुन ॥२

सुरतसुहाई सेजबिछाई फूलन चुनचुनचुन॥३॥

ब्रह्मानंदा परमानंदा गुणगुणगुण निर्गुण ॥४॥

(राग पहाडी ताल ३)

री गुजरिया पानिया भरन मत जा ॥ टेक ॥

आनाजाना रोकतकान्हा पनघटनिकट खडा १

नटवरनागर पटकतगागर झटपटपटझटका॥२

बंसीबजावे सुधबिसरावेमीठीमीठीमीठीधुनगा

ब्रह्मानंदा चरणमुकुंदा नम नम नमन सदा॥४॥

(राग मंगल ताल ३)

घटही में उजियारासाधो घटहीमेंउजियारारे
पासवसेअरुनजरनआवे बाहिरफिरतगंवारारे
बिनसतगुरुकेभेदनजानेकोटिजतनकरहारारे १
आसनपद्मबांधकरबैठो उलट नैनका तारारे
त्रिकुटीमहलमेंध्यानलगावो देखोखेलअपारारे
नहि सूरज नहि चांद चांदनी
नहि बिजली चमकारारे
जगमगजोतजगेनिसबासर पारब्रह्मविस्तारारे ३
जोयोगी जन दर्शनपावे उघडे मोक्षदुवारारे
ब्रह्मानंदसुनोरे अवधु वो है देसहमारारे ॥४॥

(मंगल ताल ३)

घटहीमेंअविनाशीसाधोघटहीमें अविनाशीरे
काहे रे नर मथुरा जावे काहे जावे काशीरे
तेरेतनमेंबसेनिरंजन जो वैकुंठबिलासीरे ॥ १॥

---

१ मानो बचन हमारा दुर्योधन मानो बचन हमारारे. १६

नहि पताल नहि स्वर्ग लोकमें
नहि सागर जलराशीरे
जो जन सुमरण करत निरंतर
सदा रहे तिन पासीरे ॥ २ ॥
जो तूं उसको देखाचाहे सबसे होय उदासीरे
बैठएकांतध्याननितकीजेहोयजोतपरकाशीरे ३
हिरदेमेंजबदर्शनहोवे सकल मोह तम नाशीरे
ब्रह्मानंदमोक्षपदपावे कटेजन्मकीफासीरे ॥ ४

(मंगल ताल ३)

जोगजुगतहमपाईसाधोजोगजुगतहमपाईरे । टे.
मूलद्वारमेंबंधलगायो उलटी पवन चलाईरे
षटचक्करकामारगशोधा नागनजायउठाईरे
नाभीसें पश्चिमके मारग मेरुदंड चडाईरे
ग्रंथीखोलगगनपरचडिया दशमेंद्वारसमाईरे !
भंवरगुफामेंआसनमाऱ्यो कायासुधबिसराईरे
बिन चंदा बिन सूरज निश दिन

जगमग जोत जगाईरे ॥ ३ ॥
शिवशक्तिकामेलभयोजब सुंनमे सेजबिछाईरे
ब्रह्मानंदसतगुरुकिरपासे आवागमनमिटाईरे ४

(मंगल ताल ३)

जोग जुगत हम जानी साधो
जोग जुगत हम जानी रे ॥ टेक ॥
खेंच अपानप्राणघर लाये नागन नींद जगानीरे
मेरु दंड खोल कर ऊपर भ्रमर गुफाठहरानीरे
जिव्हा उलट खेचरी मुद्रा तालु बीच लगानीरे
त्रिकुटीमहलमेंध्यानजमायो ब्रह्मजोतदरसानीरे
अनहद नाद बजे घटभीतर गर्जन मेघ सुहानीरे
सुनसुनमस्तभयोमनमेराकाया सुध बिसरानीरे
सुंनशिखरसें अमृत टपके पीकर सुरत अघानीरे
ब्रह्मानंद स्वरूप समायो पायो पद निर्बानीरे ४

(मंगल ताल ३)

अनहद की धुन प्यारी साधो

अनहद की धुन प्यारीरे ॥ टेक ॥ अनह०
आसनपद्मलगाकरकरसे मुंदकानकीबारीरे
झीनीधुनमें सुरत लगावो होतनादझनकारीरे१
पहलेपहले रलमिल बाजे पीछे न्यारीन्यारीरे
घंटाशंखबंसरीबीणा तालमृदंगनगारीरे ॥२॥
दिनदिनसुनतनादजबबिकसेकायाकंपतसारीरे
अमृतबूंदझरे मुखमांही योगीजनसुखकारीरे ३
तनकीसुधसबभूलजातहै घटमें होय उजारीरे
ब्रह्मानंदलीनमनहोवे देखीबातहमारीरे ॥४॥

(राग मंगल ताल ३)

सुनोखेचरीबात साधो सुनोखेचरीबातरे ॥टेक
सबसे बडी खेचरीमुद्रा योगीजन की मातरे
जोजनसाधनकरतनिरंतर भवसागरतरजातरे१
जीभ तलेकी नाड कटे जब तब पीछे उलटातरे
धीरे धीरे गलके ऊपर छेदमांहि ठहरातरे ॥२॥
पीछे ध्यान धरे भृकुटीमे कांपे सबही गातरे

ब्रह्मजोतिकादर्शनहोवे झरे सुधादिनरातरे ॥३
दिनदिनध्यानकरेजबयोगीकायासुधविसरातरे
ब्रह्मानंदस्वरूपसमावे फेरजन्मनहिपातरे ॥४॥

(मंगलताल ३)

सोहंशब्दविचारोसाधोसोहंशब्दविचारोरे ।टे०
मालाकरसेफिरतनहीहै जीभ न वर्ण उचारोरे
अजपाजापहोतघटमांही ताकीओरनिहारोरे १
हं अक्षरसेस्वासउठावो सो से जाय बिठारोरे
हंसोउलटहोतहैसोहं योगीजननिरधारोरे ॥२॥
सबइक्कीसहजारमिलाकर छेसो होतशुमारो रे
अष्टपहरमेंजागतसोवत मनमें जपोसुखारोरे॥३
जोजनचिंतनकरतनिरंतरछोडजगतव्यवहारोरे
ब्रह्मानंदपरमपदपावे मिटेजनमसंसारोरे ॥४॥

(मंगल ताल ३)

अचरज देखा भारी साधो
अचरज देखा भारीरे ॥ टेक ॥

गगनबीचअमृतकाकूवा झरेसदासुखकारीरे
पंगुपुरुषचढेबिनसीढी पीवेभरभरझारीरे ॥१॥
बिनाबजायेनिशदिनबाजें घंटाशंखनगारीरे
बहरासुनसुनमस्तहोतहै तनकीखबरबिसारीरे२
बिनभूमीकेमहलबना है तामेंजोतउजारीरे
अंधादेखदेखसुखपावे बातबतावेसारीरे ॥३॥
जीतामरकरकेफिरजीवे बिनभोजनबलधारीरे
ब्रह्मानंदसंतजनविरला समझे बातहमारीरे ॥४

(राग मंगल ताल ३)

मैं हुं दासतुमाराप्रभुजी मैंहुंदासतुमाराजी। टेक
सुत पितुमाताजगकानातास्वारथकासंसाराजी
सबजगस्वपनाकोईनअपनातुंमेरारखवाराजी १
जपतपदानाधर्मनजाना नहिसतसंगविचाराजी
सबगुणहीनाभजननकीना कैसेहोनिस्ताराजी
परबलमायाजालविछाया फस्याजीवविचाराजी
बिन तुझ करुणा भवभयहरणा

नहि होवे छुटकाराजी ॥ ३ ॥
अवगुण मेरे नाथ घनेरे नहिकुछपारावाराजी
ब्रह्मानंदशरणमें आयाकीजेभवजलपाराजी ॥४

(मंगल ताल ३)

मैंहुंशरणतुमारीप्रभुजी मैं हुंशरणतुमारीजी। टे०
सूरज तारे पर्वत भारे देवदनुज नर नारीजी
सागरसरवरभूमितरुवरतेरीरचनासारीजी ॥ १
जलथलगामी अंतरयामी
भुवन चतुर दश धारी जी
सब गुण खाना दयानिधाना
सब जीवन हित कारी जी ॥ २ ॥
ऋषिमुनिध्यावेंपारनपावेंमहिमातुमरीभारीजी
किसविधगावुंभेदनपावुंदुर्बलबुद्धिहमारीजी ॥
नाम तुमारा सब सुखकारा देत पदार्थ चारीजी
ब्रह्मानंददानमोहेदीजे जन्ममरणभयहारीजी ॥

सतसंगतजगसारसाधो सतसंगतजगसाररे॥ टे.
काशी न्हाये मथुरा न्हाये न्हाये हरी दुवाररे
चारधामतीरथफिरआयेमनकानहीसुधाररे ॥१
वनमें जाय कियोतपभारी काया कष्ट अपाररे
इंद्रियजीतकरीवशअपनेहिरदेनहीबिचाररे ॥२
मंदिरजाय करे नित पूजा राखे बडोअचाररे
साधुजनकीकदरनजाने मिलेनसर्जनहाररे ॥३
बिनसतसंगज्ञाननहींउपजे करलेजतनहजाररे
ब्रह्मानंदखोजगुरु पूरा उतरोभवजलपाररे॥४॥

(मंगल ताल ३)

गुरु बिन कौन मिटावे भवदुख
गुरु बिन कौन मिटावेरे ॥ टेक ॥ गुरु बि०
गहरी नदियावेगबडोहै बहत जीव सब जावेरे
करकिरपागुरुपकडभुजासेखेंचतीरपरलावेरे १
कामक्रोधमदलोभचोरमिल लूटलूटकरखावेरे

ज्ञानखड्गदेकर करमांही सबकोमारभगावेरे २
जानादूररातअंधियारी गैला नजर न आवेरे
सीधेमारगपरपगधरकर सुखसेधामपुगावेरे ॥३
तनमनधनसबअर्पणकरके जोगुरुदेवरिझावेरे
ब्रह्मानंदभवसागरदुस्तर सोसहजेतरजावेरे ॥४

(मंगल ताल ३)

गुरु बिन कौन सहाई नरकमें
गुरु बिन कौन सहाई रे ॥ टेक ॥
मातपितासुतबांधवनारी स्वारथकेसबभाईरे
परमार्थकाबंधुजगतमें सतगुरुबंधछुडाईरे ॥१॥
भवसागरजलदुस्तरभारी ग्राहबसेंदुखदाईरे
गुरुखेवटियापारलगावे ज्ञानजहाजबिठाईरे २
जन्म जन्म का मेट अंधेरा संशय सकल नसाईरे
पार ब्रह्म परमेश्वर पूरण घटमें देदरसाईरे ॥३
गुरुकेवचनधारहिरदेमें भाव भक्ति मन लाईरे
ब्रह्मानंदकरोनितसेवा मोक्षपदार्थपाईरे ॥ ४ ॥

शिवभोलाभंडारीसाधोशिवभोलाभंडारीरे। टे०
भस्मासुरनेकरीतपस्या वर दीना त्रिपुरारीरे
जिसकेसिरपरहाथलगावे भसहोयतनसारीरे१
शिवकेसिरपरहाथधरनकी मनमेंदुष्टबिचारीरे
भागेफिरतचहूंदिशशंकर लगा दैत्यडरभारीरे२
गिरजारूपधारहरिबोले बातअसुरसेप्यारीरे
जोतूं मुझकोनाचदिखावे होवुंनारतुमारीरे ।३।
नाचकरतअपनेसिर[1]करधरभसभयोमतिमारीरे
ब्रह्मानंददेतजोईमांगे शिवभक्तनहितकारीरे ४

(मंगल ताल ३)

कहत मंदोदरी सुन पिया रावण
मानो बचन हमारारे ॥ टेक ॥ कहत०
जोकृपालुजगपालकईश्वर सो रघुकुलअवतारारे
तिनसंगबैरकियेकितसुखहोमनमेंदेखविचारारे

---

१ हाथ.

मधुकैटभसेदैत्यपछाडे हिरणाकसतनफाडारे
बलिकोबांधपतालपठायो तुमक्याजीतनहारारे
एककपीजिनकोचलआयोतिनसबलंकउजाडारे
आवेसेनसबीजबतिनकी तबक्याहोयसुखारारे
जोयोगीजनध्यावतमनमें ब्रह्मानंद अपारारे
सोयहरामप्रगटभूतलमें लेमिलजनकदुलारारे४

(मंगल ताल ३)

कालगतीबलवानसाधोकालगतीबलवानरे।।टे०
बडेबडेपृथिवीकेराजा प्रियब्रत सगर समानरे
सबहीमिलेधरणिकेमांहि रह्यानएकनिशानरे१
अर्जुन भीमसेनसे योधा जिनके अचरजबाणरे
सोभीकालकियेवशअपनेछूटा सबअभिमानरे२
योगी पीर पगंबरभारे साधक सिद्ध सुजानरे
जीतसकेनहिकालबलीको छोडगयेसबप्राणरे ३
इसदुनियांमेंरहनानांही यह निश्चयकर जानरे
ब्रह्मानंदछोडसबचिंता सुमरोश्रीभगवानरे ।।३

(मंगल ताल ३)

ऐसा ज्ञान हमारा साधो ऐसा ज्ञान हमारा रे
जड चेतन दो वस्तु जगतमें चेतनमूल अधारारे
चेतनसे सब जग उपजतहै नहि चेतनसे न्यारारे
ईश्वर अंशजीवअविनाशीनहिकछुभेद विकारारे
सिंधु बिंदु सूरज दीपकमें एकहि वस्तु निहारारे
पशु पक्षि नर सब जीवन में पूर्ण ब्रह्म अपारारे
ऊंचनीच जग भेदमिटायो सबसमाननिर्धारारे
त्यागग्रहणकछुकर्तबनाहीं संशयसकलनिवारारे
ब्रह्मानंदरूप सब भासे यह संसार पसारारे॥४

(राग भैरवी ताल ३)

मेरो प्रभु जी तुम बिन कौन सहाई ॥ टेक ॥
मातपितासुतबांधवनारीजी स्वारथहेतसगाई १
अंतसमेकोईसंगनजावेजीपरवशजीवसिधाई २
धनजोबन दिनचारसहाराजीदेखतहीचलजाई
ब्रह्मानंद पडाभवसागरजीलीजियेमोहेबचाई ४

(भैरवी ताल ३)

मेरो मनरे भजले चरण मुरारी ॥ टेक ॥
दीनदयालजगतप्रतिपालकरेभक्तनकेहितकारी
हरिकोनामजहाजजगतमेंरेभवसागरजलतारी २
क्यामायामें फिरतभूलायोरे सिरपरकालसवारी
ब्रह्मानंदभजनबिनहरिकेरेजन्ममरणभयभारी ४

(भैरवी ताल ३)

तेरो प्रभुजी किस विध दर्शन पावुं ॥ टेक ॥
मैंमतिमंदसकलगुणहीनाजी सन्मुखहोतलजावुं
जपतपयोगयज्ञनहिकीनेजी कैसेपात्रकहावुं ॥२
मैंअनाथतुमनाथजगतकेजीक्योंकरतोहेरिझावुं
ब्रह्मानंददयालदयाकरजी भवसागरतरजावुं ।४

(भैरवी ताल ३)

मेरी आली री शाम सुंदर दिखला दे ॥टेक॥
बिनदर्शनमोहेचैननआवेरी चंद्रबदननिरखादे
सांवरीसूरतमोहनीमुरतरी मुझकोआजमिलादे

जमनातटपर बंसी बजावेरी मधुरी टेर सुनादे
ब्रह्मानंदचरणबलिहारीरीनैनसफलकरवादे । ४

(राग मलार ताल ३)

सुनसखी अब वर्षा ऋतुआई सुंदरमेघगगनपर
छाये शीतल पवन सुहाई ।। टेक ।।
बिजली चमक डरावत मनको गर्जगर्जबरसाई १
पर्वतसे जलझरत निरंतर नदियांबेगसवाई।।२।।
चहुंदिशि वृक्षलताबन फूले सकलभूमिहरआई३
ब्रह्मानंदजगतहितकारण ईश्वरवृष्टिबनाई ।।४।।

(मलार ताल ३)

सुन सखी अब वर्षा दिन आये पूरब पवन
चले निस बासर घुमट घुमट घन छाये ।।टेक।।
गर्जनसुनकर पपियाबोले मोरनशोर मचाये ।।१
झिमझिम बूंदपडत आंगनमें ग्रीषमतापमिटाये२
सखियांमिलकर झूलतबनमेंगावतगीतसुहाये ३
ब्रह्मानंद जगतपति ईश्वर जीवनसुखउपजाये ४

(राग मलार ताल ३)

सुन सखी वर्षा ऋतु मन भाई। कामकाज सब
छोड जगत के निशदिन सुरत जमाई ॥टेक॥
त्रिकुटी महलमें चडकर देखा
विजली चमक दरसाई
अनहदगर्जनहोत गगनमें सुनसुन मन हरषाई२
अमृतबूंदपडतसुखदायक भवभयतपतमिटाई३
ब्रह्मानंद स्वरूप समायो तन मन सुधबिसराई४

(राग होरी ताल धमाल.)

कृष्णनेकैसीहोरीमचाई अचरजलखियोनजाई
असत सत कर दिखलाई ॥ टेक ॥ कृष्णने०
एक समय श्रीकृष्ण देवके होरीखेलन मन आई
एकसे होरी मचे नहि कबहुं यातें करू बहुताई
येही प्रभुने ठहराई ॥ १ ॥ कृष्णने०
पांचभूतकी धातुमिलाकर अंड[1]पिचकारीबनाई

1 ब्रह्मांड.

चौदह भुवन रंग भीतर भरकर नानारूप धराई
प्रगट भये कृष्णकन्हाई ॥ २ ॥ कृष्णने०
पांचविषयकीगुलालबनाकरबीचब्रह्मांडछुडाई
जिस जिस आंख गुलाल पडी सो
सुधबुध सब बिसराई
नही सूझत अपनाई ॥ ३ ॥ कृष्णने०
ब्रह्मज्ञान अंजनकी सिलाका जिसने नैनमें पाई
ब्रह्मानंद सबी तम नाश्यो सूझ पडी अपनाई
भरमकी धूल उडाई ॥ ४ ॥ कृष्णने०

(होरी ताल धमाल ३)

सांवरो कैसी खेलत होरी अचरज खूब बनोरी
कोई जन भेद लहोरी ॥ टेक ॥ सांवरो०
तनरंग भूमिबनी अतिसुंदर बालनबागलगोरी
नाडीअनेक गलीजहांशोभतखेलतहां[1]कानडोरी
संग वृषभान किशोरी[2] ॥ १ ॥ सांवरो०

---

१ आत्मा. २ बुद्धि.

पांच सखी मिल पंचरंग भर देत बहोर बहोरी
राधिकालेकरडारेशामपर सबतनदीनाभिगोरी
कृष्ण मन मोद भयोरी ॥ २ ॥ सांवरो०
होरीमे मोद मानकर शामनेराधिका वेषधरोरी
मिल सखियन संग फाग मचायो
खेलतमगनभयोरी आपसुधिभूलगयोरी ॥३॥
खेलत खेलत जान न पायो दीर्घ काल गयोरी
बन बन फिरत रूप जब जानो
सखियनसंगबिछोरी शामब्रह्मानंदमिलोरी ४॥

(होरी काफी ताल धमाल)

आयोबसंतसखीरी मिलखेलियेहोरी ॥ टेक ॥
परके भूल गई गृहकाजन मनमें ताप रहोरी
जिन जिन खेली होरी शाम संग
तिन बड भाग्य भयोरी मिलखेलियेहोरी॥१॥
तज सबकाज आज घरकेरे लाजको दूर धरोरी

---

१ इंद्रिय. २ बुद्धि. ३ विषय.

फागुनके दिन बीतजात हैं फिर पीछेपछतोरी
मिलखेलियेहोरी ॥ २ ॥
सतसंगतिबृंदाबनजाकर शामकोखोजकरोरी
कर विचार जुगतीसे घेरो जाननपावे बहोरी
मिलखेलियेहोरी ॥ ३ ॥
मनपचकारीपकडकरसुंदर ध्यानरंगसेभरोरी।
प्रेमगुलालमलोमुखऊपर ब्रह्मानंद रस लोरी
मिलखेलियेहोरी ॥ ४ ॥

(होरी काफी ताल धमाल)

देख सखी जगदीशरी कैसी होरी रचाई ॥टेक॥
पृथिवी रंगभूमिसुखदायकगगनकिनातलगाई
वृक्षबगीचे पर्वत सागर नदियां नीर भराई।
री कैसी होरी रचाई ॥ १ ॥
एकही रूप अनेक भांत कर सूरत युगल बनाई
पशुपक्षिनरदेव दनुज सब मिलकर फाग मचाई
री कैसी होरी रचाई ॥ २ ॥

बीज से बीज बना कर नूतन रंगत खूब जमाई
एकसे एक मिलन नहि पावे यह प्रभुकी चतुराई
री कैसी होरी रचाई ॥ ३ ॥
पांच विषय के रंग मनोहर नाना किसम सुहाई
ब्रह्मानंद जीव सब भर भर खेल करत सुख दाई
री कैसी होरी रचाई ॥ ४ ॥

(राग काफी ताल धमाल)

दीनानाथ रमापति भव दुख हमराहरोरे ॥टेक॥
करमेंचक्रसुदर्शनपकडोशीशकिरीटधरोरे ॥१॥
गल बेजंती मालडालकरपीतवसनपहरोरे ॥२॥
वाम अंकमेलेकमलाकोगरुडसवारीकरोरे ॥३॥
ब्रह्मानंद विलंबनकीजे शरणतुमारीपडोरे॥४॥

(काफी ताल धमाल)

दीनानाथ रमापतिमैंहुंशरण तुमारी जी ।टेक।
कामक्रोधमदलोभलुटेरे राखियेलाजहमारीजी
स्वारथकेसबमित्रजगतमें केवलतुमहितकारीजी

भवसागर में डूब रहाहुं लीजिये बेग उबारीजी
ब्रह्मानंद दान मोहे दीजे नाम तेरासुखकारीजी

(लावणी सरल)

नारायणकानामसदानरदिलअंदरलानाचहिये
मानुषतनहैदुर्लभजगमें इसकाफलपानाचहिये
दुर्जन संगनरककामारग उससेदूरजानाचहिये
सतसंगतमेंबैठहमेशां हरिकेगुणगानाचहिये १
धर्मकमाईकरकेअपने हाथोंकी खाना चहिये
दुखी दीनजनदेखदयाकरके कुछदिलवानाच०
परनारीकोअपनी माताके समान जाना चहिये
सब जीवनके सुखदुख अपने तन जैसे मानाच०
झूठकपटकीबातसदा कहनेमें शरमाना चहिये
सत्यबोलनेकीआदतको मनमेंअटकानाचहिये
ताशगंजफाखेलतमाशासबकोछिटकानाचहिये
कथापुराणसंतसंगतमे दिलको बहलानाचहिये
मातपिताअरुगुरुकीआज्ञासदाबजालाना च०

करेजोनरउपकारसदाउसकागुणसुमराना च०
कामशुरुजोकियाहोयशुभजलदीनिपटाना च०
बुरेकामकाहोयबिचारतोमनमेंलटकाना चहिये
पापकर्महोजायसदाफिरदिलमेंपछताना चहिये
करकेपुण्यकाकामनामउसकाफिरविसरानाच०
विद्याअरुशुभगुणके कारणधनकोखरचानाच०
नाचरंगअरुपानभोगमेंदिलकोसकुचानाचहिये
अन्नदानसमदाननदूजा उसकोवरतानाचहिये
सदासुपातरअरुदुखियोंको भोजनकरवाना च०
पशुपक्षिसबजीवजंतुको सुखनितपहुंचाना च०
घटघटमे ईश्वरव्यापकहै एकरूपमानाचहिये
अपनी जोनरकरेबुराई उसको सहजानाचहिये
कालखडाहैसिरकेऊपर मनमें डर पानाचहिये
पर उपकारसदाकरनेको मनमें हरषाना चहिये
सबसेमिल जुलके दुनियांमे उमरागुजरानाच०
नितउठकेपरभातसमेमें ईश्वरको ध्यानाचहिये

भोगविलासछोडदुनियांकेमनकोठहराना च०
ज्ञानसीखसतगुरुसेरूपअपनेकोपहचानाचहिये
ब्रह्मानंदमेंलीनहोयभवसागरतरजानाचहिये ८

(लावणी सरल)

हरिकानामसुमरनरप्यारेकबीभुलाना नाचहिये
पाकरमानुष तनदुनियांमें मुफतगमाना नाच०
झूठकपटअरुपापकर्मसेधनकोकमाना नाचहिये
परनारीसेकबीभूलकरप्रीतलगाना नाचहिये १
देकरकेविश्वासकिसीकोफिरहटजानानाचहिये
दुर्जननरकोअपनेपासमेकबी बिठानानाचाहिये
साचेमित्रसेदिलकीकोई बातछिपानानाचहिये
अपनेघरकाभेदकबीदुशमनकोबतानानाचहिये
आमदसेपैसेकाज्यादा खर्च बढाना नाचहिये
लोकबडाईसे करजाकरधनकोलुटानानाचहिये
वेदशास्त्रके धर्म सनातनको बदलाना नाचहिये
नयेनयेपंथोंकी बातेंसुनके फसाना नाचहिये

आश पराईबुरीहमेशां मनमें लगाना नाचहिये
अपना पुरुषार्थकरनेमे दिलशरमानानाचहिये
पुण्यकर्म करके पीछे मनमे पछताना नाचहिये
पापकर्मकीतरफकबीमनकोललचाना नाच०
जहांनआदर होयकबीउसघरमेजाना नाचहिये
अपनेघरमेंआयेजनकेदिलकोदुखानानाचहिये
बिनामालिककेहुकुमकिसीकीवस्तुउठानाना०
घरकेझगडेकारणराजसभामेंजानानाचहिये
बिनजानेपरिणामकिसीकारजकोबनाना ना०
अपनाकरनाभरनादोषदूजेकोलगानानाचहि०
रणभूमिमे जाकर मरनेसे डरपाना नाचहिये
विपतपडेजोआयकबीमनमे घबराना नाचहिये
ईश्वरअंश जीवहैं सारे दुख उपजाना नाचहिये
अपनेगुरु अरुमातपितासे कपटचलाना नाच०
परमेश्वर है तनमे बनमे खोंजनजाना नाचहिये
करसत संगबिचार सदादिलसे बिसरानानाच०

यह इन्द्रियदुशमनहैं तेरे वशमे आनानाचहिये
ज्ञानविवेकयोगमारगसे दिलको हटाना नाच०
सबजगमिथ्याजानधरोनितध्यानडुलाना ना०
ब्रह्मानंदकोपाकरफिरभवमे भरमाना नाचहिये

(लावणी लंगडी)

क्या दुनियांको देखभुलाया
जगमें जीवन दिनचारा
सुनदिलप्यारे भजनकरलेहरिकाबारंबारा ॥टे०
इस दुनियांमें एक बगीचा रंग रंगके फूलखिले
कोई साबत कोई मुरझे कोई आजके हैं निकले
आगे पीछेखिरजावेंगे वारी वारीमें सकले
कोई किसीकासंगन साथी आवतजावतहैंइकले
इनसेंप्रीतकरेक्यामूरखइकदिनहोजासीन्यारा १
सुनदिलप्यारे भजनकरले०
इसदुनियांमेंएकरतन[1]है मिलताबारंबारनही

1 मनुष्यदेह.

जैसेफूलगिराडालीसे फिरहोतागुलजारनही
उसकीकीमतहैबडभारी जानतलोकगंवारनही
परमेश्वरकेमिलनेकाफिर उसकेबिनादुवारनही
काचखरीदकरेबदलेमेंदेकरउसकोमतिमारा २
सुनदिल प्यारे भजन करले०
इसदुनियामेंइकपुतलीने[1] ऐसा भारी जालरचा
स्वर्गलोकपाताल जिमीपरकोईनउसकेहाथबचा
क्याजोगीक्यापीरपगंबरसबकोउसनेदियानचा
फसानही जो उस बंधनमें सोई है नरबीरसचा
मोक्षमारगकेजानेमें सोविघ्नबडादुस्तरभारा॥३
सुनदिलप्यारे भजन करले०
इसदुनियांमें एकअचंभा हमने देखाबहुतबडा
एकछोडकरचलाजिमीकोदूजाकरताहैझगडा
वोनहिमनमेंसमझेमूरख मैंभी जावनहार खडा
घडी पलकका नही ठिकाना

---

1 स्त्री.

किसके भरोसे भूल पडा
आगेजानेकासमानकरलेतियारनहिकरवारा ४
सुन दिलप्यारे भजन करले०
इस दुनियांमेंएककूंप[१]है जिसकापारकोईनहिपावे
जिसकेभरनेकारणप्राणी देशदिगंतरको जावे
ध्यानभजनचिंतनईश्वरकाउसकेकारणबिसरावे
दीनभया परघरमें जाकर सेवाकरकर मरजावे
जिसने बनाया सोई भरेगा शोच फिकर
तजदे सारा ॥५॥ सुन दिलप्यारे भजन करले०
इस दुनियांमें एकबिरछ[२]पर पंछीकरतबसेरा है
सांझपडेजब सब मिलजावें बिछुडें होतसवेराहै
चारघडीके रहने कारण करते मेरा मेरा है
ऐसी बात न मनमें लावें बसबसगयाबडेराहै
क्यालेआयाक्यालेजासी वृथाकरतहैहंकारा ६
सुन दिल प्यारे भजन करले०

१ पेट. २ घर, मकान.

इस दुनियांकेबीचनिरंतरएक[1]नदीचलती भारी
दिनदिन पलपल छिनछिन उसका
वेग बडा है बलकारी
पशुपक्षीनरदेवदनुज जिसमें दुनियांबहतीसारी
जमेन उसमेंपैरकिसीकाकरकेजतनसबपचहारी
बिनईश्वरकेसुमरणतेरा कबीनहोगानिस्तारा ७
सुन दिल प्यारे भजन करले०
इसदुनियांमें[2]एकअंधेरा सबकीआंखमेंजोछाया
जिसकेकारणसूझपडेनहि कौनहूंमैंकहांसेआया
कौन दिशामें जाना मुझको
किसको देखकर ललचाया
कौन मालिक है इस दुनियांका
किसने रची यह है माया
ब्रह्मानंदज्ञानबिनकबहुं मिटेनहीयहसंसारा॥८॥
सुन दिलप्यारे भजन करले०

१कालरूपी. २ अज्ञानरूप.

(लावणी लंगडी)

पुरुषार्थकोकरोसदानर कर्मकर्मतुंक्यागावे
ऐसीवस्तुनहिदुनियांमें पुरुषार्थसेंनहीपावे । टेक
किरपाकरकेजगदीश्वरने मानुषतनयहदीनाहै
हाथपांवसबअंगमनोहर एकसेंएकनवीनाहै
इंद्रियबलबुद्धिचतुराई पशुवोंसेंशुभकीनाहै
सबहीजीवजूनकेअंदर सुंदरएकनगीनाहै
ऐसे तनको पाकरकर पुरुषार्थक्योंमांगनजावे
ऐसीबस्तुनहिदुनियामें० ॥ १ ॥
परमेश्वरनेजगतबगीचा तुमरेकाजबनायाहै
किसमकिसमकेफलफूलनसेसुंदरखूबसजायाहै
बलबुद्धिवालेपुरुषोंने तोडतोडफलखायाहै
मूढआलसीबैठेदेखें बिरथामनललचायाहै
पुरुषार्थबिनबनेदरिद्री दोषकर्मकाबतलावे
ऐसीबस्तुनहिदुनियांमें० ॥ २ ॥
बालपणाखेलनमेंखोवे नहिविद्याअभ्यासकरे

छोटी उमरामें करशादी बलबुद्धिका नाशकरे
ब्रह्मचर्यके पालेबिन कैसे शुभगुणको पासकरे
उमराभरमूरखरहजावे नीचदशामें वास करे
पुरुषार्थकेबिनाजगतमें धनकेकारणभटकावे
ऐसीवस्तुनहिदुनियांमें० ॥ ३ ॥
जोबनमें पुरुषार्थ करके धनको नही कमायाहै
लोकबडाईशानशौकमें बिरथाखर्चकरायाहै
भावीबातकबीनहिसोचे धनबिनकौनसहायाहै
बिनाद्रव्यकोईबातनपूछे बूढेपणपछतायाहै
बिनपुरुषार्थकैसेसुखसंपतधनकीरतफैलावे
ऐसीवस्तुनहिदुनियांमें० ॥ ४ ॥
पुरुषार्थकरनेसेंध्रुवने राज्यपिताकापायाहै
गंगानदीभगीरथराजा पुरुषार्थसेलायाहै
रामचंद्रनेजाकरलंका रावणनाशकरायाहै
विश्वामित्रभीपुरुषार्थसे ब्रह्मऋषीकहलायाहै
सकलकामनासिद्धहोय जोपुरुषार्थमनमेंलावे

ऐसीबस्तुनहिदुनियामें० ॥ ५ ॥
पुरुषार्थकरनेसेंभीजो कामनहीबनआताहै
उसकोफिरफिरकरेशोचकर अंतवहीबनजाताहै
बिनबिचारकेजतनकरेजो सोपीछेपछताताहै
हिंमतहारहटेनहिपीछे सोनिश्चयफलपाताहै
पुरुषार्थसेरंकजीवभी इकदिनराजाकहलावे
ऐसीबस्तुनहिदुनियामें० ॥ ६ ॥
कर्मगतीकीबातजो वेदपुराणग्रंथमेंगाई है
वोतोमनकेशोचफिकरके रोकनकोसमझाई है
सूतेपडेसिंहकेमुखमें नहीशिकारसमाई है
पूरे गुणअरुन्यायधर्मसे खूबकरो चतुराईहै
पिछलीकर्मगतीभीखोटी पुरुषार्थसेसुधरावे
ऐसीबस्तुनहिदुनियामें० ॥ ७ ॥
बालपणेमेंविद्यासीखो जोबनकरोकमाई है
मातपितानारीसुतबांधव सबकेबनोसहाई है
दुनियांकेसबसुखकोभोगो सबसेंमित्तरताई है

वृद्धपणेमेंपरमेश्वरका भजनकरोसुखदाई हैं
ब्रह्मानंदसदापुरुषार्थ करनेमेंनहिंशरमावे
ऐसीवस्तुनहिदुनियांमें० ॥ ८ ॥

(रागबिहार ताल ३)

श्रीकृष्णकहे[1] सुन अर्जुन बात हमारी
तुझको समझावुं ब्रह्मज्ञान निर्धारी ॥ टेक ॥
यह चेतनजीव वसेनित तनके मांही
जिम राजा नगरी बीच निवास कराई
दश इन्द्रिय अरु मन सेवक हैं सुखदाई
सब प्राण खडे दरबान करें निगराई
अंदर बैठा नित देखे रचना सारी ॥ १ ॥ श्री०
यह पांच भूत का बना शरीर तुमारा
क्षणभंगुर है जडरूप विनाशनहारा
बालापण जोबन जराशरीर विकारा
यामें साक्षी है जीव रहे नित न्यारा

---

१ बन आये गोपिनाथ वैद्यवनवारी. २ भजन.

कर जुदा देहअरुजीव तुं देखविचारी ।।२।। श्री०
जिम पंछी लोभ कर पिंजर मांहि फसाया
तिम जीव कर्म वश धारण कीनी काया
विषयोंकी लालच देख फिरे भरमाया
अपनो सुखचेतन सत्यरूपबिसराया
भवबंधनबीच पडा विनज्ञान अनारी।।३।।श्री०
जिम वस्त्र पुराणे छोड नये नर धारे
तिम जीव एक से दूजी देह सिधारे
मरणा जनना है देहधर्म सुन प्यारे
अजरामर चेतन जीव मरे नहि मारे
यह है अविनाशी अचलरूप अविकारी ४ श्री०
सब जीव अंश मेरे निश्चय करजानो
घट घटमें एक स्वरूप मुझे पहचानो
गौ कूकर ब्राह्मण श्वपच भेद नहि आनो
सबके सुखदुखको अपने समकर मानो
तज कामक्रोध अरु लोभमोह दुखकारी५ श्री०

मुझको सब जीव बराबर हैं देखनमे
पर भजे जो मुझको भजुं तिनें मैं मनमे
यह बात सत्य है सुनो कहुं अर्जुन मैं
मुझ भक्त पडे नहि फेर जन्म बंधनमें
निशदिन मनमें मुझपरमभक्तिकरप्यारी ६ श्री०
परमेश्वर पूर्णब्रह्म जगत उपजावे
माया चक्ररमें जीव चडाय फिरावे
युग वीत गये बेअंत अंत नहि आवे
जो उसकी जावे शरण मोक्षपद पावे।
कर भजन ईशका मिटे सकल भयभारी७ श्री०
सब सार ज्ञानका सुन अर्जुन अब प्यारा
मम शरण पडो नित और धर्म तज सारा
मैं सब पापोंको मेट करूं भवपारा
मत करो जरा तुम मनमें शोचविचारा
तुं ब्रह्मानंद स्वरूप सदा मनधारी ॥८॥ श्री०

(राग बिहार)

श्री राम कहे सुन लछमन बचन हमारा
मत सोच करो मन बीच किसी परकारा ।टेक।
है कर्म गती बलवान जान दिल मांही
जो लिखे विधि के अंक मिटें वो नांही
कर देखो जतन हजार पार नहि पाई
जो भावी परबल होय वही हो जाई
मूरख जन मन में बिरथा करे बिचारा।।१।।श्री०
जो मात केकई ने अपना वर लीना
कर धर्म बिचार करार पिता ने दीना
मुझ को बनवास मिला यह कर्म अधीना
नहि है इस में कछु दोष किसी का कीना
यह बात हमारी मान तजो हंकारा ।।२।। श्री०
जब कर्म आपना फल देने को आवे
अन जाने उस का हेतु खडा हो जावे
वो बडे अकल मंदों की बुद्धि फिरावे
परवश माया के चॅकर मे भरमावे

नहि समझ पडे कर्मन की गति अपारा।३।श्री०
राजा हो जावे रंक रंक नृप भारी
योगी भोगी हो जाय गृही बन चारी
ज्ञानी नर मूरख होय मूढ मतिधारी
कायर होवे बलवान बली रण हारी
सब रीत होय विपरीत कर्म आधारा।।४।।श्री०
सब पांडव धर्मपरायण राज्य हराया
हरिचंद्र बनारस बीच कुटुंब विकाया
नल राजा को बन जंगल में भटकाया
मुझ को भी कर्मन ने यह समय दिखाया
तज राज्य तिलक बन कंद मूल आहारा।५।श्री०
यह ऊंच नीच जग ईश्वर ने उपजाया
निज कर्मन के अनुसार विचार बनाया
जैसा जिसका है कर्म वही फलपाया
है परमेश्वर का नियम न मिटे मिटाया
इस कर्म डोर से बांधा सब संसारा ।६। श्री०

यह पांच तत्त्व की देह बनी है भाई
सुख दुख फल भोगन के हित कर्म रचाई
जो चेतन जीव रहे हिरदे के मांही
वो परमेश्वर की अंश वेद बतलाई
उस से चेतन हो रहा शरीर तुमारा ।७। श्री०
जब इस शरीर से जीव जुदा कर माना
सब व्यापक पूर्ण ब्रह्म रूप पहचाना
तब मिटे कर्म का बंधन आवन जाना
सब मिले तत्त्व मे तत्त्व मोक्ष पद पाना
यह ब्रह्मानंद विचार सार निर्धारा ॥८॥ श्री०

(गुरु आरति)

जय गुरु देव दयानिधि दीनन हित कारी
जय जय मोह विनाशक भवबंधन हारी
जय देव गुरु देव ॥ १ ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव गुरु मूरति धारी
वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी

जय देव गुरु देव ॥ २ ॥
जप तप तीरथ संयम दान विविध दीने
गुरु विन ज्ञान न होवे कोटि जतन कीने
जय देव गुरु देव ॥ ३ ॥
माया मोह नदी जल जीव बहें सारे
नाम जहाज बिठा कर गुरु पल में तारे
जय देव गुरु देव ॥ ४ ॥
काम क्रोध मद मत्सर चोर बडे भारे
ज्ञान खडग दे कर में गुरु सब संहारे
जय देव गुरु देव ॥ ५ ॥
नाना पंथ जगत में निज निज गुण गावें
सब का सार बता कर गुरु मारग लावे
जय देव गुरु देव ॥ ६ ॥
गुरु चरणामृत निर्मल सब पातक हारी
बचन सुनत तम नाशे सब संशय टारी
जय देव गुरु देव ॥ ७ ॥

तन मन धन सब अर्पण गुरु चरनन कीजे
ब्रह्मानंद परम पद मोक्ष गती लीजे
जयदेव गुरुदेव ॥ ८ ॥

(शिव आरति)

जय शिव शिव शिवशंकर जय गिरिजाधीशा
जय जय करुणासागर पशुपति जगदीशा ॥
जयदेव महादेव ॥ १ ॥
जूट जटा सिर ऊपर सुरसरि धार चले
चंद्र कला मस्तक में मुंडन हार गले
जयदेव महादेव ॥ २ ॥
भाल विलोचन सुंदर कुंडल कानन में
भूषण नाग विराजित बाघांबर तन में ॥
जयदेव महादेव ॥ ३ ॥
अंग विभूति मनोहर गौर शरीर लसे
कर त्रिशूल परशु वर गिरिजा संग बसे ॥
जयदेव महादेव ॥ ४ ॥

गिरि कैलास शिखर शुभ सिंहासन राजे
नंदी गण गणनायक शोभित दरवाजे
जयदेव महादेव ॥ ५ ॥

ऋषि मुनि सुर गण मिल कर महिमा गानकरे
योगी जन हिरदे में निश दिन ध्यान धरे
जयदेव महादेव ॥ ६ ॥

सकल मनोरथ दायक दीनन दुख हर्ता ॥
जन्म मरण भव बंधन हारण सुख कर्ता ॥
जयदेव महादेव ॥ ७ ॥

पूरण ब्रह्म निरंजन निर्गुण गुणराशी
सकल जगत प्रतिपालन कारण अविनाशी ॥
जयदेव महादेव ॥ ८ ॥

जो जन शिव की आरति गायन नित्य करे
ब्रह्मानंद सहज में सो भवसिंधु तरे ॥
जयदेव महादेव ॥ ९ ॥

(विष्णु आरति)

जय जगदीश्वर ईश्वर करुणानिध स्वामी
जय जय सब जगपालक प्रभु अंतर्यामी ॥१॥
जयदेव हरिदेव ॥ १ ॥
शाम स्वरूप मनोहर पीत वसन धारी
शशिमंडल मुखशोभा मंद हसन प्यारी ॥ २ ॥
जयदेव हरिदेव ॥ २ ॥
शीश मुकुट मकराकृति कुंडल कानन में
मस्तक तिलक बिराजे बनमाला तन में ॥३॥
जयदेव हरिदेव ॥ ३ ॥
चतुर भुजा बाजुबंद कंकण सुखदाई
शंख चक्र गदा पद्म बिराजे करमांही ॥ ४ ॥
जयदेव हरिदेव ॥ ४ ॥
कटि में मणिमय सुंदर मेखल राज रही
चरणनमें नूपुर धुनि छन छन बाज रही ॥५॥
जयदेव हरिदेव ॥ ५ ॥

वाम अंक में कमला मुखपंकज सोहे
निरख युगल छबी सुंदर ऋषि मुनिमन मोहे ६
जयदेव हरिदेव ॥ ६ ॥
स्वर्ण सिंघासन विस्तर कोमल सुखकारी
शेष नाग फण छत्र विराजे सिर भारी ॥ ७ ॥
जयदेव हरिदेव ॥ ७ ॥
गरुड़ खडे कर जोडे पार्षद चमर करें
शिव सनकादिक नारद शारद ध्यान धरें ॥८
जयदेव हरिदेव ॥ ८ ॥
दीनदयाल दयानिध भक्तन हितकारी
शरणागत प्रतिपालक भवबंधनहारी ॥ ९ ॥
जयदेव हरिदेव ॥ ९ ॥
जो जन हरिकी आरति प्रेमसहित गावे
ब्रह्मानंद परम पद सो निश्चय पावे ॥ १० ॥
जयदेव हरिदेव ॥ १० ॥

इति श्रीब्रह्मानंदस्वामिविरचिता भजनमाला समाप्ता.

(भजनसंख्या ४००)

स्वामीजीके रचेहुये पुस्तकोंकी सूची

(श्रीब्रह्मानंद गीता)

मूल संस्कृत श्लोक भाषाटीकासहित इस ग्रथमें १८ अध्याय हैं जिनमें धर्म योग सांख्य वेदांत आदि सर्व शास्त्रोंका सार निरूपण किया है जिल्दबंद ग्लेज कीमत १)

श्रीधर्मानुशासनम् ।

मूल संस्कृत, भाषाटीका. यह ग्रंथ धर्मनिर्णयविषयका है. पुस्तक जिल्दबंद ग्लेज कीमत १।) सवा रुपया.

ईश्वरदर्शनम् ।

यह ग्रंथ ईश्वर भक्तिविषयका है जिल्दबंद ग्लेज कीमत १) एक रुपया.

श्रीविचारदीपकः ।

यह ग्रंथ वेदांत विषयका है जिल्दबंद ग्लेज कीमत ।।।) बारा आना.

श्रीयोगरसायनम् ।

यह ग्रंथ योग विषयका है जिल्दबंद ग्लेज कीमत ।।=) दश आना.

श्रीब्रह्मानंदप्रश्नोत्तरी ।

यह ग्रंथ धर्म विषयका है जिल्दबंद ग्लेज कीमत ।।=) दश आना.

श्रीनित्याचारदर्पणः ।

यह ग्रंथ नित्यनियमका है जिल्दबंद ग्लेज कीमत ।=) छे आना.

इन पुस्तकोंके मिलनेका पताः—

श्रीब्रह्मानंद आश्रम,

मु० पुष्कर, जि० अजमेर.